चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 133, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | रविवार 11 जून 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

योगी ने कहा, मिशन मोड के तहत छह वर्षों में गन्ना बकाया का किया गया भुगतान, मुख्यमंत्री ने 20 सहकारी गन्ना एवं चीनी मिल सोसायटियों के नवनिर्मित भवनों का किया लोकार्पण

'यूपी का गन्ना दुनिया में पहुंचा रहा मिठास'

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को गन्ना विकास के अंतर्गत राज्य गन्ना उत्पादन प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण पत्र वितरित किए। लोकभवन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने प्रदेश की 20 सहकारी गन्ना एवं चीनी मिल सोसायटियों के नवनिर्मित भवनों का लोकार्पण भी किया।

इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गन्ना उत्तर प्रदेश की मिठास को पूरी दुनिया के अंदर पहुंचाता है। पिछले छह वर्ष की गन्ना विभाग के पास अनेक उपलब्धियां उनके पास है। सबसे बड़ा गन्ना उत्पादक राज्य सबसे ज्यादा चीनी उत्पादन में भी बदल गया और चीनी मिल ही नहीं सबसे ज्यादा एथेनाल ही नहीं बल्कि सबसे ज्यादा यूनिट वाला राज्य भी आज उत्तर प्रदेश है। यह इस क्षेत्र में किए गए कार्य (रिफार्म) के परिणाम हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को छह वर्ष पहले पर्ची के लिए परेशान होना पड़ता था। पर्ची की चोरी, घटतौली के लिए जाना जाता था। कोई चीनी मिल ऐसी नहीं थी कि वहां किसान आंदोलन न होते रहे हों। अंत में चीनी मिल बंद होने के कारण गन्ना किसानों को आग लगाना पड़ता था। किसान परेशान होता था, गन्ना भेजने के बाद पैसे का भुगतान नहीं होता था। वर्षों-वर्षों तक गन्ना मूल्य बकाया रहता था। लेकिन छह वर्ष में सबसे पहले प्रधानमंत्री का आभारी हूं, जिन्होंने उत्तर प्रदेश और देश के गन्ना किसानों के बारे में बहुत

सकारात्मक भाव के साथ उस प्रकार के कार्यक्रम लागू करवाए।

मिशन मोड में किया गया गन्ना किसानों का भुगतान: मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि उप्र में 2017 में हमारी सरकार आई और 2010 से लेकर 2017 के बीच का गन्ना मूल्य बाकी था। इसे मिशन मोड के तहत खत्म करने का निर्णय लिया गया। गन्ना मूल्य का भुगतान करते-करते हम आगे बढ़ें। चीनी मिल मालिक भी हमारे पास आए। चीनी मिलों की समस्याओं का समाधान भी हमने किया। पर्ची की चोरी और घटतौली से मुक्त कराया। चीनी मिल मालिकों से गन्ना किसानों के लिए संवाद कर सकारात्मक भाव पैदा किया।

पीएम ने एथेनाल बनाने की मिल मालिकों को दी मंजूरी

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि चीनी मिल साइकिल की तरह है। यहां डिमांड के हिसाब से कार्य करना पड़ता है। जब चीनी ज्यादा हो जाएगी और डिमांड नहीं होगी तो डम्प पड़ी रह जाती है और मार्केट में दाम भी नहीं मिलता है। इससे मिल मालिकों को भुगतान करने में समस्या आती थी। मिल मालिकों को

महिला समूह भी प्रदेश को कर रहीं आर्थिक दृष्टि से मजबूत

प्रदेश की चीनी मिलें सबसे ज्यादा रिकवरी दे सकती हैं। इस क्षेत्र में महिला स्वयंसेवा समूह की भूमिका भी अहम है। वह प्रदेश की आर्थिक मजबूती में सहयोग कर रही हैं। गन्ना विभाग ने छह सालों में कुछ अलग और बेहतर करके दिखाया है। खाड़सारी में नकद भुगतान अलग किया गया है। एथेनाल का भुगतान अलग हुआ है। 100 मिले ऐसे हैं कि एक हफ्ते में कर रही हैं। अन्य मिलों को भी इस दिशा में काम करना पड़ेगा। चार बंद मिलों को गन्ना विभाग ने चलवाया और दो अन्य नई चीनी मिलें भी स्थापित की गई।

एथेनाल बनाने की परमीशन के सम्बंध में हमने प्रधानमंत्री को पत्र लिखा और इस पर उन्होंने सहमति दी। अब ज्यादातर चीनी मिलें चीनी उत्पादन के साथ-साथ एथेनाल बनाने का काम भी कर रही हैं और उप्र अब ग्रीन एनर्जी का माध्यम भी बन चुका है।

आज न केवल सर्वाधिक गन्ना उत्पादक राज्य है बल्कि सर्वाधिक चीनी और एथेनाल बनाने वाला राज्य भी है। इसी का उदाहरण आज यहां देखने को मिला जहां चीनी मिल मालिकों को सम्मानित किया गया वहीं गन्ना उत्पादन करने वाले किसान भी सम्मानित हुए हैं।

कांग्रेस के लिए राजनीति है सिर्फ एक व्यवसाय : स्मृति ईरानी

अमेठी। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने शनिवार को कांग्रेस पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने 'दुकान खोलने की बात' शब्द का प्रयोग करके यह साबित कर दिया है कि उसके लिए राजनीति एक व्यवसाय है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को राष्ट्रनीति से कोई लेना-देना नहीं है। एक दिवसीय दौरे पर अपने संसदीय क्षेत्र अमेठी पहुंचीं केंद्रीय मंत्री ईरानी ने गौरीगंज नगर पालिका परिषद कार्यालय का उद्घाटन किया। परिसर में पौधरोपण

भी किया। इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष रश्मि सिंह ने स्मृति ईरानी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। केंद्रीय मंत्री ने गौरीगंज के क्षेत्रीय लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं और उनके निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए। स्मृति ईरानी जब लोगों की समस्याएं सुन रही थीं तो दिल की बीमारी से ग्रसित एक साल के बच्चे सिद्धांत को लेकर उसके पिता अनिल पहुंचे।

पीएम ने किया आरबीआई के निर्णय का स्वागत

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 1,514 शहरी सहकारी बैंकों को मजबूत करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के निदेर्शों का स्वागत किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने शनिवार को केंद्रीय सहकारिता मंत्रालय के एक ट्वीट पर प्रतिक्रिया देते हुए ट्वीट किया, यह सहकारी क्षेत्र के लिए अद्भुत है और कई लोगों को सशक्त करेगा। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सहकार से समृद्धि के विजन को साकार करने के लिए देश में 1,514 शहरी सहकारी बैंकों ।

भारत की सीमा और सेना के साथ कोई छेड़खानी नहीं कर सकता: शाह

पाटण/अहमदाबाद। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने केन्द्र में नरेन्द्र मोदी सरकार के 9 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में शनिवार को पाटण में आयोजित जनसभा में विकास कार्यों के क्षेत्र में सरकार की उपलब्धियां गिनाई। शाह ने कहा कि पिछले 10 वर्ष विकास और डिजिटल इंडिया का था। 9 साल के दौरान देश में बहुत परिवर्तन आया है। भारत की सीमा और सेना के साथ कोई छेड़खानी नहीं कर सकता। देश की सीमा सुरक्षित हुई है। इसके बावजूद कांग्रेस कुछ सीखती नहीं। राहुल पर वार करते हुए शाह ने कहा कि राहुल बाबा विदेश वैकेशन में गए हैं और विदेश में जाकर भारत की निंदा करते हैं। विदेश जाकर देश की राजनीति की चर्चा कर उसकी निंदा करना किसी नेता के लिए शोभा नहीं देता। पाटण जिले के सिद्धापुर में आयोजित सभा में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि कोई मानता नहीं था कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाया जा सकता है। राहुल बाबा कहते थे कि कश्मीर में खून की नदियां बहेगी। राहुल बाबा कहते थे कि मंदिर वहीं बनाएंगे, तारीख नहीं बताएंगे, लेकिन अब तारीख आ गई है। राहुल बाबा श्रद्धा है तो टिकट तैयार रखें। अमित शाह ने कहा देश में पहली बार एक आदिवासी महिला को राष्ट्रपति बनाया गया है। संसद के नए भवन का विरोध किया गया। सेंगोल का भी विरोध हुआ। नेहरू को सेंगोल स्थापित करना था। इसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। विपक्ष की विरोध करने की राजनीति है।

मणिपुर: हिंसा के बाद 11 अफसरों का तबादला

इनमें आईएएस और आईपीएस शामिल, केंद्र सरकार ने गवर्नर की अध्यक्षता में पीस कमेटी बनाई

इंफाल: मणिपुर में 3 मई से कूकी और मैतेई समुदाय के बीच जातिगत हिंसा जारी है। इस बीच शनिवार को राज्य के 11 अफसरों का तबादला किया गया है। इनमें **आईएएस** और **आईपीएस** अफसर शामिल हैं। इससे पहले गृह मंत्री अमित शाह इस महीने की शुरूआत में 4 दिन के दौरे पर यहां आए थे। इस दौरान राज्य के डीजीपी पी. डोंगल को हटा दिया गया। उनकी जगह राजीव सिंह को कमान सौंपी गई। मणिपुर में 39 दिन से जारी हिंसा में अब तक अब तक 100 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। 310 घायल हैं और 37 हजार से ज्यादा लोग 272 राहत शिविरों में रहने को मजबूर हैं। इस बीच असम के सीएम हिमंत सरमा शनिवार सुबह मणिपुर पहुंचे। वे राज्य के सीएम एन. बीरेन सिंह से मिले। इस दौरान दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों के बीच मणिपुर में जारी हिंसा पर भी हुई।

गृह मंत्रालय ने गवर्नर की अध्यक्षता में शांति समिति बनाई: गृह मंत्रालय ने शनिवार को बताया कि केंद्र सरकार ने मणिपुर में शांति बहाल करने के लिए राज्यपाल की अध्यक्षता में कमेटी बनाई है। कमेटी के सदस्यों में मुख्यमंत्री, राज्य सरकार के कुछ मंत्री, सांसद, विधायक और विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता शामिल हैं। समिति में पूर्व सिविल सेवक, शिक्षाविद्, साहित्यकार, कलाकार, सामाजिक कार्यकर्ता और विभिन्न जातीय समूहों के प्रतिनिधि भी शामिल किए गए हैं।

9 जून को फिर हिंसा हुई, 3 लोग मारे गए: 9 जून को राजधानी इंफाल के पास कुकी बहुल खोकेन गांव में अलग-अलग घटनाओं में तीन लोगों की मौत हो गई। शुक्रवार को मणिपुर पुलिस ने बताया कि बीते 24 घंटों में मणिपुर के इंफाल ईस्ट, काकचिंग, टेंग्नौपाल और बिष्णुपुर जिलों में 57 हथियार, 1,588 गोला-बारूद और 23 बम बरामद किए हुए हैं।

आईएसआईएस के आतंकी मॉड्यूल का पर्दाफाश, 4 गिरफ्तार

पोरबंदर/अहमदाबाद। गुजरात एंटी टेररिस्ट स्क्वॉड (एटीएस) ने पोरबंदर में बड़ा ऑपरेशन चला कर एक महिला समेत 4 आरोपितों को गिरफ्तार किया जिन पर आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ऑफ खुरासान प्रोविंस (आईएसकेपी) के लिए काम करने का आरोप है। इनका आईएसआईएस और पाकिस्तान कनेक्शन सामने आया है। आईजी दीपेन भद्रन की अगुवाई में शुक्रवार रात इस ऑपरेशन को पूरा कर आतंकी साजिश का पदार्फाश किया गया है। गुजरात के डीजीपी विकास सहाय ने प्रेंस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी दी कि चारों गिरफ्तार आरोपित इस्लामिक स्टेट ऑफ

खुरासान प्रोविंस (आईएसकेपी) के सदस्य हैं। उन्होंने कहा कि इनमें से तीन भारत के रहने वाले हैं। जबकि एक विदेशी नागरिक है। चारों आईएसकेपी के सक्रिय सदस्य हैं और उनके कब्जे से कई प्रतिबंधित चीजें मिली हैं। गुजरात एटीएस से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रतिबंधित आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ऑफ खोरासान प्रोविन्स (आईएसकेपी) के साथ जुड़े कट्टर युवाओं को गुजरात के पोरबंदर समुद्र किनारे के रास्ते भारत से पलायन करने की योजना बनाने के दौरान पकड़ा गया। ये तीनों ईरान होते हुए इस्लामिक अमीरात ऑफ अफगानिस्तान जाने वाले थे।

इस सूचना के आधार पर गुजरात एसटीएस की टीम ने 9 जून को तड़के पोरबंदर रेलवे स्टेशन पर सख्त निगरानी शुरू की। यहां तीन संदिग्ध युवकों को देखकर इन्हें पकड़ा गया और पूछताछ की गई। पकड़े गए युवकों में उबेद नासिर मीर, हनान हयात शॉल और मोहम्मद हाजिम शाह (तीनों का ठिकाना श्रीनगर) शामिल हैं।

कांग्रेस के लिए राजनीति है सिर्फ एक व्यवसाय : स्मृति ईरानी

अमेठी। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने शनिवार को कांग्रेस पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने 'दुकान खोलने की बात' शब्द का प्रयोग करके यह साबित कर दिया है कि उसके लिए राजनीति एक व्यवसाय है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को राष्ट्रनीति से कोई लेना-देना नहीं है।

एक दिवसीय दौरे पर अपने संसदीय क्षेत्र अमेठी पहुंचीं केंद्रीय मंत्री ईरानी ने गौरीगंज नगर पालिका परिषद कार्यालय का उद्घाटन किया। परिसर में पौधरोपण भी किया। इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष रश्मि सिंह ने स्मृति ईरानी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। केंद्रीय मंत्री ने गौरीगंज के क्षेत्रीय लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं और उनके निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए। स्मृति ईरानी जब लोगों की समस्याएं सुन रही थीं तो दिल की बीमारी से ग्रसित एक साल के बच्चे सिद्धांत को लेकर उसके पिता अनिल पहुंचे। उन्होंने जब उसकी समस्याएं सुनीं तो वह भावुक हो गईं और कहा कि बच्चे के इलाज का पूरा खर्चा वह स्वयं उठाएंगी। केंद्रीय मंत्री ने बच्चे को गोद में लिया और उनके पिता को दिल्ली बुलाया है। अनिल की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, ऐसे में वो अपने बेटे का इलाज नहीं करवा सकता है।

पीएम की डिग्री मामले में गुजरात हाईकोर्ट पहुंचे केजरीवाल

डिग्री की डिटेल ना देने के फैसले की समीक्षा की मांग; 30 जून को सुनवाई

अहमदाबाद: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की डिग्री के मामले में अरविंद केजरीवाल गुजरात हाईकोर्ट पहुंचे हैं। उन्होंने हाईकोर्ट से अपने 31 मार्च के फैसले की समीक्षा करने की मांग की है। इस फैसले में गुजरात हाईकोर्ट ने प्रधानमंत्री मोदी की डिग्री से जुड़ी डिटेल्स देने के चीफ इन्फॉर्मेशन कमिश्नर के आदेश को रद्द कर दिया था। हाईकोर्ट ने केजरीवाल की याचिका को स्वीकार कर सभी पक्षों को नोटिस दे दिया है। मामले में अगली सुनवाई 30 जून को होगी। सीएम केजरीवाल ने अप्रैल 2016 में केंद्रीय सूचना आयोग को एक लेटर लिखकर पीएम मोदी की

शैक्षिक योग्यता से जुड़ी जानकारी सार्वजनिक करने की मांग की थी। उन्होंने लेटर में लिखा कि इस मुद्दे पर किसी भी तरह के भ्रम को दूर करने के लिए डिग्री को सार्वजनिक किया जाना चाहिए। इसके बाद सीआईसी ने गुजरात यूनिवर्सिटी से पीएम मोदी की एमए डिग्री के बारे में केजरीवाल को जानकारी मुहैया कराने को कहा गया था। सीआईसी के इस आदेश को यूनिवर्सिटी ने हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। गुजरात हाईकोर्ट ने 31 मार्च के अपने फैसले में सीआईसी के इस आदेश को रद्द कर दिया। साथ ही अरविंद केजरीवाल पर 25 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया। केजरीवाल ने याचिका में कहा- कोर्ट में यूनिवर्सिटी की तरफ से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा था कि पीएम मोदी की डिग्री गुजरात यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

लेकिन, हमें वेबसाइट पर प्रधानमंत्री की डिग्री नहीं मिली। वहां सिर्फ ऑफिस रजिस्टर की कॉपी उपलब्ध है, जो डिग्री से अलग होती है।

नेपाल के काठमांडू में क्रियायोग की शिक्षा देने पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी महाराज

नेपाल के काठमांडू शहर से यूट्यूब चैनल पर लाइव दी गई क्रियायोग की शिक्षा

क्रियायोग जानने को उत्सुक देखी नेपाल की जनता, ऑफलाइन ऑनलाइन जुड़े रहे हजारों लोग

अखंड भारत संदेश

काठमांडू। नेपाल के काठमांडू पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी महाराज ने समस्त साधकों के संग काठमांडू शहर के हजारों जनता को अद्भुत क्रियायोग की शिक्षा दिए। इससे पहले कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर क्रियायोग के महत्व

को समझाते हुए अंतर्राष्ट्रीय क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी महाराज ने बताया कि यह पूरी तरह सिद्ध हो चुका है कि वर्तमान समय में पृथ्वी पर

सभी प्रकार की समस्यायें जो मानव, अन्य जीव-जंतु, वनस्पति जगत और अन्य रचनायें जैसे-पहाड़, नदी, समुद्र से संबंधित हैं का पूरी तरह से समाधान क्रियायोग से संभव है। विभिन्न प्रकार की समस्याओं से अभिप्राय है शारीरिक बीमारी, मानसिक अशांति व अज्ञानता।

अज्ञानता की वजह से ही मनुष्य का आंतरिक धन व बाह्य धन क्षीण हो जाता है। आंतरिक धन वाइटलिटी, इम्यूनिटी व जीवन के रूप में है तथा बाह्य धन सभी प्रकार के संसाधनों के रूप में है। आज आवश्यकता है कि केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के सभी देशों में क्रियायोग के ज्ञान का सम्यक प्रसार हो। इसी कड़ी में आज शनिवार को काठमांडू शहर में क्रियायोग का अद्भुत शिक्षा देने का सहयोग बना । उपरोक्त विचार स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने क्रियायोग अभ्यास कराते समय व्यक्त किए।

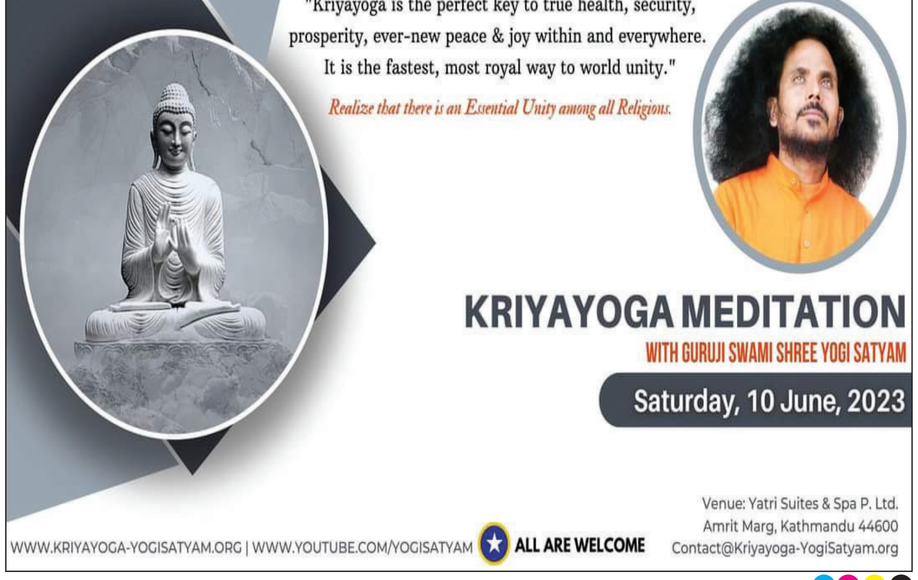

खबर संक्षेप

नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में हिन्दी की मौखिक परीक्षा 19 जून को

जंघई। नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में एमए फाइनल हिन्दी विषय की मौखिक परीक्षा 19 जून को 10 बजे से आयोजित की गई है। यह जानकारी देते हुए विभागाध्यक्ष हिन्दी डॉ. ज्ञान प्रकाश द्विवेदी ने समस्त छात्र, छात्राओं को समय से मौखिक परीक्षा में शामिल होने का निर्देश दिया है।

प्रेमी के साथ किशोरी फरार मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा के एक गांव में बीती रात एक किशोरी अज्ञात प्रेमी के साथ फरार हो गई। किशोरी के पिता ने अज्ञात प्रेमी युवक के खिलाफ अपहरण का मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासनीय एक सत्तर वर्ष की किशोरी अपने प्रेमी के साथ फरार हो गई। पिता ने मऊआइमा थाने में अज्ञात प्रेमी युवक के खिलाफ अपहरण का मुकदमा दर्ज करा दिया है।

अनियंत्रित पिकअप की टक्कर से तिलक में शामिल होने जा रहे युवक की दर्दनाक मौत

अखंड भारत संदेश

मेजा। मेजा क्षेत्र के औंता गांव में अनियंत्रित पिकअप गाड़ी की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई। युवक की मौत की सूचना पर पहुंची इलाकाई पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम भेजने की तैयारी में जुटी हुई है। मिली जानकारी के अनुसार जिगना क्षेत्र के काशी सरपती गांव निवासी अभयराज पुत्र बालगोविंद तिलक में शामिल होने जा रहा था। जैसे ही वह मेजा थाना क्षेत्र के औंता गांव के समीप पहुंचा ही था कि अनियंत्रित पिकअप की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। मौजूद लोगों की मानें तो उक्त युवक नई बाइक लेकर तिलक में चढ़ाने जा रहा था। अनियंत्रित पिकअप की टक्कर से उसकी मौत हो गई। सूचना पर थाना प्रभारी मेजा राजेश उपाध्याय पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम भेजने की तैयारी में जुटे हुए हैं। युवक की मौत से परिजनों मे कोहराम मचा हुआ है।

मऊआइमा के दो अलग अलग स्थानों पर वाहन दुर्घटना में दो की हालत नाजुक

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके में दो अलग अलग स्थानों पर वाहन दुर्घटना में दो की हालत गंभीर बनी हुई है।जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम दमदमा रानीगंज निवासी पन्ना लाल 60 वर्ष पुत्र राम दुलार बाइक से मऊआइमा आ रहे रहे थे। बताते हैं कि जैसे वह ग्राम सिटकहवा के निकट पहुंचे एक अन्य बाइक में टक्कर हो जाने से पन्ना लाल को पहले एम्बुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र लाया गया बाद में डाक्टरों ने रिफर कर दिया। दूसरी घटना ग्राम सकरामऊ निवासी छोटू 19 वर्ष पुत्र बाबूलाल बाइक से कहीं जा रहे थे । जैसे वह सरपताही नहर के पास पहुंचे अज्ञात चार पहिया वाहन ने टक्कर मार दी। जिसे नाजुक हालत में एम्बुलेंस स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र लाया गया परन्तु हालत गंभीर होने पर शहर के अस्पताल के लिए रिफर कर दिया गया।

कांवड़ व आगामी मेले को लेकर थरवई थाने पर पीस कमेटी की बैठक हुई संपन्न

थरवई। शनिवार को थाना थरवई में प्रभारी निरीक्षक लोकेन्द्र त्रिपाठी की अध्यक्षता में आगामी कांवड़ व मलमास मेले की सुरक्षा व्यवस्था व किसी भी प्रकार की अव्यवस्थाओं को लेकर बिंदुवार जानकारी ली गई। थरवई अंतर्गत पड़िला के पाण्डेशवर नाथ धाम पड़िला में लगने वाले भव्य मेले को लेकर मंदिर व मेले में सुरक्षा व्यवस्था के लिए उपस्थित ग्राम प्रधानों व सभी संभ्रातों से जानकारी ली। मंदिर प्रांगण से 500 मीटर दूर ही डीजे पर प्रतिबंध लगाने, भीड़ पर नियंत्रण को लेकर बातें रखी गई। वहीं पुलिस ने शांति व्यवस्था बनाये रखने को लेकर सभी से अपील की। यहां उपस्थित उपनिरीक्षक सोहराब अहमद, अखिलेश कुमार, बृजेश कुमार यादव, अमित चौबे, सुनील कुमार, रामेश्वर नाथ राय, अमित कुमार, हरिओम, ग्राम प्रधान महेन्द्र गिरि, राम अचल यादव, राजेश कुमार आदि संभ्रान्त लोग उपस्थित रहे।

मां की ममता को किया शर्मशार नाली में मिली नवजात शिशु

अखंड भारत संदेश

मेजा। क्षेत्र के लूतर गांव के समीप नहर की पुलिया के पास नाली में एक नवजात शिशु पाई गई। जिससे गांव में हड़कंप मच गया। लोगों की भीड़ में तरह-तरह की चचाएं होने लगी। उसी भीड़ से गांव के ही एक व्यक्ति ने नवजात बच्ची को अपनाया और घर ले गया। बता दें कि मेजा थाना क्षेत्र के लूतर गांव के समीप नहर की पुलिया के पास सड़क किनारे नाली में क्रूर मां ने नवजात शिशु को नाली में फेंककर चली गई। बच्ची के रोने की आवाज सुनकर पास के लोगों की भीड़ लग गई। लोगों में तरह-तरह की चचाएं होने लगी। लोगों ने कहा कि महिला ने बच्चे को नौ माह गर्भ में रखा उसके बाद उसे जन्म दिया और फिर उस नवजात शिशु को वहीं नाली में फेंक कर चली गई। क्रूर महिला ने मां की ममता को शर्मशार कर दिया, लेकिन कहते हैं ना कि 'जाको राखे साइयां मार सके ना कोय। लोगों की भीड़ जमा थी और खून से लथपथ नवजात शिशु रो रही थी। उसको रोता देखकर गांव के ही मोहम्मद अख्तर की पत्नी शाहीन को दया आ गई और वह बच्ची को अपनाने का फैसला लिया। देखा जाए तो बेटियां घर की रौनक होती है। लेकिन आज भी हमारे समाज में बेटियों को बोझ समझा जाता है। सरकार के तरफ से कई योजनाएं बनाई गई है। उसके बावजूद कन्या को बोझ समझा जा रहा है। फिलहाल मामला बेटी का है या फिर अवैध संबंध का।यह यह तो वही निर्दई महिला ही जाने।क्योंकि ऐसी महिला को मां शब्द देना भी मां की ममता के खिलाफ है।

प्रेमिका की हत्या में शामिल प्रेमी सहित तीन को पुलिस ने भेजा जेल

अखंड भारत संदेश

करछना। थाना क्षेत्र के महेवा कुंजल बैस का पूरा की रहने वाली युवती और औद्योगिक क्षेत्र थाना के मुगारी गांव के रहने वाले उसके प्रेमी द्वारा प्रेमिका की हत्या के आरोप में दो अन्य को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया बता दें कि करछना थाना क्षेत्र की महेवा गांव की रहने वाली राज केसर व औद्योगिक थाना क्षेत्र के रहने वाले प्रेमी आशीष गौतम से कई वर्षों से लव रिलेशन चल रहा था तथा 24 मई को आशीष प्रेमिका को बुलाकर नवनिर्मित मकान में हत्या कर उसकी लाश को सेफ्टी टैंक में दफन कर दिया था और प्रेमिका की हत्या कर चार दिन बाद उसके प्रेमी ने दूसरी शादी कर लिया था, युवती के परिजनों की तहरीर पर पुलिस द्वारा मामले में छानबीन के दौरान सीडीआर के आधार पर डिटेल्स मिलने पर हत्या में शामिल दो अन्य सहित प्रेमी को गिरफ्तार कर कड़ाई से पूछताछ किया तो मामला खुलासा हुआ जिसको शुक्रवार को उनकी निशानदेही पर नवनिर्मित मकान से युवती राजकेसर का शव सेफ्टी टैंक से निकालकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज

दिया था जिसमें हत्या में शामिल अभियुक्त आशीष गौतम उर्फ अरविन्द कुमार गौतम पुत्र राम दुलार नि. मुंगारी थाना औ. क्षेत्र प्रयागराज को दिनांक-9 जून को ग्राम चनैनी में स्थित कब्रिस्तान थाना करछना के पास से गिरफ्तार उसकी निशानदेही पर घटना प्रयुक्त आलाकत्ल 01 अदद रस्सी बरामद की गयी। घटना में शामिल अन्य 02 अभियुक्त .राकेश यादव उर्फ गुड्डू पुत्र शेरबहादुर उर्फ महाजन .दीपक कुमार गौतम पुत्र पन्ना लाल निवासी गण बाउल का डेरा मुंगारी थाना औ. क्षेत्र प्रयागराज को शनिवार को बाउल का डेरा मुंगारी में स्थित तालाब के पास से थाना औ. क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया ।नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी। मामले में गिरफ्तार करने वाली टीम में प्र.नि. विश्वजीत सिंह थाना करछना उ.नि. अजय कुमार सिंह थाना करछना उ.नि. अजीत कुमार गुप्ता थाना करछना उ.नि. राहुल सिंह थाना औ. क्षेत्र .हे.कॉ. अनिल कुमार चौबे थाना करछना हे.कॉ. सुनील कुमार गुप्ता थाना करछना कॉ. रविन्द्र कुमार बिन्द थाना करछना कॉ. संदीप यादव थाना औ. क्षेत्र कॉ. संदीप कुमार चौहान थाना करछना कॉ. लकी यादव थाना करछना कॉ.युधिष्ठिर शर्मा थाना करछना .कम्प्यूटर ऑ. ग्रेड-ए संतोष कुमार सरोज थाना करछना शामिल रहे।

मऊआइमा में अवैध शराब की भट्ठियों से तैयार हो रही हजारों लीटर शराब

मऊआइमा। मऊआइमा के विभिन्न गांवों में खेतों झाड़ियों तथा सुनसान स्थान पर शराब की भटठियां धधक रही है। शाम होते ही इसकी बिक्री शुरू हो जाती है। नशडियों के उत्पात से लोगों का राह चलना मुहाल हो गया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के भानेमऊ, कटरादयाराम, तेजपुर, विश्म्भरपुर, महरौंडा, छाता, बांका जलालपुर, सकरामऊ आदि गांवों में व्यापक पैमाने पर खुलेआम शराब की भटठियां से कच्ची महुआ की शराब तैयार हो रही है। बताते हैं कि कच्ची महुआ की दारू में अनेकों प्रकार के केमिकल डाला जाता है जिससे शराब और भी नशेली हो जाए। बताते हैं कि यह शराब नशेली कम जहरीली अधिक हो जाती है। बताया गया है कि दस वर्ष पूर्व मऊआइमा में जहरीली शराब पीने से चौदह लोगों की मौतें हो चुकी हैं। बावजूद इसके आबकारी एंव पुलिस विभाग अवैध शराब निमार्ताओं के उपर शिकंजा कसने के बजाय सुस्त रवैया अपनाए हुए हैं। अवैध शराब बिक्रेताओं का कथन है कि पकडे जाने पर वह मौके पर निजि मुचलके पर छूट जाते हैं तथा फिर लोक अदालत में जुमार्ना भर कर केस खत्म करवा लेते हैं। इन शराब बिक्रेताओं के यहां शाम के समय भीड लगी रहती है।

25 गांवो में तेरह घंटे बाद आई बिजली नही मिला पानी

अखंड भारत संदेश

हनुमानगंज। केबल में आई खराबी की वजह से कोटवा फीडर से संचालित होने वाले गांवो की बिजली शुक्रवार की रात से ही गुल हो गई थी। शनिवार को दोपहर बाद केबल दुरुस्त हुआ पर फिर कुछ खराबी आ गई। 13 घंटे बाद विद्युत आपूर्ति तो बहाल हो गई पर देर रात तक लोगो को पीने का पानी नही मिल सका। शुक्रवार की रात 2 बजे के बाद अचानक कोटवा पावर हाउस की इनकमिंग केबल जल गई जिसकी वजह से कोटवा, जमुनीपुर, ककरा, तीवारीपुर, छिबैया, सुमेरपुर, बरईपुर, सुदनीपुर, लीलापुर सहित दो दर्जन गांवों में अंधेरा पसर गया। सुबह लोगो को पानी भी नही मिला। मामले की जानकारी मिलते ही एसडीओ ग्रामीण शिव प्रकास पांडेय, जेई, लाइन मैन के साथ पावस हाउस पहुच केबल ठीक कराने में जुट गए पर दोपहर तक आपूर्ति बहाल न हो सकी जिसकी वजह से भीषण गर्मी में बिजली पानी के बगैर लोग उबल गए। पीने के पानी के लिए ग्रामीणों को हैंडपम्प व कुओ का सहारा लेना पड़ा। समाजसेवी धनंजय मिश्रा ने बताया कि 3 बजे केबल ठीक हो गई पर लाइट चालू करते ही फिर फाल्ट आ गया। जिसे आधे घंटे ने ठीक कर दिया गया। वही कोटवा निवासी आमोद सिंह ने बताया कि जल निगम कर्मियों की लापरवाही की वजह से कोटवा गांव में देर रात तक लोगो को पानी नसीब नही हुआ।

मेजा बाजार में पांच दिन से जलापूर्ति ठप, मचा हाहाकार

मेजा। मेजा बाजार में पिछले पांच दिन से जलापूर्ति ठप है। पहले दो दिन जलापूर्ति में ट्रांसफार्मर की खूंटी बाधक बनी। इसके बाद ट्रांसफार्मर ही खराब हो जाने से पानी सप्लाई नहीं हो पा रही है। भीषण गर्मी में पानी न मिलने से त्राहिमाम मचा हुआ है। लोग पानी के लिए दर दर भटक रहे हैं।बाजार में हैडपंप का अभाव जोनेंके कारण लोगों को भारी परेशानी झेलनी पड़ रही है। यहां आए दिन जलपूर्ति बाधक बनी रहती है।2 मोटरों से मेजा बाजार,थाने और पहाड़ी की तरफ पानी आपूर्ति की जाती है।एक के बाद एक मोटर खराब ही रहती है। कभी अनियमित विद्युतापूर्ति तो कभी मोटरपंप जलने तो तथा कभी पाइपलाइन क्षतिग्रस्त होने व अन्य तकनीकी कारणों से जलापूर्ति ठप हो जाती है। अभी एक सप्ताह पूर्व एक मोटर खराब होने के कारण 10 दिनों तक जलपूर्ती ठप्प रही।एक दिन चलने के बाद बिजली बाधक बन गई। बताया जाता है कि कल ट्रांसफार्मर बदल दिया गया।इसके बाद भी पानी आपूर्ति नहीं जो पा रही है।बताए हैं कि मेजा जल निगम में एक भी सरकारी ऑपरेटर नही है,जिससे संविदा कर्मी के भरोसे जल निगम का कार्य जैसे तैसे चल रहा है।2 संविदा कर्मी एक दिन और एक रात के लिए नियुक्त है,लेकिन मनमानी किए जाने से भी वह भी जलापूर्ति में।बाधक बनी हुई हैं।उपभोक्ताओं ने मेजा जल निगम में 2 सरकारी कर्मी नियुक्त किए जाने की पुरजोर मांग की है।

समाधान दिवस में 16 शिकायतें मिली, 4 का मौके पर निस्तारण

अखंड भारत संदेश

मेजा। शनिवार को मेजा थाना कोतवाली में समाधान दिवस का आयोजन एसडीएम मेजा अनुभव कन्नौजिया की अध्यक्षता में किया गया। समाधान दिवस में अपनी शिकायत लेकर पहुंचे फरियादियों की समस्याएं सुनी गई। जिसमें थाना समाधान दिवस में आयी 16 शिकायतों में मौके पर 4 का निस्तारण किया गया। गौरतलब है कि प्रत्येक माह के दूसरे व चौथे शनिवार को समाधान दिवस का आयोजन कराया जाता है। थाना समाधान दिवस में पुलिस अधिकारियों के अलावा राजस्व विभाग के अधिकारी पहुंचकर जन समस्या सुनते हैं और समस्याओं को संबंधित विभाग के अधिकारियों द्वारा समाधान कराया जाता हैं। जन समस्या के समाधान के लिए मुख्यमंत्री ने सख्त आदेश कर दिए हैं। जन समस्या को सुनकर समस्या का त्वरित निस्तारण किया जाए। शनिवार को थाना कोतवाली मेजा में समाधान दिवस का आयोजन किया गया।उपजिलाधिकारी मेजा अनुभव कन्नौजिया व सहायक पुलिस आयुक्त मेजा विमल किशोर मिश्र ने जन समस्या सुनी। जिसमें 4 शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया।गंभीर शिकायतों को तत्काल राजस्व व पुलिस टीम गठित कर निस्तारण के लिए मौके पर भेजा और बाकी शिकायतों को संबंधित अधिकारी को निर्देशित किया गया।इस मौके पर नवागत प्रभारी निरीक्षक मेजा राजेश उपाध्याय सहित चौकी प्रभारी कोहड़ार, मेजारोड,सिरसा और जेवनिया सहित राजस्व अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

थाना समाधान दिवस में सुनी गयीं शिकायतें

कोरांव। शनिवार को थाना कोरांव में आयोजित समाधान दिवस में नायब तहसीलदार विनोद कुमार सिंह ने आये हुए फरियादियों की शिकायतें सुनी। समाधान दिवस में सर्वाधिक शिकायतें भूमि विवाद से जुड़ी राजस्व की रहीं। सभी शिकायतों को नायब तहसीलदार ने समयबद्ध तरीके से निस्तारित करने के निर्देश सम्बन्धित जिम्मरदारों को दिया। पुलिस से जुड़ी शिकायतों में थाना प्रभारी धीरेन्द्र सिंह ने गंभीरता से लेते हुए सम्बन्धित बीट प्रभारियों को मौके पर जाकर दोनो पक्षों को सुनते हुए निस्तारित करने हेतु निर्देशित किया। थाना प्रभारी ने कहा कि जिन शिकायतों में तनाव की स्थिति हो उनमें दोनो पक्षों के लोगों को थाने बुलवाकर निपटारा कराएं। समाधान दिवस में राजस्व निरीक्षक ,और पुलिस टीम को कई गांवों में भू विवाद के मामले हल कराने के लिए रवाना किया गया। संसारपुर ग्राम प्रधान मुख्तार अहमद के नेतृत्व में एक दर्जन से अधिक समूह की महिलाओं ने लेखपाल पर गांव में सामुदायिक शौचालय के निर्माण में मनमानी का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराई। जिस पर नायब तहसीलदार ने खुद मौके पर जाकर मामले का निस्तारण कराने का आश्वासन दिया। नायब तहसीलदार ने लेखपालों की मनमानी की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए सख्त हिदायद देते हुए सही व गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण के निर्देश दिए।

विधायक ने जनता दरबार में सुनी लोगों की समस्याएं, अधिकारियों को दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

जसरा। शनिवार को विधायक बारा डॉ वाचस्पति ने गौहनिया स्थित जनसंपर्क कार्यालय पर आए हुए फरियादियों की समास्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया। बता दें कि भीषण गर्मी को देखते हुए विधायक जी ने पानी की हो रही समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया और क्षेत्र में बिजली व्यवस्था को भी ठीक करने का निर्देश दिया। कई घरेलू समस्याएं आई जिसको विधायक जी ने दोनो पक्षों को बैठा कर समझा बुझाकर मामला हल कराया। जनता दरबार में मौजूद फरियादियों में गोइसरा निवासी होरी लाल केसरवानी ने गांव में बनी पानी टंकी से लोगों के घरों तक पानी नही पहुंच रहा इसकी शिकायत विधायक जी से की तो माननीय विधायक जी तत्काल ठीक करवाने का आश्वासन दिया। गौहनिया से कर्मा तक जर्जर तार को सुधारने के लिए श्यामू निषाद ने विभागीय अधिकारियों से वार्ता की। जनता दरबार में प्रमुख रूप से-भाजपा मंडल अध्यक्ष जसरा जगत नारायण शुक्ला, प्रतिनिधि उमेश शुक्ला, प्रतिनिधि नीरज केसरवानी,आलोक पाठक,फूलचंद्र पटेल, कुलदीप पाठक, क्षेत्रीय प्रतिनिधि मिथिलेश पांडेय, मुक्तिकांत मिश्रा, इंद्रजीत सरोज, हरिशरण सिंह, शरद, संतोष, विनय, नितेश, विपिन, मोनू, नन्हे, सहित दर्जनों लोग मौजूद रहें।

पानी और बिजली की समस्याओं का जल्द होगा निस्तारण : विधायक वाचस्पति

श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह प्रसंग सुनकर भावविभोर हुए कटेहरी गांव के निवासी

प्रतापपुर। कटेहरी गांव में मुख्य यजमान जीतेंद्र नाथ द्विवेदी, प्रेमशिला द्विवेदी के निवास पर आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के छठवें दिन शनिवार को श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कथा व्यास भागवताचार्य धनंजय द्विवेदी महाराज ने रास पंच अध्याय का वर्णन किया। कथा में भगवान का मथुरा प्रस्थान, कंस का वध, महर्षि संदीपनी के आश्रम में विद्या ग्रहण करना, कालयवन का वध, उधव गोपी संवाद, ऊधव द्वारा गोपियों को अपना गुरु बनाना, द्वारका की स्थापना एवं रुक्मिणी विवाह आदि प्रसंगों का संगीतमय वर्णन किया। महाराज ने कहा कि महारास में भगवान श्रीकृष्ण ने बांसुरी बजाकर गोपियों का आह्वान किया और महारास लीला द्वारा ही जीवात्मा परमात्मा का ही मिलन हुआ। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण ने 16 हजार कन्याओं से विवाह कर उनके साथ सुखमय जीवन बिताया भगवान श्रीकृष्ण रुक्मिणी के विवाह की झांकी ने सभी को खूब आनंदित किया। कथा वाचक ने कहा कि जीव परमात्मा का अंश है इसलिए जीव के अंदर अपारशक्ति रहती है यदि कोई कमी रहती है वह मात्र संकल्प की होती है संकल्प एवं कपट रहित होने से प्रभु उसे निश्चित रूप से पूरा करेंगे। उन्होंने महारास लीला उद्धव चरित्र कृष्ण मथुरा गमन और रुक्मिणी विवाह महोत्सव प्रसंग पर विस्तृत विवरण दिया।।इस अवसर पर अंबरीष द्विवेदी, श्याम जी द्विवेदी, नीतीश द्विवेदी, सात्विक द्विवेदी, हर्षित द्विवेदी राघव, राय गोविंद द्विवेदी, वीरेंद्र कुमार द्विवेदी, नंदलाल त्रिवेदी, राजेश द्विवेद्वी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

लकवाग्रस्त सहकारी समितियों में फूंकी जायेगी नई जान

जनसुनवाई फाउंडेशन के नेतृत्व में जनपद की सभी सहकारी समितियों व एफपीओ को किया जायेगा एकजुट

अखंड भारत संदेश

मेजा। साधन सहकारी समिति पथरा में किसानों की बैठक हुई। जिसमें न्याय पंचायत पथरा के अन्तर्गत आने वाले ग्राम पंचायत के किसान प्रतिनिधियों सहित कई किसानों ने भी शिरकत किया।खरीफ की खेती में होने वाली समस्याओं और उसके समाधान को लेकर साधन सहकारी समिति लिमिटेड की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। उपस्थित किसान बग्गू सिंह, रोशन सिंह,बन्धू आदिवासी आदि ने उर्वरक की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित करने एवं खरपतवार नाशक दवा व जिंक, सल्फर, जिप्सम सहित कीटनाशक की भी बिक्री सोसायटी में उपलब्ध कराने की मांग रखी तो नेवादा ग्राम पंचायत के पूर्व प्रधान बाणीपति तिवारी द्वारा कहा गया कि शासन द्वारा किसानों की आमदनी दुगुनी करने का वादा किया गया था किन्तु आज तक साधन सहकारी समितियों का कायाकल्प के बारे में क्यों नहीं प्रयास किया गया। जबकि किसानों को सुविधाएं प्राप्त करने का एक मात्र स्थान सहकारी समिति ही है। बीते कालखंड का नजीर

देते हुए तिवारी जी ने बताया कि हरित क्रान्ति योजना का लाभ सहकारी समिति के ही माध्यम से सुनिश्चित हुआ था और किसानों की मेहनत व सहकारी समितियों के योगदान के बल पर आज हमारा देश अनाज में आत्मनिर्भर हुआ है। जब से समितियों की अनदेखी शुरू हुई तब से किसानों की समस्या बढ़ने लगी है।पथरा साधन सहकारी समिति के अध्यक्ष जगनायक मिश्र ने बताया कि समिति में लगभग 1200किसान सदस्य हैं ?जिनके द्वारा लगभग 3600हेक्टेयर में खरीफ सीजन में धान की खेती की जाती है किन्तु समिति के पास पैसा के अभाव में पर्याप्त खाद की सुलभता नहीं हो पाती है,जिसके कारण किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। अध्यक्ष द्वारा बताया गया कि किसानों की समस्याओं को संबंधित विभागीय अधिकारियों व शासन तक अवगत कराया गया है उम्मीद है कि साधन सहकारी समिति पथरा से संबंधित किसानों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित होगा। ग्रामीण विकास को लेकर अनवरत प्रयासरत संस्था जनसुनवाई फाउंडेशन के प्रदेश प्रभारी अधिवक्ता कमलेश प्रसाद मिश्र ने बताया कि शासन की मंशा है कि किसानों की आमदनी दुगुनी हो किन्तु क्या कारण है कि किसानों के हित में स्थापित संस्था सहकारी समिति को कुपोषित करके रखा गया है एक तरफ शासनादेश जारी होता है कि विभिन्न प्रकार से किसानों की मदद करते हुए आमदनी दुगुनी की जायेगी वहीं दूसरी तरफ आजादी के बाद की बनी संस्था को हासिए पर रखा गया है।जबकि सच्चाई यह है कि सहकारी समिति केवल एक संस्था तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह किसानों के सर्वांगीण विकास का आइना है। यदि वास्तव में शासन की मंशा किसानों का भला करने का है तो सहकारी समितियों को केवल खाद विक्री केन्द्र तक ही सीमित नहीं रखा जाय बल्कि कृषि उत्पादन एवं उत्पाद केन्द्र के रूप में विकसित करते हुए सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय संरक्षण केंद्र का हब बनाया जाय। जनसुनवाई फाउंडेशन के मण्डल समन्वयक एवं तेंदुआ खुर्द साधन सहकारी समिति के अध्यक्ष राहुल तिवारी ने कहा कि कृषि सहकारिता प्रणाली को पुनः सक्रिय और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से जनसुनवाई फाउंडेशन के तत्वावधान में आन्दोलन की शुरूआत की जाएगी।इस पर एक मत होने के लिए जनपद की सभी सहकारी समितियों की उच्च स्तरीय बैठक शीघ्र आहूत की जाएगी। एवं भारत सरकार के सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह को एवं उत्तर प्रदेश सरकार के सहकारिता मंत्री को भी लिखित विज्ञापन प्रेषित किया जायेगा।बैठक में ग्राम पंचायत भ?इयां के सूबा लाल दूबे पूर्व प्रधान कौशलेश कुमार, राजकुमार, गोविन्द प्रसाद, राजेश कुमार , ग्राम पंचायत शमलीपुर के पूर्व ग्राम प्रधान शेखर द्विवेदी, अशोक कुमार, अश्विनी कुमार, जानकीनाथ,ग्राम पंचायत पथरा के पूर्व प्रधान लालजी मिश्र, दिनेश कुमार पाण्डेय, अवधराज सिंह, रामराज सिंह, चन्द्रमा पटेल, आदि किसान एवं पदाधिकारी रहे।

खबर संक्षेप

अंकपत्र में संशोधन के लिए लगाए जाएंगे कैंप, 12 जून से लगेगा कैंप

प्रयागराज। यूपी बोर्ड के हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के 61219 विद्यार्थी मार्कशीट में अपना नाम, माता-पिता का नाम, जन्मतिथि आदि त्रुटियों के संशोधन के लिए भटक रहे हैं। इसको लेकर बोर्ड के सचिव दिव्यकांत शुक्ला ने लंबित प्रकरणों के निस्तारण के लिए जिलों में 12 से 30 जून तक कैंप लगाने के निर्देश दिए हैं।मार्कशीट में संशोधन को लेकर हाईस्कूल के 43386 व इंटरमीडिएट के 17833 मामले लंबित पड़े हुए हैं। शुक्रवार को बोर्ड की ओर से जारी सूची में पांच क्षेत्रीय कार्यालयों के आंकड़े जारी किए गए हैं। इनमें सर्वाधिक 24,279 मामले मेरठ क्षेत्रीय कार्यालय में लंबित हैं, जबकि सबसे कम 3212 केस गोरखपुर के हैं। प्रयागराज क्षेत्रीय कार्यालय में भी कुल 8263 मामले लंबित हैं। जिनमें हाईस्कूल के 5233 और इंटरमीडिएट के 3030 मामले हैं। संशोधन के लंबित मामलों की संख्या बरेली में 6474 व वाराणसी क्षेत्रीय कार्यालय में 18991 है।

गंगा में डूबने से दो बच्चों की मौत

दो को बचाया गया, घर से बिना बताए नहाने गए थे बच्चे

अखंड भारत संदेश

फाफामऊ। फाफामऊ घाट के पास शनिवार की शाम गंगा स्नान के लिए गए चार बच्चे डूबने लगे। तैराकों ने दो को तो बचा लिया लेकिन दो बच्चों को नहीं बचाया जा सका। गोताखोरों ने जब तक उन्हें निकाला उनकी सांसें थम चुकी थी। चारों बच्चे घर वालों से बिना बताए गंगा स्नान के लिए चले गए थे।फाफामऊ बाईपास के पास रहने वाले गुड्डू काम के सिलसिले में शहर से बाहर रहते हैं। यहां उनकी पत्नी शाहजहां बच्चों के साथ रहती हैं। शनिवार की शाम गुड्डू का आठ साल का बेटा अल्तमस मां को बिना बताए अपने दोस्तों के साथ खेलने चला गया। वहीं से चार दोस्त गंगा में नहाने के लिए चल दिए। अल्तमस के साथ विक्रम का बेटा मुद्दू (10), गप्पू सोनी का बेटा आशीष (15) और देवल (12) भी था। चारों फाफामऊ घाट से नहाने के लिए नदी में उतरे। आगे बढ़ते बढ़ते यकायक गहरे पानी की चपेट में आकर डूबने लगे।वहां मौजूद तैराकों ने तुरंत छलांग लगा दी। देवल और आशीष को बाहर निकाल लिया गया लेकिन अल्तमस और मुद्दू गहरे पानी में गुम हो गए। दो बच्चों के डूबने की खबर सुनकर पुलिस मौके पर पहुंच गई। गोताखोरों को भी उतारा गया। कुछ देर बाद अल्तमस और मुद्दू मिल गए। लोग दोनों बच्चों को लेकर तुरंत अस्पताल की ओर भागे। डाक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया।अल्तमस की मौत की खबर सुनकर उसकी मां शाहजहां बेसुध हो गई। मुद्दू के परिवार वाले भी शव से लिपटकर रो रहे थे। दोनों के घर वालों को यह पता भी नहीं था कि वे नहाने गए हैं। थानाध्यक्ष शिवकुटी ने बताया कि दोनों बच्चों के परिवार वाले पोस्टमार्टम नहीं चाह रहे हैं। अधिकारियों से बात की जा रही है। अगर अनुमति मिली तो दोनों बच्चों के शव परिजनों को सौंप दिए जाएंगे।

न गहरे पानी के संकेतक न कहीं निगरानी, माह भर में संगम-गंगा में 30 लोगों की डूबने से हो चुकी है मौत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। संगम समेत गंगा यमुना के घाटों पर डुबकी लगाने के लिए देश-दुनिया के कोने-कोने से आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा से मेला प्रशासन बेपरवाह है। घाटों पर जहां हजारों श्रद्धालुओं का रोज रेला उमड़ता है, वहां गहरे पानी वाले डेंजर जोन को न चिह्नित किया गया है और न वहां संकेतक ही लगाए गए हैं। नतीजतन महीने भर के भीतर संगम और आसपास के घाटों पर 28 जिंदगियां काल के गाल में समा चुकी हैं।संगम पर गहरे पानी में डूबने से मौतों का सिलसिला जारी है। एक माह के दौरान डूबने के कारण कई लोगों की जान चली गई हैं। बावजूद इसके मेला प्रशासन के अधिकारी लगातार इस मामले को लेकर गंभीर नहीं नजर आ रहे हैं।हालात इतने खराब हैं कि कई लोगों की जान जाने के बावजूद प्रशासन की ओर से तिलक घाट से लेकर दारागंज घाट तक किसी भी घाट पर गहरे पानी वाले तटों को चिह्नित कर निर्देशिका तक नहीं लगाई गई है। ना ही किसी घाट पर जल पुलिस या एनडीआरएफ की तैनाती ही की गई, ताकि दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालुओं को गहरे पानी में जाने से रोका जा सके। खानापूर्ति के लिए संगम मुख्य स्नान घाट, किला घाट, रामघाट, कालीघाट, दारागंज घाटों पर डीप वॉटर बैरिकेडिंग लगाकर कर्तव्यों की इतिश्री कर ली गई है।रामघाट के तीर्थपुरोहित राम लखन कहते हैं कि शासन की ओर से इस और जब तक कड़ाई से ध्यान नहीं दिया जाएगा, तब तक डूबने की घटनाओं पर काबू नहीं पाया जा सकता। संगम घाट पर चंदन टीका लगाने वाले पं. रामनरेश त्रिपाठी बताते हैं कि भक्त स्नान के दौरान पानी कम होने के कारण डीप वॉटर बैरिकेडिंग को क्रॉस करके आगे चले जाते हैं। इस दौरान जल की धारा में फंसने से डूबने से उनकी की मौत हो जाती है। समय एक बजे दोपहर के समय संगम मुख्य स्नान घाट में मध्य प्रदेश के रीवा से आए बच्चू लाल परिवार संग नहा रहे थे। इस दौरान पानी कम होने के कारण बच्चू लाल डीप वॉटर बैरिकेडिंग को क्रॉस करके स्नान करने आगे चले गए। तभी वहां पर मौजूद लोगों ने उनको ऐसा करने से रोका। वापस आने पर उनसे ऐसा करने की वजह पूछी गई तो उन्होंने बताया कि गहरे पानी का कोई भी साइन बोर्ड नहीं दिखाई पड़ा, इस कारण वह स्नान करने आगे चले गए थें।रामघाट पर छत्तीसगढ़ से स्नान करने परिवार संग पहुंचे शेषमणि पत्नी और बच्चों संग स्नान करते-करते गहरे पानी की तरफ चले गए इस दौरान पर लड़खड़ाया तो पत्नी आरती में शोर मचाया। आसपास आसपास मौजूद लोगों ने उनको बाहर निकाला। शेषमणि ने बताया कि नहाते समय गहरे पानी का अंदाजा ही नहीं हुआ। कब उनका पैर फिसलने लगा समझ में ही नहीं आया। यह घटनाएं तो बस एक बानगी भर हैं। अगर शासन के स्तर से किला घाट, संगम मुख्य स्नान घाट, वीआईपी घाट, रामघाट ,कालीघाट , दारागंज घाट आदि घाटों पर गहरे पानी का साइन बोर्ड लगा दिया जाए और जल पुलिस की तैनाती कर दी जाए तभी घटनाओं को रोका जा सकता है।

डूबने से अब तक हुई मौतें : 4 मई शिवकुटी से 5 बच्चे गंगा नहाने गए जिसमें दो बच्चे 13 वर्षी कृष्ण और 12 वर्षी प्रियांशु डूब गए।18 मई एमएनएनआईटी के पांच छात्र गंगा नहाने गए जिसमें से दो छात्र दीपेंद्र और विकास मौर्य डूब गए 20 मई फाफमऊ घाट पर गंगा में वॉलीबॉल खेल रहे दो छात्र रमन और कृष्णा गंगा में समा गए। 23 मई सतना से संगम स्नान को पहुचे आदित्य और गोविंद गंगा में बह गए।30 मई गंगा दशहरा के दिन अरैल घाट पर स्नान करता है उज्जवल गुप्ता पानी में समा गया गया।2 जून श्रृंगवेरपुर घाट पर स्नान करता है युवक केशव पानी में समा गया4 जून करछना क्षेत्र स्थित गंगा घाट पर स्नान को गए दो चचेरे भाई गंगा में बह गए। 4 जून संगम में छह युवकों की डूबने से मौत 8 जून लालापुर में यमुना में डूबने से युवती की मौत। इसी प्रकार 10 जून शनिवार को फाफामऊ घाट के पास शनिवार की शाम गंगा स्नान के लिए गए चार बच्चे डूबने लगे। तैराकों ने दो को तो बचा लिया लेकिन दो बच्चों को नहीं बचाया जा सका।

नैनी में संयुक्त मोर्चा सम्मेलन का हुआ आयोजन

बीजेपी प्रवक्ता शहनवाज हुसैन ने कहा की बीजेपी पार्टी के 9 साल बेमिसाल रहे

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी में संयुक्त मोर्चा सम्मेलन का हुआ शनिवार को सुंदरम गेस्ट हाउस में प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सेवा,सुशासन और गरीब कल्याण के 9 साल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संयुक्त मोर्चा सम्मेलन का आयोजन दीप प्रज्वलित कर किया गया। संयुक्त मोर्चा सम्मेलन के मुख्य अतिथि सहनवाज हुसैन राष्ट्रीय प्रवक्ता भारतीय जनता पार्टी रहे। उन्होंने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ता का अहम भूमिका होती है सांसद और विधायक बनाने। यह जो माला पहनते हैं वह हमारे कार्यकर्ता के पसीने की मेहनत की बदौलत पहनते हैं।मेहनत कार्यकताओं की होती है,नेताओ की नही।कार्यकताओं का प्रयास ही हम सब को सफल बनाती है। बीजेपी प्रवक्ता शहनवाज हुसैन ने कहा की बीजेपी पार्टी के 9 साल बेमिसाल रहे और अपने पार्टी की उपलब्धियां गिनाई। मंच का संचालन कर रहे विजय शंकर शुक्ला ने अपने बातो से सब को मोहित किया और पार्टी की एकता पे जोर दिया। कार्यक्रम में उपस्थिति नैनी थाना प्रभारी बृजेश सिंह सहित मय फोर्स सहित थाने की फोर्स उपस्थित रही। उपर्युक कार्यक्रम में प्रयागराज सांसद डॉ रीता बहुगुणा जोशी, राजमणि कोल विधायक कोराव ,नीलम करवरिया पूर्व विधायक मेजा, जिला अध्यक्ष भाजपा युवा मोर्चा,विवेक मिश्र (आशु) भाजपा किसान मोर्चा महामंत्री, कमलेश दुबे ब्लॉक प्रमुख करछना, योगेश शुक्ला बीजेपी वरिष्ठ नेता,रंजय मिश्रा मंडल अध्यक्ष किसान मोर्चा कोहड़ार ,आशीष मुन्ना मिश्रा जिला उपाध्यक्ष, जिला प्रभारी,विभव नाथ भारतीय जिला अध्यक्ष यमुनापार, डा. भागवत पांडे,जितेंद्र शुक्ला, आशीष मिश्रा मंडल उपाध्यक्ष युवा मोर्चा मनकामेश्वर, आंचल केसरवानी, संतरा देवी सहित बीजेपी के सैकड़ों कार्यकर्ता व समस्त पदाधिकारी मौजूद रहे।

नैनी सेंट्रल जेल में विचाराधीन कैदी की मौत

अखंड भारत संदेश

हत्या, आम्से एक्ट व साजिश के आरोप में 3 साल से बंद था, बीमारी से गई जान

नैनी। नैनी सेंट्रल जेल में एक विचाराधीन कैदी की मौत हो गई। जेल प्रशासन का कहना है कि वह लंबे समय से बीमार था। हत्या के मामले में पिछले 3 साल से नैनी सेंटल जेल में बंद कैदी का इलाज चल रहा था। हालत बिगड़ने पर उसे स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय ले जाया गया। जहां उसने दम तोड़ दिया। पुलिस का कहना है कि उसके परिवार के लोग नहीं मिले हैं। नात रिश्तेदारों को सूचना दे दी गई है। लाश को पोस्टमा्टम हाउस में रखवा दिया गया है। सेंट्रल जेल नैनी में विचाराधीन कैदी मोहम्मद नुरैन (27) पुत्र अशफीर्लाल, दक्षिणी लोकपुर, नैनी,का रहने वाला था। उसे नैनी पुलिस ने 3 मार्च 2020 को गिरफ्तार किया था। लिखा पढ़ी के बाद उसे जेल भेज दिया गया था। जेल में रहने के दौरान से वह बीमार चल रहा था। उसका जेल अस्पताल में इलाज चल रहा था। समय-समय पर बाहरी हॉस्पिटल में भी उसे दवा कराने के लिए ले जाया जाता था। हालत ज्यादा बिगड़ने पर उसे स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय भेजा गया। जहां उसकी मौत हो गई। पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया और उसके घर वालों को सूचना दी। नैनी पुलिस का कहना है कि परिवार का कोई सदस्य मिला नहीं है। नाते-रिश्तेदारों के जरिए सूचना दी गई है। उसकी लाश को पोस्टमार्टम हाउस में रखा है। परिवार के आने के बाद उसकी लाश का पोस्टिमार्टम कराकर उनकी सुपुर्दगी में दे दिया जाएगा।

काठमांडू में क्रियायोग की शिक्षा व अभ्यास कराते अंतर्राष्ट्रीय क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी महाराज व मौजूद साधक

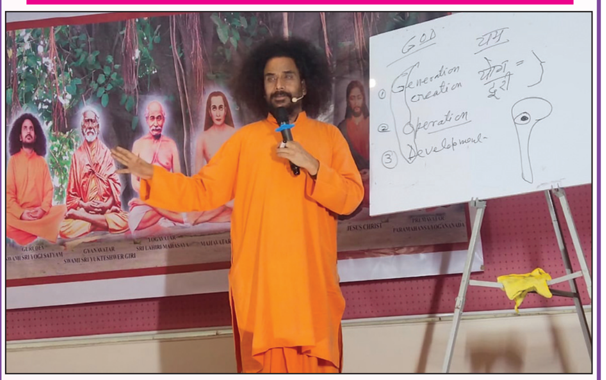

परास्नातक कक्षाओं में अगले महीने से प्रवेश की तैयारी

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की योजना सफल हुई तो इस वर्ष से शैक्षिक सत्र पटरी पर आ जाएगा। परास्नातक कक्षाओं की प्रवेश परीक्षा का परिणाम इसी महीने घोषित करके जुलाई से दाखिले करने की तैयारी है।कोरोना काल के बाद से विश्वविद्यालय का शैक्षिक सत्र पटरी से उतरा हुआ है। पिछले वर्ष परास्नातक कक्षाओं में दिसंबर तक प्रवेश होते रहे। कॉलेजों में तो और देरी तक प्रवेश हुए, लेकिन इस सत्र से इसके नियमित होने की उम्मीद है। बीकॉम अंतिम वर्ष का परिणाम घोषित किए जाने को इसी कवायद के रूप में देखा जा रहा है।बीएससी, बीए समेत स्नातक के अन्य पाठ्यक्रमों के अंतिम वर्ष के भी परिणाम जून में घोषित होने की उम्मीद है। प्रवेश प्रकोष्ठ के निदेशक प्रोफेसर जेके पति का कहना है कि जून में ही परास्नातक प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने की तैयारी है। इसके बाद प्रवेश शुरू कर दिए जाएंगे।

मऊआइमा के पवन यादव पोलवाट अन्डर 19 में गोल्ड मेडल भोपाल में जीते

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा क्षेत्र में खेल कूद एंव शिक्षा के क्षेत्र में नाम कमाने में अपना दबदबा कायम किए हुए है।मलाका गहरपुर के निवासी शिवभजन यादव का पुत्र पवन यादव इवेन्ट पोलवाट अन्डर 19 में भोपाल में गोल्ड मेडल जीत कर सबको चौका दिए। इसके पूर्व पवन यादव की बहन रंजना यादव 17 वर्ष भाला फेंक में गोल्ड मेडल जीत चुकी है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा क्षेत्र के राम अधार इन्टर कालेज के छात्र रहे पवन यादव बचपन से ही खेल में रूचि लेते रहे हैं। साथ में छोटी बहन रंजना यादव भी हिस्सा लेती रही है। बताया गया है कि पवन यादव स्कूल नेशनल पोलवाट अन्डर 19 में आठ जून को मध्य प्रदेश के भोपाल में आयोजित गेम्स में 4,10 मीटर छलांग लगा कर गोल्ड मेडल जीत लिए। पवन यादव इसके पूर्व गोरखपुर में

पवन यादव की बहन भी अन्डर 17 में भाला फेंक में गोल्ड जीत चुकी है

अन्डर 15 में भी गोल्ड जीत चुके हैं। पवन यादव मदन मोहन मालवीय स्पोर्टस स्टेडियम में छात्रावास में रह कर प्रैक्टिस करते हैं। जब उनकी छोटी बहन रंजना यादव अन्डर 17 गोरखपुर में भाला फेंक में गोल्ड मेडल जीत चुकी है। पवन यादव के इस उपलब्धि पर कोच श्री देवी प्रसाद यादव पिता शिवभजन माता परिजनों में खुशी की लहर व्याप्त है।

नैनी में डेयरी के अंदर लटकता मिला शव

बेटे ने कहा- पिता को किसी बात की टेंशन नहीं थी, हत्या की जताई आशंका

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र में डेयरी फार्म के अंदर एक व्यक्ति का फंदे से लटका शव मिला। परिवार के लोगों ने हत्या की आशंका जताई है जबकि पुलिस ने सुसाइड मानकर शव को पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। नैनी कोतवाली अंतर्गत देवरख उपरहार निवासी लाल बहादुर यादव (55) पुत्र स्वगीय गंगा प्रसाद यादव की पत्नी की मौत हो चुकी है। उनके चार पुत्र और एक पुत्री हैं । बेटी की शादी हो चुकी है। चारों बेटों की शादी हो चुकी है। सब अलग रहते हैं। लाल बहादुर पड़ोस के रहने वाले दिलीप सिंह की डेयरी में गाय भैंस की देख रेख करता था। वहीं रहता भी था दोपहर में वह डेयरी के अंदर बबूल के पेड़ में रस्सी के फंदे से लटका मिला। डेयरी में गए दिलीप सिंह ने देखा तो जानकारी हुई। पता चलने पर उसका बेटा बबलू यादव आदि लोग पहुंच गए। पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस पहुंची और शव को फंदे से नीचे उतारा गया। उसके बाद पुलिस ने छानबीन की। उसके बेटे बबलू यादव ने हत्या की आशंका जताई है। बेटे का कहना है कि सब बच्चे कमा खा रहे हैं। उनको कोई टैंशन नहीं थी। वह डेयरी से इतना कमाते थे कि पूरा खर्चा चलता था फिर आत्महत्या करने का कोई सवाल ही नहीं उठता। निश्वित तौर पर उनके साथ कोई अनहोनी हुई है। हत्या कौन और क्यों किया, इस बारे में कोई कुछ नहीं बता पा रहा है। हालांकि पुलिस आत्महत्या ही मान रही है। इंस्पेक्टर नैनी बृजेश सिंह ने बताया कि शरीर पर गले के निशन के अलावा कोई चोट नहीं है। जांच की जा रही है।

किराये के मकान में चल रहे सेक्स रैकेट का भंडाफोड़

संचालिका समेत पांच लोग गिरफ्तार, पुलिस ने एक किशोरी को भी मुक्त करवाया

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कैंट थाना अन्तर्गत राजापुर मोहल्ले में किराये के मकान में चल रहे सेक्स रैकेट का पुलिस ने भंडाफोड़ किया है। प्रतापगढ़ की रहने वाली संचालिका समेत पांच लोगों को हिरासत में लिया गया है। जिनमें दो महिलाएं और तीन पुरुष शामिल हैं। पुलिस ने वहां से एक नाबालिग को भी छुड़ाया है। पुलिस पूछताछ में जुटी है। एक एनजीओ की आड़ में काफी समय से सेक्स रैकट चलाया जा रहा था। पुलिस इस मामले में ब्लैकमेलिंग के एंगल से भी जांच कर रही है। नगर के धूमनगंज एसीपी वरुण कुमार को शुक्रवार की रात अचानक सूचना मिली कि राजापुर में सेक्स रैकिट चल रहा है। वहां एक किशोरी से भी गलत काम कराया जा रहा है। सटीक सूचना पर एसीपी वरुण कुमार ने तुरंत वहां छापा मारा। कैंट थाना क्षेत्र के राजापुर हनुमान मंदिर के पास किराये के एक कमरे में एनजीओ का बोर्ड लगा था। अंदर बेड लगे थे। पुलिस ने मौके से सेक्स रैकेट की संचालिका और एक दलाल के साथ दो ग्राहकों को भी पकड़ लिया। एक युवती को भी पकड़ा गया। एसीपी ने वहां मौजूद नाबालिग लड़की को उनके चंगुल से छुड़ाया एसीपी धूमनगंज वरुण कुमार सिंह के मुताबिक, मौके से सेक्स रैकेट संचालिका सुनीता मिश्रा एक कॉलगर्ल के साथ नाबालिग लड़की को भी मुक्त कराया गया है। मौके से 3 लड़के पकड़े गए हैं। जिनमें से एक दलाल और दो कस्टमर हैं। इन सभी के खिलाफ कैंट पुलिस स्टेशन में मुकदमा दर्ज कराया गया है। पुलिस ब्लैकमेलिंग के एंगल से भी जांच कर रही पुलिस उनके मोबाइल नंबर की कॉल डिटेल्स निकाल कर जांच कर रही है। इस धंधे में कौन-कौन शामिल है। यह कॉल डिटेल से खुलासा होगा। बताया जा रहा है कि सुनीता मिश्रा की शिकायत काफी दिनों से मिल रही थी, लेकिन कैंट पुलिस इस मामले में कार्रवाई से कतरा रही थी। नए एसीपी के आने के बाद छापेमारी हुई। जिससे हड़कंप मचा हुआ है।

स्कूल गई छात्रा का सरेआम अपहरण, दर्ज हुआ मुकदमा, बेचने की जताई आशंका

प्रयागराज। स्कूल गई छात्रा का सरेआम अपहरण करने का मामला प्रकाश में आया है। दूसरे दिन भी पुलिस ने मुकदमा दर्ज नहीं किया है। पिता थाने का चक्कर काट रहा है। उसने आशंका जाहिर की है कि उसकी बेटी को बेचा भी जा सकता है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।शहर के अलोपीबाग के रहने वाले एक शख्स की बेटी का अपहरण हो गया। पिता ने कुछ लोगों पर आरोप लगाया है कि उन्होंने ही बेटी का अपहरण किया। पिता के मुताबिक उन्होंने 18 मई को बेटी को बाई का बाग स्थित स्कूल छोड़ा था। वापसी के समय पहुंचा तो बेटी नहीं थी। रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। पुलिस ने अभी किसी को नामजद नहीं किया है। पिता को शंका है कि अपहरण करने वाले बेटी को बेच भी सकते हैं।घटना के दूसरे दिन भी आरोपियों के खिलाफ न तो मुकदमा दर्ज किया गया है और न ही लड़की का कोई सुराग लग सका है। पुलिस का कहना है कि मामले की छानबीन की जा रही है।

मुकेश शुक्ला बने उत्तर प्रदेश स्कूल वॉलीबाल टीम के कोच

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज के बेसिक शिक्षा विभाग में है कार्यरत। इससे पहले यूपी की विद्यालयीय टीम के सलेक्टर भी रहे है

मेजा। जनपद के बेसिक शिक्षा विभाग में कार्यरत राष्ट्रीय वॉलीबाल खिलाड़ी मुकेश शुक्ला को उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा अंडर-19 बालकों की प्रदेशीय स्कूल वॉलीबाल टीम का चीफ कोच बनाया गया है। आगामी 10 से 13 जून 2023 तक मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित 66वीं स्कूल नेशनल वॉलीबाल चैम्पियनशिप-2022-23 में प्रयागराज के मुकेश शुक्ला मुख्य प्रशिक्षक के रूप में उत्तर प्रदेश स्कूल टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। मुकेश शुक्ला ने खेल विशेषज्ञ के रूप में एन.आई.एस.कोच का कोर्स किया है। साथ ही साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फेडरेशन आफ इंटरनेशनल डी वॉलीबाल के लेवल-1 अंतरराष्ट्रीय कोच व वॉलीबाल के रेफरी भी है। विदित हो कि गत माह 27 मई से 1 जून तक वेस्ट बंगाल, कोलकाता में संपन्न हुई सब जूनियर बालकों की राष्ट्रीय वालीबाल चैम्पियनशिप में प्रयागराज जिले के मुकेश शुक्ला ने अंडर-16 बालकों की टीम कोच की भूमिका अदा की थी। परिणाम स्वरूप उत्तर प्रदेश ने गोल्ड मेडल जीतकर राष्ट्रीय विजेता होने का गौरव प्राप्त किया था। प्रयागराज के मुकेश शुक्ला को फिर से उत्तर प्रदेश राज्य की टीम का कोच बनाए जाने पर जिला वालीबाल संघ के पदाधिकारियों व जनपद के खिलाड़ियों तथा शिक्षकों में हर्ष की लहर है। जिसके लिए मुख्य रूप से अभिषेक तिवारी अधिवक्ता उच्च न्यायालय व राज्य विधि अधिकारी उत्तर प्रदेश सरकार, सुशील मिश्रा अधिवक्ता उच्च न्यायालय, आशीष मिश्रा मुन्ना भैया, ई.नित्यानंद उपाध्याय, प्रो.डॉ.पवन पचौरी क्रीड़ा सचिव रज्जू भैया विश्वविद्यालय, विनोद शुक्ला, मनीष तिवारी, मुचकुंद मिश्रा अध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक संघ, डॉ.जे.पी.शर्मा सचिव जिला खो-खो संघ प्रयागराज, दिवाकर दत्त मिश्रा, सुनील शुक्ला, राजेश मिश्रा, रोहित त्रिपाठी, अजीत मिश्रा, बृजेश शुक्ला, रामसागर मिश्रा, विमलेश यादव, प्रीतम दास, संदीप पांडेय, रामराज तिवारी, राजेश कोलहा, अजीत सिंह, हरिकेश त्रिपाठी, राघवेंद्र सिंह, संतोष दुबे, साकेत तिवारी, चंद्रमोहन राव, अशोक यादव, अर्जुन सिंह व डॉ.संजय त्रिपाठी आदि ने अपनी शुभकामनाओं के साथ बधाइयां देकर उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

एशिया एथलीट में सिल्वर मेडल विजेता शाहरुख का बेल्हा में हुआ स्वागत

सदर विधायक ने किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। दक्षिण कोरिया में चल रहे एशिया एथलीट में सिल्वर मेडल जीत कर भारत का नाम रोशन करने वाले नगर कोतवाली क्षेत्र के संग्रामपुर कमास के मधई का पुरवा निवासी शाहरुख का शनिवार को बेल्हा पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया।

भारी भीड़ के साथ गांव एवं नगर के लोगों ने स्टेशन पर पहुंचकर सिल्वर पदक जीतने वाले शाहरूख की जोरदार अगवानी की। सदर विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य ने अपने कार्यालय पर पदक विजेता खिलाड़ी का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

सिल्वर मेडल विजेता शाहरुख को सम्मानित करते सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य।

बता दें कि 5 जून को शाहरुख को 3 किलो मीटर की बाधा दौड़ में पूरे एशिया में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ था। दक्षिण कोरिया में हो रहे एथलीट बाधा दौड़ में हिंदुस्तान का उन्होंने परचम लहराया था। हिंदुस्तान वापस आने के बाद पहली बार इंटरसिटी से जब शाहरुख बेल्हा पहुंचे तो गांव के प्रधान प्रतिनिधि अजय कुमार मौर्य एवं उनके चाहने वाले डीजे एवं फूलों से सजी संवरी खुली जीप लेकर उसके स्वागत के लिए स्टेशन पर पहले से इंतजार कर रहे थे। हिंदुस्तान जिंदाबाद के नारे के साथ शाहरुख को जुलूस की शक्ल में गांव तक लाया गया। चिलबिला में अपने कार्यालय पर सदर विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य ने शाहरुख को लड्डू खिलाया, माल्यार्पण किया और उसे शुभकामना दी। राजेंद्र कुमार मौर्य ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सोच के तहत आज खेलो इंडिया के तहत गांव की प्रतिभाएं देश का नाम रोशन कर रही हैं। इसके बाद भीड़ गांव पहुंची जहां पर परिजनों एवं शुभचिंतकों में जश्न का माहौल रहा। शाहरुख अपने स्वागत से गदगद नजर आए और बोले कि आने वाले ओलंपिक में हिंदुस्तान के लिए मेडल दिलाना उनकी प्राथमिकता में है।

दुर्घटना में बुजुर्ग की मौत कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। अज्ञात वाहन की टक्कर से बुजुर्ग की मौत होने से परिजनों में कोहराम मच गया। लीलापुर थाना क्षेत्र के डांडी ग्राम सभा में शुक्रवार को भण्डारे का आयोजन था। सांगीपुर थाना के पूरेरूप निवासी संतलाल वर्मा उर्फ संतू (70) पुत्र अलगू वर्मा शुक्रवार की शाम छह बजे साईकिल से भण्डारे में शामिल होने जा रहा था। लीलापुर थाना के सगरासुंदरपुर नहर के पास अज्ञात वाहन ने साईकिल सवार को टक्कर मार दी। दुर्घटना में घायल बुजुर्ग को इलाज के लिए लालगंज ट्रामा सेंटर लाया गया। गम्भीर स्थिति देख उसे परिजन रेफर होने पर इलाज के लिए प्रयागराज एसआरएन ले जा रहे थे। रास्ते में देर रात घायल संतू ने दम तोड़ दिया। शव घर पहुंचा तो कोहराम मच गया।

एमडीपीजी में आयोजित परीक्षा में आठ रहे अनुपस्थित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमडीपीजी कॉलेज के इग्नू अध्ययन केंद्र पर विभिन्न पाठ्यक्रमों की नियमित परीक्षायें चल रही हैं। प्रथम पाली की परीक्षाएं प्रातः 10 बजे से दोपहर एक बजे तक एवं द्वितीय पाली की परीक्षाएं अपरान्ह दो बजे से ंच बजे तक हो रही हैं। अमेठी सुल्तानपुर एवं प्रतापगढ़ जनपदों के परीक्षार्थी इस परीक्षा केंद्र पर अपनी परीक्षाएं दे रहे हैं। प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र के निर्देशन में एमडीपीजी अध्ययन केंद्र के समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह की निगरानी में परीक्षाएं हो रही हैं। एमडीपीजी कॉलेज के जन सूचना अधिकारी एवं इग्नू के काउंसलर डॉ सी एन पांडे ने बताया कि आज प्रथम पाली में 24 परीक्षार्थी पंजीकृत थे जिनमें 21 ने परीक्षा दी एवं तीन परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। द्वितीय पाली में 18 परीक्षार्थी पंजीकृत थे 13 ने परीक्षा दी एवं पांच अनुपस्थित रहे। परीक्षा में कार्यालय सहायक विजय पांडे, मोहम्मद अयूब, रोहन सिंह आदि ने सहयोग किया।

परीक्षा कक्ष का निरीक्षण करते शिक्षकगण।

तमंचा लहराकर युवक को जान से मारने की दी धमकी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। रेडीगारापुर बाजार में आरोपियों ने तमंचा लहराकर युवक को जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित ने कोतवाली में इसकी शिकायत की है। क्षेत्र के रेडीगारापुर बाजार का रहने वाला सैफअली पुत्र आशिफ ने बताया कि बाजार के रहने वाले तीन लोग शुक्रवार को उसकी दुकान पर पहुंचे और मारपीट करने लगे पीड़ित ने डायल हंड्रेड पुलिस को सूचना दिया तो मौके पर पहुंचकर पुलिस ने मामला शांत कराया लेकिन उसके बाद रात आठ बजे आरोपीगण फिर से उसके दरवाजे पर पहुंचकर तमंचा लहराया और जान से मारने की धमकी दी है।

दर्जन भर आरोपियों पर जमीनी विवाद में मारपीट को लेकर मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जमीनी विवाद को लेकर चले लाठी डंडे में पुलिस ने दो पक्षों की ओर से पुलिस ने बारह आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। लालगज के लालगंज के रामपुर बवली निवासी सन्नू बानो पत्नी जव्वाद हुसैन ने पुलिस को दी गयी तहरीर में कहा है कि बीती सात जून को गांव के विपक्षी नियाज के पुत्र अल्तमश तथा नियाज की पुत्रियां गुलब्शा, हेमा, सानिया, अल्शिफा ने जमीनी विवाद को लेकर उसके दरवाजे हमलावर हो गये। आरोपियों ने पीड़िता के घर में घुसकर गाली गलौज करते हुए मारपीट शुरू कर दी। शोर मचाने पर आरोपियों ने पीड़िता का मोबाइल फोन तोड़कर नष्ट कर दिया। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मारपीट व गाली गलौज तथा बलवा समेत गम्भीर धाराओं में शुक्रवार की रात केस दर्ज किया। वहीं दूसरे पक्ष के सैयद नियाज हुसैन की पुत्री शमरीन बानो ने पुलिस को दी गयी तहरीर में कहा है कि बीती सात जून को रायबरेली जिले के काजियाना परदेशपुर थाना डीह निवासी मंसूर पुत्र मंजूर तथा मंसूर अहमद की पत्नी सन्नों वह नगर कोतवाली प्रतापगढ़ के पूर्वी सहोदरपुर ठकुरइया निवासी अमीर के पहुत्र समीर तथा पुत्रियां शालू व लाडों ने दो अज्ञात लोगों के साथ उसके घर पर कातिलाना हमला बोल दिया। आरोपियों ने घर में घुसकर मारपीट करते हुए तोड़फोड़ की। हमले में पीड़िता की बहन अधिक चोट लगने से बेहोश हो गयी। शोर मचाने पर आरोपी गाली देते हुए जांन लेवा धमकी देने लगे। तहरीर के आधार पर पुलिस ने सात नामजद तथा दो अज्ञात के खिलाफ हत्या के प्रयास, घर में घुसकर मारपीट बलवा समेत गम्भीर धाराओं में केस दर्ज किया है।

ऑनलाइन ट्रेडिंग से प्रदेश के सात करोड़ व्यवसायी प्रभावित: कंछल

उद्योग व्यापार मण्डल के प्रांतीय अध्यक्ष ने डाक बंगले में की पत्रकारवार्ता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के राष्ट्रीय/प्रांतीय अध्यक्ष बनवारी लाल कंछल शनिवार को डाक बंगले पहुंचे। इस दौरान जिलाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार केसरवानी की अध्यक्षता में व्यापार मण्डल के सभी कमेटियों के पदाधिकारियों व व्यापारियों के साथ पीडब्ल्यूडी डाक बंगले पर उन्होंने प्रेसवार्ता कर ऑनलाइन ट्रेडिंग का खुला विरोध किया।

उन्होंने कहा कि ऑनलाइन ट्रेडिंग से देश के इलेक्ट्रानिक, मोबाइल, रेडीमेड, कपड़ा, बिसातखाना, किराना, सरार्फा, जूता चप्पल, क्राकरी, बुक्स, इलेक्ट्रिकल्स आदि व्यवसायियों का व्यवसाय चैपट हो रहा है और इससे प्रदेश के लगभग 7 करोड़ व्यवसायी प्रभावित व पीड़ित हैं। कंछल ने बताया कि ऑनलाइन ट्रेडिंग का विरोध-ज्ञापन प्रदेश स्तर पर कुछ दिनों पूर्व प्रदेश कमेटी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल को संबोधित ज्ञापन, उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा दिया गया है। उन्होंने बताया कि आगामी 27 जून को प्रदेश के 84 जिलों में एक साथ ऑनलाइन ट्रेडिंग का विरोध ज्ञापन और धरना प्रदर्शन किया जाएगा। प्रेसवार्ता में प्रमुख रूप से अभय खंडेलवाल, चंद्र प्रकाश शुक्ला, संजय सोनी, सुरेश चंद केसरवानी, संजीव जयसवाल, राहुल केसरवानी, सरदार कुलविंदर सिंह, इफ्तेखार बॉबी, अख्तर राइन, प्रदीप यादव, शकील अख्तर, आशीष सिंह, संजय केसरवानी (बबलू), हरीश सोनी, सुनील जायसवाल, विष्णु सिंह, अरविंद जैन, धीरज उपाध्याय, राहुल गुप्ता, नारायण खंडेलवाल, इंद्रदेव तिवारी, पवन अग्रवाल, गुंजन केसरवानी, शिवकुमार सोनी व अब्दुल खादुल आदि के साथ उद्योग मंच के परितोष शुक्ला, अनुराग सिंह, अजय तिवारी के अतिरिक्त बाजार क्षेत्र से मोहनगंज व्यापार मंडल अध्यक्ष शीतला प्रसाद अग्रहरि, महामंत्री मेवालाल केसरवानी, संदीप कुमार अग्रहरी, गड़वारा व्यापार मंडल अध्यक्ष आशुतोष तिवारी, महामंत्री मदन लाल उमरवैश्य, पिंटू उमरवैश्य, विनय जायसवाल, कोहडौर व्यापार मंडल अध्यक्ष सत्यनारायण गुप्ता, संगठन मंत्री भोला शंकर जायसवाल, अनुभव जयसवाल, कटरा मेंदनीगंज व्यापार मंडल अध्यक्ष संतोष केसरवानी, महामंत्री जगदीश चंद्र जयसवाल आदि नगर व बाजारों के अन्य सम्मानित पदाधिकारी व व्यापारीगण उपस्थित रहे।

पत्रकारवार्ता में बोलते प्रांतीय अध्यक्ष बनवारी लाल कंछल।

शिविर लगाकर बनेंगे आयुष्मान कार्डः सरदार परमिन्दर सिंह

भंगवा चुंगी चौराहे का नाम गुरुनानक सिंह के नाम पर करने की उठाई मांग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेष अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य सरदार परमिन्दर सिंह ने आज पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि जिले में आयुष्मान कार्ड अभी पात्र लोगों का नहीं बन पाया है। इसके लिये उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी से मिलकर शहर के गुरुद्वारे में सात दिन का कैम्प लगाकर पात्र लोगों का आयुष्मान कार्ड बनाया जाए।

उन्होंने कहा कि उन्हें पता चला है कि आयुष्मान कार्ड बनाने का लक्ष्य 50 प्रतिषत ही पूरा हो पाया है। इसके लिये सीएमओ ने इसका अभियान शीघ्र चलाने का भरोसा दिया है। इसके अलावा अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य ने शहर के भंगवा चुंगी चैराहे का नाम गुरु गोविन्द सिंह के नाम पर करने के लिये नगर पालिका के अधिषाषी अधिकारी राम अचल कुरील से मिले थे। उन्होंने नगर पालिका के ईओ से मांग की है कि अल्पसंख्यकों के क्षेत्रों पंजाबी मार्केट, गुरुद्वारा, मस्जिदों में साफ-सफाई का विषेष ध्यान दिया जाए। इसके अलावा अल्पसंख्यक आयोग अवैध जमीन के कब्जे को लेकर गंभीर है। वह जिलाधिकारी से मिलकर खसरा खतौनी में खेल करने वालों पर षिकंजा कसने की मांग की है। उन्होंने धर्मान्तरण को भी गलत माना और कहा कि सरकार जबरदस्ती करने वालों पर सख्त कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि इससे दो समुदायों में कटुता बढ़ती है। पत्रकारवार्ता में सिख समुदाय के लोगों के अलावा कई अल्पसंख्यकों ने भी आयोग के सदस्य का प्रारंभ में स्वागत किया।

पत्रकारवार्ता में बोलते अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य सरदार परमिन्दर सिंह।

मकान की छत गिरने से चार घायल

प्रतापगढ़। रेलवे स्टेषन रोड पर मोहम्मद अरमान के घर के ऊपरी भाग में मरम्मत हो रही थी। एक राजगीर लगा हुआ था। इतने में छत भरभराकर गिर गई जिससे चार लोग घायल हो गये। घायलों में बाबा मिस्त्री (65), शाहरुख (26), आयत (11) व उमरा फातिमा (16) वर्ष शामिल हैं। चारों को उपचार के लिये प्रताप बहादुर चिकित्सालय में भर्ती किया गया है। घर की छत गिरने से आसपास के लोग जमा हो गये। किसी तरह सभी को जिला चिकित्सालय ले जाया गया।

मोदी सरकार का अगले लोकसभा चुनाव में सूपड़ा साफ होना तय: प्रमोद तिवारी

क्षेत्र के लोगों की सुनी समस्याएं

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता, स्टीरिंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा है कि जनता भाजपा के राज में भ्रष्टाचार तथा अराजकता के माहौल से पूरी तरह तंग हो चुकी है। उन्होने कहा कि अब तो विपक्ष नही बल्कि भाजपा के नेतृत्व पर आरएसएस तक पीएम मोदी को लेकर अविश्वनीयता का बड़ा सवाल खड़ा कर रही है।

शनिवार को रामपुर खास के एक दिवसीय दौरे पर लालगंज पहुंचे राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने मीडिया से रूबरू होते हुए आरएसएस के मुखपत्र ऑर्गनाइजर के जारिए भाजपा को मिली हालिया नसीहत का जिक्र करते हुए कहा कि आरएसएस ने भाजपा को कर्नाटक में कांग्रेस के प्रबंधन से मिली कांग्रेस की जीत तथा कर्नाटक में भ्रष्टाचार के मुद्दे पर बीजेपी को मिली पराजय को लेकर जिस तरह से मोदी सरकार को चेतावनी दी है। बकौल प्रमोद तिवारी उससे यह साफ जाहिर है कि देश में भाजपा और पीएम मोदी का ग्राफ खत्म होने के कगार पर है। दौरे पर आये प्रमोद तिवारी का चिलचिलाती धूप के बावजूद लालगंज नगर पंचायत के संगम चैराहे सीमा पर कार्यकताओं के द्वारा जोश व उत्साह के बीच स्वागत भी हुआ दिखा। लालगंज चैक पर व्यापारियों से भी मुलाकात के दौरान भीषण विद्युत कटौती को लेकर परेशान लोगों के बीच प्रमोद तिवारी ने सरकार के बिजली कुप्रबंधन पर भी कड़ा हमला बोला। इस मौके पर प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह, मीडिया प्रभारी ज्ञान प्रकाश शुक्ल, सामाजसेवी सुधीर मिश्रा, सभासद जावेद, सदाशिव यादव, छोटेलाल सरोज, मुन्ना जायसवाल, व्रजघोष ओझा, सुधाकर पाण्डेय, दृगपाल यादव, हरिशचन्द्र अग्रहरि, संजय सिंह, मुरलीधर तिवारी, महानंद पाण्डेय आदि रहे।

मुख्यमंत्री के प्रस्तावित कार्यक्रम को लेकर एडीजी, मण्डलायुक्त एवं आईजी ने किया निरीक्षण

कार्यक्रम स्थल व हेलीपैड पर पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था कराने के दिये निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के जनपद में 12 जून को प्रस्तावित कार्यक्रम के दृष्टिगत एडीजी प्रयागराज भानु भाष्कर, मण्डलायुक्त प्रयागराज विजय विश्वास पन्त, आईजी प्रयागराज चन्द्र प्रकाश ने जिलाधिकारी प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव, पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल, मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया के साथ मुख्यमंत्री कार्यक्रम स्थल बनवीरकांछ में व्यवस्थाओं का जायजा लिया और मौके पर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

एडीजी ने मुख्यमंत्री जी के आगमन हेतु बनाये जा रहे हेलीपैड का निरीक्षण किया तो हेलीपैड बनाने में कच्ची ईंटों का उपयोग किया जा रहा था जिस पर उन्होने नाराजगी व्यक्त करते हुये कहा कि हेलीपैड पर पक्की ईट का प्रयोग किया जाये और हेलीपैड स्थल के आस-पास धूल न उड़े इसके लिये गोबर और भूसा को मिलाकर लेप लगाया जाये और हेलीपैड पर रैम्प भी बनाये जायें। हेलीपेड गुणवत्तायुक्त बनाया जाये जिससे हेलीकाप्टर के लैडिंग के वक्त कोई दिक्कत न हो। उन्होने कार्यक्रम स्थल पर एलईडी टीवी लगाये जाने के निर्देश दिये। एडीजी ने मुख्यमंत्री के कार्यक्रम के तहत प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सुखपालनगर का भी निरीक्षण किया और निर्देशित किया कि पीएचसी पर जो भी कमियां है उसे दुरूस्त करा दिया जाये एवं आवश्यक दवाओं की उपलब्धता भी सुनिश्चित कर ली जाये। पुलिस अधीक्षक को निर्देशित किया गया कि कार्यक्रम स्थल व हेलीपैड पर पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था सहित यातायात की व्यवस्था भी सुचारू रूप बनाये रखें जिससे आवागमन बाधित न हो। मण्डलायुक्त प्रयागराज ने निर्देशित किया कि विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को लाने व ले जाने एवं कार्यक्रम स्थल पर उनके बैठने की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करें। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा, मुख्य राजस्व अधिकारी राकेश गुप्ता सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण करते एडीजी, मण्डलायुक्त व आईजी।

जल निकासी की समस्या को लेकर नगर अध्यक्ष ने किया वार्ड का निरीक्षण

रामगंज नगर पंचायत के वार्ड में जल निकासी की समस्या से जूझ रहे नागरिक

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। नवसृजित नगर पंचायत रामगंज में नगर के नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने वार्ड के सभासदों के साथ जल निकासी की समस्या पर मुखर होते हुए वार्डो का निरीक्षण किया और जल निकासी की समस्या का निराकरण करने के लिए रणनीति बनाई। इस दौरान उनके साथ सभासदों के साथ अन्य लोग मौजूद रहे।

पट्टी तहसील क्षेत्र के नवसृजित रामगंज नगर पंचायत में इस बार राकेश कुमार सिंह को मतदाताओं ने अपना नगर अध्यक्ष चुना। जनता की आकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिए प्रतिबद्ध राकेश कुमार सिंह अपने कार्यकताओं तथा वार्ड के सभासदों के साथ वार्ड नंबर 12 में पहुंचे और वहां पर जल निकासी की समस्या के निराकरण के संबंध में पूर्ण रुप से रणनीति बनाई और कहा कि जल्द ही वार्ड में जलभराव की समस्या से निजात दिलाते हुए जल निकासी की जाएगी। नगर अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह से इस संबंध में बात करने पर उन्होंने बताया कि वार्ड नंबर 12 में जलभराव एक बड़ी समस्या है, मानसून आते ही जलभराव की समस्या से लोग जूझने लगते हैं। नालों की साफ-सफाई के लिए अंतिम तलहटी तक सफाई अभियान चलाया जाएगा। सफाई कर्मचारियों के साथ आगामी बरसात में लोगों को समस्या से जूझना न पड़े इसके लिए राजनीति बनाकर लोगों को इससे निजात दिलाया जाएगा उनके साथ इस दौरान सभी सभासदों के साथ भाजपा नेता राम उजागिर सिंह भी मौजूद रहे।

वार्ड का निरीक्षण करते नगर अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह।

नगर की संमस्याओं का त्वरित निस्तारण हमारी प्राथमिकताः अशोक जायसवाल

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। नगर के नवनिर्वाचित नगर अध्यक्ष अशोक जायसवाल पट्टी की तमाम समस्याओं को समाप्त करने तथा लोगों को सहूलियत देने के लिए प्रतिबद्ध दिखाई दे रहे हैं। वह पट्टी नगर की मुख्य समस्याओं पर इस समय प्रहार करके उसके निराकरण के लिए प्रतिबद्ध है, जिसके लिए वह नगर में लोकप्रिय हो रहे हैं। वहीं लोगों के बीच में पहुंचकर उनका सुख-दुख में शामिल होकर तथा हालचाल ले रहे हैं जिसकी चर्चा पट्टी नगर सहित आसपास के क्षेत्रों में भी है।

पट्टी नगर अध्यक्ष अशोक जायसवाल लोगों की आकांक्षाओं को मूर्त रूप देने के लिए दिन रात परिश्रम कर रहे हैं पहले उन्होंने इसके लिए पट्टी तहसील के पास स्थित वाटर एटीएम को दुरुस्त कराया और लोगों को सुलभ तथा स्वच्छ जल उपलब्ध होने लगा तो वहीं अब वह अवैध टेम्पो स्टैंड हटाने के लिए मुहिम छेड़ दिया है जिसके कारण राहगीरों तथा नगर वासियों को जाम की समस्या से जूझना पड़ता था। नगर पंचायत बोर्ड की पहली बैठक में जाम की समस्या पर मुखर होते हुए नगर अध्यक्ष अशोक जायसवाल ने इसके लिए अभियान तेज कर दिया है उन्होंने बताया कि पट्टी चैक पर टेंपो स्टैंड हटाकर मेला ग्राउंड में किया जाएगा।

अधिकारी भी जुटे हैं भीड़ ले जाने की व्यवस्था में

प्रतापगढ़। इस भीषण गर्मी में जब प्रतापगढ़ का तापमान 44 डिग्री पहुंच गया है, ऐसी विकट गर्मी में 12 जून को प्रदेष के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आगमन पर नेताओं के साथ-साथ अधिकारियों को भी भीड़ जुटाने की चिंता है। इसी के तहत जिला विद्यालय निरीक्षक ने चुनाव की तरह कुछ बडे.स्कूलों के बसों के मालिकों को मैसेज भेजकर गाड़ी के सम्बन्ध में एआरटीओ से बात करने का फरमान जारी किया है। इस समय सभी स्कूलों में गर्मी की छुट्टी है। स्कूल के बसों के चालक व परिचालक भी छुट्टी पर गये हैं, ऐसे में स्कूल संचालकों को आदेष का पालन करने में दिक्कत आ रही है। एक स्कूल ने तो यह भी आरोप लगाया कि कटरा के दो स्कूलों से कभी बसें ली ही नहीं जाती। इस तरह पक्षपातपूर्ण ढंग से केवल वही स्कूल के संचालक बस देने को राजी होते हैं जिनकी पहुंच न तो राजनैतिक है और न ही प्रषासनिक। कुछ लोगों ने यह भी कहा कि वाहवाही लूटने के लिये कुछ अधिकारी ऐसा आदेष जारी करते हैं जो स्कूल संचालकों के लिये परेषानी का सबब बना हुआ है।

खबर संक्षेप

शराब के साथ दो अभियुक्त किए गये गिरफ्तार

कौशाम्बी थाना मोहब्बतपुर पइसा पुलिस बल अभियुक्त बसन्त लाल पुत्र रामलाल गुप्ता निवासी उदहिन बुजुर्ग थाना मोहब्बतपुर पइसा जनपद कौशाम्बी को 15 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना कडाधाम पुलिस द्वारा अभियुक्त रामबरन पुत्र सैकू लाल निवासी अलीपुरजीता थाना कडाधाम को 18 लीटर अवैध कच्ची शराब मय शराब बनाने वाले उपकरण के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

कौशाम्बी जनपद में चलाये जा रहे यातायात से सम्बन्धित अभियान के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्न थानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एवं चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमें यातायात नियमों का उल्लघन करने वाले 93 वाहनों का ई-चालान किया गया।

सड़क किनारे खड़े दो बच्चों को ट्रैक्टर ने कुचला दोनों बच्चों की दर्दनाक मौत

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के नगर पालिका भरवारी के बिसारा टावर के पास सड़क किनारे दो छोटे बच्चे खड़े थे तेज गति से जा रहा अनियंत्रित ओवरलोड ट्रैक्टर ने दोनों बच्चों को कुचल दिया है जिससे दोनों बच्चों की मौके पर द6र्दनाक मौत हो गई है सूचना पाकर मौके पर तमाम ग्रामीण पहुंचे हैं मामले की सूचना पुलिस को दी गई है मौके पर पहुंची पुलिस ने अपनी परंपरा के अनुसार दोनों बच्चों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है जैसे ही मामले की जानकारी मृतक के परिजनों को मिली है रोते बिलखते मृतक के परिजन भी पहुंच गए हैं मौके पर कोहराम मचा हुआ है घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के परसरा गांव निवासी मयंक उम्र लगभग 4 वर्ष पुत्र दिलीप अपने रिश्तेदार नीरज उम्र लगभग 10 वर्ष पुत्र प्रेमचंद निवासी गुवारा थाना करारी के साथ बिसारा गांव रिश्तेदारी में आया था जहां वह दोनों सड़क किनारे खड़े थे इसी बीच तेज गति से आ रहा अनियंत्रित ट्रैक्टर ने दोनों बच्चों को कुचल दिया है जिससे दोनों बच्चों की घटनास्थल पर मौत हो गई है दो बच्चों की एक साथ मौत की जानकारी मिलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ पहुंच गई जिसने भी हादसे को सुना वह अचंभित रह गया मामले की सूचना मिलते ही मृतक बच्चों के परिजन और रिश्तेदार रोते बिलखते घटनास्थल पर पहुंच गए हैं मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई है मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक बच्चों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटना स्थल पर कोहराम मचा हुआ है।

आमने सामने की टक्कर में बाइक सवार घायल, भेजे गए अस्पताल

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली के अझुवा चौकी अंतर्गत अम्बर ढाबा के निकट राष्ट्रीय राजमार्ग पर दो बाइक सवार आमने सामने टकराकर सड़क पर गिर गए दोनों लहूलुहान हो गए मौके पर पहुंचे राहगीरों ने चौकी पुलिस को सूचित कर एम्बुलेंस के माध्यम से अस्पताल भेज दिया गम्भीर घायल बाइक सवार सैनी कोतवाली के लोहदा गांव निवासी सर्वेश कुमार पुत्र रामबाबू बताया जा रहा है दूसरे घायल युवक रोहित पुत्र जगमोहन निवासी भैरम पुर सैनी का बताया जा रहा है मौके पर पहुंची चौकी पुलिस ने परिजनों को खबर कर छानबीन में जुट गई है।

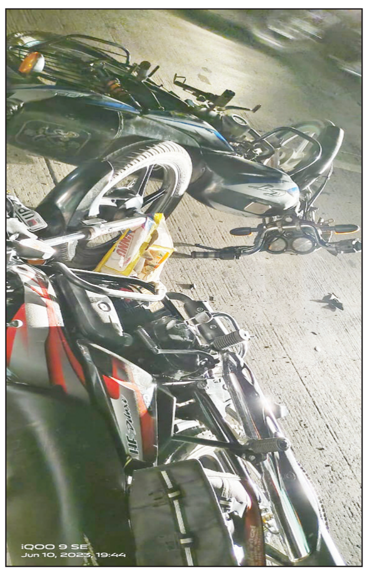

गायब बालिका को पुलिस ने किया बरामद

करारी कौशाम्बी करारी थाना के एक गांव से कुछ दिनों पूर्व एक बालिका गायब हो गई थी परिजनों ने मामले की सूचना पुलिस को दी थी पुलिस बालिका को खोजने में लगी थी करारी थाना के उपनिरीक्षक विश्वनाथ पाल आरक्षी रश्मि यादव कांस्टेबल अनिल कुमार यादव ने गायब बालिका को 09 जून को करारी थाना क्षेत्र के हिसाब पुर से सकुशल बरामद कर लिया है बालिका के गायब होने के मामले में पुलिस पूछताछ कर रही है और मामले की जानकारी बालिका के परिजनों को पुलिस ने दे दी है बालिका के बरामद होने की जानकारी मिलते ही परिजन भी थाने पहुंच गए हैं बालिका के गायब होने के मामले में करारी थाना में मुअ अ सं 112/23 पंजीकृत था गायब बालिका को बरामद करने के बाद पुलिस विधिक कार्यवाही कर रही है।

दुष्कर्म का वांछित गिरफ्तार

कौशाम्बी जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना करारी पुलिस बल द्वारा पॉक्सो एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त हिमांशू चौधरी पुत्र सुग्गन लाल निवासी हिसामपुर थाना करारी को हिसामपुर भट्ठा के पास से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

न्यूज झरोखा

भैरव बाबा के स्थान पर हजारों लोगो ने ग्रहण किया प्रसाद

कोखराज कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी के वार्ड नंबर 7 में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भैरव बाबा के स्थान पर विद्याल भंडार आयोजित किया गया इस भंडारे में इलाके के हजारों लोगों ने भैरव बाबा का प्रसाद ग्रहण किया भंडारे के अवसर पर रात्रि जागरण और जवाबी बिरहा का आयोजन भी कलाकारों द्वारा किया गया था जिसमें इलाके के तमाम महिला पुरुष कार्यक्रम का लुफ्त उठाने पहुंचे आयोजक अध्यक्षता शिव नरेश ,आयोजक राम बहादुर उर्फ दुबरी पटेल , गुड्डन तिवारी,मनोज विश्वकर्मा,पिंटू पटेल, ग्राम झंझागढ़ कार्यकर्ता,कमलेश जीतेंद्र,सूरज राज कुमार आदि रात्रि जागरण में जबाबी विरहा का भी प्रोग्राम आयोजित किया गया है भंडारे में लगभग 6 हजार लोगों को भोजन की कराने का कार्यक्रम आयोजित किया गया है मौके पर भरवारी नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि आशीष कुमार पासी भी भंडारे में पहुंचे और प्रसाद ग्रहण किया

एलआईयू कार्यालय भवन निर्माण हेतु एसपी ने किया भूमिपूजन

कौशाम्बी। एलआईयू कार्यालय जल्द ही अपने भवन से सुसज्जित होगा शासन से अनुमति मिलने के बाद पुलिस अधीक्षक ने भूमि पूजन कर निर्माण की आधारशिला रख दिया है पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी बृजेश श्रीवास्तव एवं अपर पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी द्वारा प्रस्तावित नए एलआईयू कार्यालय निर्माण हेतु चिन्हित भूमि का विधि विधान से वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ भूमि पूजन किया इस दौरान क्षेत्राधिकारी अपराध सहित अन्य पुलिस अधिकारी कर्मचारीगण भी उपस्थित रहे।

पुलिस लाइन में एसपी ने जवानों को खिलाया भोजन

कौशांबी। जनपद मे पुलिस जवानों द्वारा मुस्तैदी के साथ ड्यूटी कर विगत त्यौहारों एवं नगर निकाय चुनाव को सकुशल सम्पन्न कराया गया जिसके उपलक्ष्य में पुलिस लाइन में परंपरागत बड़ाखाना का आयोजन किया गया जिसमें समस्त थानों पुलिस कार्यालय की सभी शाखाओं पुलिस लाइन यातायात एवं फायर स्टेशन में नियुक्त अधिकारियों कर्मचारियों को सपरिवार निमंत्रित किया गया साथ ही प्रशासनिक एवं ज्यूडिशनल अधिकारीगण भी सम्मिलित हुए आयोजन के दौरान सभी अधिकारियों कर्मचारियों ने मिलकर भोजन किया इस दौरान पुलिस अधीक्षक एवं अपर पुलिस अधीक्षक सहित समस्त राजपत्रित अधिकारियों द्वारा प्रेम पूर्वक पुलिस के जवानों को भोजन परोसा गया।

जनभागीदारी जी 20 के तहत निबंध प्रतियोगिता कार्यक्रम कराया गया

कौशाम्बी जन शिक्षण संस्थान कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 10 जून को जनभागीदारी जी 20 के तहत प्रशिक्षण केंद्र आलम चंद विकासखंड मूरतगंज में लाभार्थियों द्वारा निबंध प्रतियोगिता कार्यक्रम कराया गया इस कार्यक्रम में जन शिक्षण संस्थान के निर्देशक श्री राजकुमार पांडे ने 1 जून 2023 से 15 जून 2023 तक जनभागीदारी ॠ20 के तहत विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में सभी प्रशिक्षणार्थियों को बताएं तथा जनभागीदारी जी 20 के महत्व को समझाएं इस कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षणार्थियों को जनभागीदारी जी 20 पर निबंध लिखने को दिया गया था जिसमें सभी प्रशिक्षणार्थियों ने जनभागीदारी जी 20 के बारे में लिखे हैं इस कार्यक्रम में संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी संजय सिंह सहायक कार्यक्रम अधिकारी विजेंद्र मिश्रा राजू शुक्ला अनुदेशिका शिल्पी गुप्ता साक्षी त्रिपाठी खुशी रोजी मीनू सानिया गीता कमला लगभग 35 लाभार्थी मौजूद रहे।

बीमारी से परेशान बालिका ने लगाई कुएं में छलांग, हुई मौत

कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मलाक मोहद्दीन पुर गांव की एक 14 वर्षीय रेखा पुत्री स्व भारत लाल पासी ने गांव से बाहर बीरान पड़े कुएं में छलांग लगा कर आत्महत्या कर लिया। जिसकी सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची संदीपन घाट थाना की पुलिस व फायर ब्रिगेड के साथ साथ ग्रामीणों की मदद से लगभग 3 घण्टे की कड़ी मशक्कत के बाद लडकी का शव कुएं से बहार निकले गौरतलब है कि रेखा परिवार की इकलौती बेटी थी जिसके तीन भाई है और मृतक रेखा इकलौती और सबसे छोटी थी। कुछ सालो पहले परिवार से पिता का भी साया उठ गया था। चार बच्चो का लालन पालन स्व भारत लाल की पत्नी करती थी । आपको बता दें कि मोनू उम्र 22 बिरेंद्र 20 सुरेंद्र 18 रेखा उम्र 14 बताई जा रही है। कथित तौर पर चर्चा है कि रेखा किसी बात से अपने घर वालो से नाराज थी एक यह भी कारण बताया जा रहा है आत्महत्या का। खैर ये सब जांच के विषय है मामले को गंभीरता से लेते हुए। घटना की सुचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

निरोधात्मक कार्यवाही में 16 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना पश्चिम शरीरा से चार थाना महेवाघाट से दो थाना कौशाम्बी से एक थाना सराय अकिल से तीन थाना पिपरी से दो थाना चरवा से एक थाना सैनी से एक थाना कड़ाधाम से एक कुल 16 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

अधिकारियों ने ब्लॉक को बना दिया शराब का अड्डा

विकास खंड कार्यालय सरसवा में चला जमकर शराब पार्टी का दौर

कौशांबी। विकासखंड सरसावा कार्यालय को ब्लाक के अधिकारियों ने ही शराब खाना बना दिया है कार्यालय परिसर में एक ग्राम विकास अधिकारी और एक ग्राम पंचायत अधिकारी शराब पी रहे हैं बताया जाता है कि ब्लाक परिसर में आयोजित इस शराब पार्टी में कई अन्य लोग भी शामिल है मामले का वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है खंड विकास अधिकारी कार्यालय सरसावा में शराब पीने वाले दोनों अधिकारियों पर खंड विकास अधिकारी सरसावा ने अभी तक कार्यवाही नहीं की है बताया जाता है कि शराब पीने वालों में नवीन सिंह और आदित्य सिंह शामिल हैं हालांकि इसकी पुष्टि नहीं की जा रही है इलाके के लोगों ने शराब पीने के मामले में जिला अधिकारी और मुख्य विकास अधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए ब्लाक कार्यालय को शराब घर बनाने वाले दोनों अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग की है।

अग्निकांड में दलित की पूरी गृहस्थी जलकर खाक

अखंड भारत संदेश

घर से बाहर भागकर दलित परिवार के लोगो ने बचाई जान, विभागीय अधिकारी और समाज के ठेकेदारों ने नहीं बढ़ाया दलित की मदद को हाथ

टेढ़ी मोड़ कौशांबी। सिराथू तहसील के अंतर्गत अंदावा ग्राम पंचायत के सीतलपुर गांव में घसीटे सरोज की झोपड़ी में शनिवार की सुबह आग लग गयी तेज लपट में दलित की झोपड़ी और उसमें रखा गृहस्थी का पूरा सामान जलकर खाक हो गया है जिससे दलित परिवार के सामने रोजी-रोटी की समस्या आ गई है दलित परिवार दाने-दाने को मोहताज है और तपन भरी धूप में खुले आसमान के नीचे जीवन जीने को विवश है। जानकारी के मुताबिक ग्राम पंचायत अंदावा के मजरा सीतलपुर के घसीटे सरोज मथुरा के एक ईंट भट्ठे में काम करते हैं घर पर कोमल देवी उम्र 18 वर्ष, अक्षय उम्र 10 वर्ष सच्चया उम्र 7 वर्ष पुत्र पुत्री घसीटे सरोज घर में रहती है दिनांक10 मई की सुबह खाना बनाते समय छप्पर में आग लग गयी देखते देखते आग ने पूरे घर को आगोश में ले लिया परिवार को लोगों ने किसी तरह से बाहर भाग कर जान बचाई इस अग्निकांड में घर मे रक्खा 3 बोरी गेहूं एक बोरी चावल खाना बनाने की सामग्री कपड़े चारपाई बर्तन बिस्तर नगद रुपए आदि समान जलकर खाक हो गया ग्रामीणों की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया है वरना अन्य घरों में भी आग लग जाती। बताया जाता है कि घसीटे सरोज की पूरी जिंदगी की कमाई इस अग्नि कांड की घटना में जलकर खाक हो गया है परिवार के लोग खुले आसमान के नीचे तपन भरी धूप में जीवन यापन करने को विवश हैं अभी तक समाज के ठेकेदारों ने और अधिकारियों ने मदद को हाथ नहीं बढ़ाया है उनके परिवार के पास जीवन में कोई सहारा नहीं बचा है खबर लिखे जाने तक गरीब की मदद को जिम्मेदार अधिकारी और नेता मौके पर नहीं पहुंचे हैं।

थाना स्तर पर ही समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें सुनिश्चित : एसपी

अखंड भारत संदेश

पुलिस कार्यालय में एसपी ने फरियाद सुनकर अधीनस्थों को निस्तारण के दिए निर्देश

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा प्रतिदिन की भांति पुलिस कार्यालय में जनतादर्शन में जनसुनवाई कर जनसामान्य की समस्याओं को सुना गया तथा सम्बन्धित को दिये आवश्यक निर्देश पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा पुलिस कार्यालय में जनसुनवाई की गई इस दौरान पुलिस कार्यालय में आने वाले फरियादियों जनसामान्य की समस्याओं को गम्भीरता पूर्वक सुना गया तथा उनकी समस्याओं के समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के लिए सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए जिसमें पुलिस अधीक्षक द्वारा प्राप्त शिकायतों के सम्बन्ध में मौके पर जाकर शिकायतों की तत्काल, निष्पक्ष जांच कर विधिक निस्तारण सुनिश्चित करने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया तथा शिकायतकर्ता से समय-समय पर जनसामान्य की समस्याओं के निस्तारण के सम्बन्ध में

फीडबैक लिये जाने सम्बन्धी आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये इसी क्रम में पुलिस अधीक्षक द्वारा सभी थानों को सचेत किया गया कि जनसुनवाई महिला हेल्पडेस्क को और अधिक प्रभावशाली बनाये ताकि पीड़ित/शिकायतकर्ता को अनावश्यक रुप से अपने थाने से इतनी दूर पुलिस कार्यालय आने की आवश्यकता न हो, साथ ही सभी प्रभारी निरीक्षक थानाध्यक्ष को यह भी निर्देश दिये गये कि जिस समस्या का समाधान थाना स्तर से हो सकता है उनका समाधान थाना स्तर पर ही समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर कराना सुनिश्चित करें।

समाधान दिवस के अवसर पर सुनी गई जनशिकायतें

कौशाम्बी। थाना समाधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी कौशाम्बी व पुलिस अधीक्षक द्वारा थाना महेवाघाट एवं थाना पश्चिम शरीरा में जनशिकायतों को सुनकर कुछ का मौके पर निस्तारण किया गया तथा शेष के गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण हेतु समबन्धित को निर्देशित किया गया। साथ ही निर्देशित किया गया कि जमीन सम्बन्धित सभी प्रकरणों में पुलिस व राजस्व की टीमों द्वारा संयुक्त रूप से मौके पर जाकर प्रकरण का निस्तारण किया जाये जिससे फरियादियों को अलग-अलग भटकना ना पड़े व प्रकरणों का त्वरित व न्यायपूर्ण निस्तारण हो सकें। इसी क्रम मे अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा थाना चरवा में उपजिलाधिकारी सिराथू व क्षेत्राधिकारी सिराथू द्वारा थाना सैनी एवं थाना कोखराज में तथा क्षेत्राधिकारी चायल द्वारा थाना सराय अकिल में तथा जनपद के समस्त थानों पर सम्बन्धित अधिकारी द्वारा जनशिकायतों को सुनकर कुछ का मौके पर निस्तारण किया गया तथा शेष के गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण हेतु समबन्धित को अवगत कराया गया। जनपद में कुल 68 (47 भूमि विवाद व 21 अन्य विवाद पुलिस) प्राप्त प्रार्थना पत्रो में से 12 (07 भूमि विवाद व 05 अन्य विवाद पुलिस) का मौके पर निस्तारण किया गया तथा शेष शिकायतों के निस्तारण हेतु टीमों का गठन कर मौके पर रवाना किया गया।

गंदा पानी पीने को मजबूर भरवारी नगर पालिका क्षेत्र के लोग

भरवारी कौशांबी। नगर पालिका भरवारी के वार्ड केशव नगर मोहल्ले में पानी सप्लाई की पाइप लाईन लीकेज होने की वजह से पाइप लाइन में गंदा पानी आ रहा है कई बार लोगों ने पाइप लाइन ठीक कराए जाने का अनुरोध किया लेकिन नगरपालिका की लापरवाही से पाइप लाइन नहीं ठीक हो सकी और लगातार दूषित पानी का सप्लाई नगर पालिका कर रहा है गर्मी के दिनों में विभिन्न बीमारियां उत्पन्न होने का अंदेशा है उल्टी दस्त हैजा पेट दर्द आदि बीमारी से कई लोग बीमार भी हो चुके हैं गरीब वा मजलूम लोगो को नाली का गंदा पानी पीने को नगर पालिका परिषद भरवारी के लोग मजबूर कर रहे हैं। वही इसी मोहल्ले के धनाढ्य और राजनैतिक लोगो को आर ओ का पानी उपलब्ध हो जाता है या यह कहें कि को व्यक्ति घर से सम्पन्न है वह तो आर ओ के पानी का उपयोग खरीद कर या अपना जुगाड से कर अपना काम कर लेता है जिसके वजह से गरीब लोगों में नगर प्रशासन के प्रति आक्रोश व्याप्त है। यहां यह भी बताना अति आवश्यक है की समय रहते पाइप लाईन को चुस्त दुरुस्त नहीं कराए गया तो आने वाले समय में बरसात हो जाने की वजह से लोगों तक गंदा वा नाली का पानी पीने से संक्रामक बीमारी हैजा कालरा पीलिया आदि बीमारियां भयानक रूप में फैल सकती है बीते वर्ष भी नगर संक्रमण की चपेट में आ चुका है सभ्य समाज में रहने वाले जितेंद्र सिंह का कहना है की नव निर्वाचित अध्यक्षा कविता पासी से लोगों की बहुत सारी उम्मीद जागी है वैसे भी जबसे उन्होंने कार्यभार ग्रहण किए है तभी से प्रति दिन कठिन परिश्रम कर रही है साथ ही जहां भी कमियां नजर आ रही हैं उसको तत्काल समस्या का निदान करवा रही है मोहल्ले वासियों ने अध्यक्षा का ध्यान आकर्षित करते हुए यथा शीघ्र लीकेज पाईप लाईन को दुरूस्त करवाने और लोगों को पीने के लिए साफ सुथरा पानी उपलब्ध कराने की मांग की है।

व्यापार बंधु की बैठक में व्यापारियों ने विभिन्न समस्याओं से डीएम को कराया रूबरू

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा उदयन सभागार में जनपद स्तरीय व्यापार बन्धु समिति की बैठक की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने व्यापारियों की समस्याओं को सुना एवं सम्बन्धित अधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर तत्काल निस्तारित करने के निर्देश दियें।बैठक में बताया गया कि थाना पश्चिम शरीरा के बगल में लगे ट्रान्सफार्मर में पूर्व में कई बार आग लग गई है, जिससे व्यापारियों व राहगीरों को जान-माल का खतरा बना रहता है, जिस पर जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता, विद्युत एवं ई0ओ0 को मौके पर जाकर व्यापारियों के साथ बैठक कर सहमति बनाकर ट्रान्सफार्मर शिफ्ट कराने के निर्देश दियें। बैठक में देवीगंज व्यापार मण्डल द्वारा अवगत कराया गया कि मुख्य बाजार में 400 केवीए का ट्रान्सफार्मर है, जिससे हमेशा दुर्घटना की आशंका बनी रहती है, जिस पर अधिशासी अभियंता, विद्युत ने बताया कि

आवश्यक कार्यवाही की जा रहीं है। जिलाधिकारी ने ई0ओ0 सिराथू को सिराथू बाजार में मंझनपुर रोड पर सरकारी गेस्ट हाउस के बाहर बनकर तैयार शेष 04 दुकानों को भी नियमानुसार शीघ्र ही आवंटित कराने के निर्देश दियें। उन्होंने सभी ई0ओ0 को प्रत्येक माह व्यापारियों की सम्बन्धित उप जिलाधिकारी एवं क्षेत्राधिकारी के साथ बैठक कराकर स्थानीय समस्याओं को निस्तारित कराने के निर्देश दियें। बैठक में व्यापार मण्डल सिराथू द्वारा नगर पंचायत सिराथू में सरकारी जमीन पर खेल का मैदान बनाये जाने के मॉग पर बताया गया कि खेल के मैदान की पैमाइस के लिए उप जिलाधिकारी को पत्र प्रेषित कर आवश्यक कार्यवाही की जा रहीं है। बैठक में जिला व्यापार मण्डल द्वारा अवगत कराया गया कि मण्डी परिसर में पूर्व में जो दुकाने आवंटित की गई है उसकी रजिस्ट्री नहीं हो पायी है, इसकी जॉच कराकर आवश्यक कार्यवाही का अनुरोध किये जाने पर सचिव, मण्डी समिति ने बताया कि व्यापारियों द्वारा रजिस्ट्री नहीं करायी जा रही है, जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि सम्बन्धित व्यापारियों को नोटिस दिया जाय, तत्पश्चात जिन व्यापारियों द्वारा रजिस्ट्री नहीं करायी जा रहीं है उनके आवंटन निरस्त करने की कार्यवाही की जाय। बैठक में श्री पुष्पेन्द्र केसरवानी ने अवगत कराया कि सिराथू बाजार में कुछ स्ट्रीट लाइट खराब हैं व साफ-सफाई ठीक प्रकार से नहीं करायी जा रहीं है एवं जल निकासी की समस्या बनी हुई है, जिस पर जिलाधिकारी ने ई0ओ0 सिराथू को खराब स्ट्रीट लाइटों को तत्काल ठीक कराने, साफ-सफाई की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा जल निकासी के लिए विस्तृत कार्ययोजना बनाकर कार्यवाही सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें। बैठक में बताया गया कि मनौरी बाजार में कुछ विद्युत तार जर्जर अवस्था में हैं, जिस पर जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता विद्युत को जर्जर तारों को बदलवाने के निर्देश दियें। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण तथा प्रवेश केसरवानी सुधीर प्रमोद साहू पवन कुमार गौरी शंकर विकास गुप्ता धर्मेन्द्र केसरवानी रमन केसरवानी संदीप कुमार सहित अन्य उद्यमी एवं व्यापारीगण रहे।

ख्वाजा कड़क में औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये जाने के लिए निदेशक उद्योग ने दिए निर्देश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा उदयन सभागार में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने उद्यमियों की समस्याओं को सुना एवं सम्बन्धित अधिकारियों को शीघ्र निस्तारित करने के निर्देश दियें। बैठक में उपायुक्त उद्योग एस0 सिद्दीकी ने बताया कि निवेश मित्र पोर्टल पर कुल 395 प्रकरण प्राप्त हुए है, जिसमें से 34 प्रकरण विभिन्न विभागों के स्तर पर लम्बित है। श्रम विभाग के 06, खाद्य एवं प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड के-07, खाद्य एवं औषधि विभाग के-08, कृषि विभाग के-10 एवं आबकारी विभाग के-03 सम्मिलित हैं, जिस पर जिलाधिकारी ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर प्रकरण को शीघ्र निस्तारित करने के निर्देश दिये। बैठक में उपायुक्त उद्योग ने बताया कि एम0वाई0एस0वाई0 योजना के तहत 67 लक्ष्य के सापेक्ष 10 तथा ओडी0ओ0पी0 योजनान्तर्गत 21 लक्ष्य के सापेक्ष 04 आवेदन बैंको द्वारा

स्वीकृत हो चुके हैं, जिस पर जिलाधिकारी ने अग्रिम आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। बैठक में उपायुक्त उद्योग ने गौसपुर टिकरी एवं भेलखा में नये औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये जाने के सम्बन्ध में अब तक की गई कार्यवाही की जानकारी देते हुए बताया कि मुख्य कार्यपालक अधिकारी यू0पी0सीडा, कानपुर एवं क्षेत्रीय प्रबन्धक यू0पी0सीडा, प्रयागराज को भूमि अधिग्रहण के सम्बन्ध में पत्र प्रेषित कर दिया गया है, जिस पर जिलाधिकारी ने प्रभावी पैरवी कर अग्रिम कार्यवाही कराने के निर्देश दियें। बैठक में उपायुक्त उद्योग ने बताया गया कि तहसील सिराथू के अन्तर्गत ग्राम-सुल्तानपुर ख्वाजा कड़क में अवस्थित भूमि पर औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये जाने के लिए आयुक्त एवं निदेशक, उद्योग द्वारा निर्देश दिये गये हैं कि प्रस्तावित भूमि को नियमानुसार राजस्व अभिलेख में उद्योग विभाग के नाम अमल दरामद कराकर प्रमाणित नकल खतौनी उपलब्ध करायी जाय, जिस पर जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी के साथ समन्वय कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें। बैठक में बताया गया कि ग्लोवल इन्वेस्टर्स समिट-2023 के तहत श्री रमेश अग्रहरि ने अपने प्रस्तावित प्रोजेक्ट भूमि के ऊपर से जाने वाली विद्युत लाइन को शिफ्ट कराने का अनुरोध किया है, जिस पर जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता विद्युत को इस माह तक विद्युत लाइन को शिफ्ट कराने के निर्देश दियें। जिलाधिकारी ने सभी उद्यमियों एवं व्यापारियों से कहा कि ग्लोवल इन्वेस्टर्स समिट-2023 के तहत प्रस्तावित प्रोजेक्ट से सम्बन्धित यथा-भूमि कनवर्जन आदि कोई समस्या आती है तो उन्हें अवगत कराया जाय, तत्काल निस्तारण कराया जायेंगा।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण तथा प्रवेश केसरवानी सुधीर प्रमोद साहू पवन कुमार गौरी शंकर विकास गुप्ता धर्मेन्द्र केसरवानी रमन केसरवानी संदीप कुमार सहित अन्य उद्यमी एवं व्यापारीगण उपस्थित रहें।

संपादकीय

बालासोर तिहरे रेल हादसे से हम क्या सीखेंगे?

-जगदीश रत्तनानी

पुराने लोगों, पुरानी चीजों, परंपराओं के लिए एक संदिग्ध तिरस्कार है और नए के लिए आकर्षण तथा उत्सुकता है जो असमान रूप से बढ़ रहे देश की कई वास्तविकताओं की उपेक्षा करता है। भारत के भविष्य को एक ऐसे विकास मॉडल की आवश्यकता होगी जो इस मॉडल से बहुत अलग है जिसे पाने के लिए हम एक्सीलेटर दबा रहे हैं जबकि इस गति पर ब्रेक लगाने का समय आ गया है। 2 जून को उड़ीसा के बालासोर में तिहरी ट्रेन दुर्घटना के सदमे और भयावहता से भारत धीरे-धीरे उबर रहा है। इस हादसे में 278 लोग मारे गए हैं और 1,000 से अधिक लोग घायल हो गए हैं। आपदा के कारण या कारणों की जांच शुरू हो रही है जिसके संदर्भ में देश को सरकार से कु छ कठिन सवाल पूछने चाहिए जो शुरू तो रेलवे से होंगे लेकिन सिर्फ रेलवे तक समाप्त नहीं हो सकते हैं। ये सवाल उस विचार, उद्देश्य और वास्तव में विकास के दर्शन के बारे में पूछने के एक व्यापक कैनवास तक फैल जाएंगे जिसने एक छोर पर राजनीतिक पूंजी और उच्च तकनीक, विश्वस्तरीय बुलेट ट्रेन प्रौद्योगिकी में अन्य निवेश है तथा दूसरे छोर पर खराब रखरखाव, दुर्घटना-संभावित लगभग सुस्त बुनियादी ढांचा है। अधिकारियों ने कहा है कि यह हादसा सिंग्नलिंग सिस्टम में 'जानबूझकर छेड़छाड़' की वजह से हो सकता है। यह बयान घटना से ध्यान हटाने की एक त्वरित कार्रवाई हो सकती है। इस बयान की कांग्रेस अध्यक्ष तथा पूर्व रेल मंत्री मल्लिकार्जुन खड़गे ने उचित और जमकर आलोचना की है। उन्होंने महत्वपूर्ण सवालों का एक पूरा सेट ही सामने रखा है। खड़गे द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लिखा खुला पत्र एक बड़े दिशा निर्देशक दृष्टिकोण की ओर इशारा करता है जो भारतीय रेलवे की वर्तमान स्थिति की जड़ में है। इन रिपोर्टों में यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि रेलवे अधिकारियों का कहना है कि इस हादसे में उन्हें कुछ विशिष्ट संकेत मिले हैं इसलिए इस जांच में सीबीआई को शामिल किया गया है। रिपोर्टों के अनुसार उनका कहना है कि इस हादसे के कथित बड़ी सिग्नलिंग त्रुटि बिना किसी छेड़छाड़ के नहीं हो सकती थी इसलिए उन्होंने इस छेड़छाड़ की तलाश के लिए सीबीआई को शामिल किया है। रेलवे बोर्ड (परिचालन एवं कारोबार विकास) की सदस्य जया वर्मा सिन्हा ने रविवार को कहा, 'सिग्नल प्रणाली में बाहरी छेड़छाड़ हो सकती है।' विडंबना यह है कि 2 जून को ही 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन 2047 को लागू करने के लिए एक कार्य योजना तैयार करने पर केंद्रित' दो दिवसीय चिंतन शिविर समाप्त हुआ था और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इसकी अध्यक्षता की थी। इस चिंतन शिविर में रेलवे का पूरा शीर्ष नेतृत्व मौजूद था। शिविर में लगभग 400 लोग उपस्थित थे। चिंतन शिविर का उद्देश्य प्रति वर्ष अधिक ट्रैक (नई लाइन, जीसी और मल्टी-ट्रैकिंग), प्रति दिन उच्च लोडिंग, 50 प्रतिशत मार्गों पर 160 किमी प्रति घंटे की गति हासिल करना तथा शून्य परिणामी दुर्घटनाओं को प्राप्त करना व सीआरओ एवं एमआरओ में 90 फीसदी की कमी हासिल करने के लिए नए उपायों और तरीकों को खोजने पर विचार करना था। दो दिवसीय चिंतन शिविर में विभिन्न मुद्दों एवं नए भारत के निर्माण में रेलवे के योगदान को और बढ़ाने के बारे में विचार-विमर्श किया गया। रेलवे में सीआरओ और एमआरओ आम तौर पर मवेशियों तथा अतिक्रमण करने वाले व्यक्तियों के कुचलने के मामलों का उल्लेख करते हैं। यह सच है कि बैठक में सुरक्षा के मुद्दे पर भी चर्चा की गई। कहा जाता है कि मंत्री ने सुरक्षा और नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने पर जोर दिया है, लेकिन बैठक का जोर फैन्सी परियोजनाओं में भारी निवेश की ओर रहा। उदाहरण के लिए वित्त वर्ष 2023-24 के बजट में रेलवे को 2.40 लाख करोड़ रुपये का परिव्यय प्रदान किया गया था जो 2022-23 में दिए गए 1.40 लाख करोड़ रुपये से काफी अधिक था। यह एक दशक में नौ गुना उछाल था। वैसे इसका बड़ा हिस्सा वंदे भारत ट्रेनों की नई पाइपलाइन के विस्तार के लिए था जिसकी गति को अब भारत के आगे बढ़ने का प्रतीक बताया जा रहा है। वंदे भारत ट्रेनों में से पहली का उद्घाटन करते हुए मोदी ने कहा था- 'देश अब रुकने वाला नहीं है, देश ने अब अपनी गति पकड़ ली है। पूरा देश वंदे भारत की गति से आगे बढ़ रहा है और आगे ही बढ़ता रहेगा।' भारतीय रेलवे को निश्चित रूप से नई तकनीक, तेज ट्रेनों और अधिक सुविधाओं की आवश्यकता है परन्तु विकास की यह कहानी एक सिरे पर चिंताजनक है क्योंकि यह भारत के एक बड़े हिस्से को भी पीछे छोड़ देता है जहां ये निवेश नहीं पहुंचेंगे, जहां सेवाओं में सुधार नहीं होगा। कुछ ट्रेनें कभी भी अपने गंतव्य तक नहीं पहुंचेंगी क्योंकि वे पटरी से उतर गईं और उनमें सवार यात्रियों की मौत हो गई। प्रगति की दिशा में आगे बढ़ने वाले कदमों की आलोचना आवश्यक नहीं है लेकिन इस विकास मॉडल में विकास के तरीके और उद्देश्य पर महत्वपूर्ण सवाल उठाने जरुरी हैं। 'इंडिया शाइनिंग' की कहानी को विशाल बहुमत ने कभी पसंद नहीं किया क्योंकि विकास और स्मार्ट तकनीक तथा नई सेवाओं की पूरी कहानी इसी से जुड़ी है जो अभी भी धीमी हैं। यह 'इंडिया शाइनिंग' अभियान था जिसका मास्टरमाइंड भाजपा का अभिजात वर्ग और एक विज्ञापन एजेंसी थी। यह एक ऐसा अभियान था जिसके बारे में माना जाता है कि इसकी वजह से 2004 के चुनावों में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा को हार का सामना करना पड़ा था। हम एक ऐसे भारत में रहते हैं जहां शहरों में हवाई अड्डे चमक रहे हैं लेकिन इनसे केवल थोड़ी दूर स्थित रेलवे स्टेशनों का रखरखाव बहुत खराब है। बस सेवाओं का बुनियादी ढांचा तो और भी कमजोर है।

नशा तस्करी पर लगाम लगाने की जरूरत

सुनील कुमार महला

नशा नाश का प्रमुख कारण है। आज के समय नशा हमारे देश की जड़ों को लगातार खोखला कर रहा है। युवा पीढ़ी आज नशे के गर्त में डूबती चली जा रही है। इस संबंध में, कुछ समय पहले ही पंजाब हाइकोर्ट ने भी यह बात कही है कि नशे की तस्करी न सिर्फ व्यक्ति बल्कि समाज और फिर देश की अर्थव्यवस्था को भी नुकसान पहुंचा रही है। वास्तव में, नशे से देश की जड़ों को खोखला करने वालों से सख्ती से निपटना जरूरी हो गया है। आज भी विशेषकर पंजाब में नशाखोरी अपने चरम पर है। बताना चाहूंगा कि कुछ समय पहले पंजाब के सीएम भगवंत मान ने ट्वीट कर यह बात कही थी कि नशीले पदार्थों की तस्करी में शामिल किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा। होना भी यह चाहिए क्यों कि नशे से व्यक्ति के स्वास्थ्य की तो बबार्दी होती ही है,धन की बबार्दी के साथ ही समाज में नशाखोरी के कारण क्राइम भी बढ़ता है। आज क्राइम की घटनाओं में वृद्धि का एक प्रमुख कारण नशाखोरी को कहा जा सकता है। पंजाब ही नहीं राजस्थान के हनुमानगढ़, गंगानगर जिले में नशाखोरी का धंधा चल रहा है और नशा तस्कर जमकर चांदी कूट रहे हैं। आज आए दिन अखबारों की सुर्खियों में हमें यह पढ़ने को मिलता है कि हनुमानगढ़ और गंगानगर जिला मुख्यालय से लेकर गांव-गांव, ढाणी-ढाणी तक नशे और तस्करों की घुसपैठ हो चुकी है और आए दिन नशीली गोलियों, शराब, अफीम, हेरोइन,चिट्टा,गांजा की खेप कहीं न कहीं पर पकड़ी जाती है। राजस्थान के गंगानगर, हनुमानगढ़ में तो सस्ते से लेकर महंगे से महंगा हर तरह का नशा कमोबेश आज प्रचलन में है। सच तो यह है कि नशे की गोलियां, चिट्टा, पोस्त, स्मैक, गांजा और हेरोइन का नशा युवाओं के बीच घुस चुका है। इसके अलावा हथकड़ और अवैध शराब भी इसमें शामिल है। नशे के लिए इन

नशीली चीजों की मांग बढ़ने से जिले में इनकी तस्करी भी तेजी से बढ़ रही है। शायद यही कारण भी है कि आज इन क्षेत्रों में विभिन्न नशा मुक्ति केंद्रों की संख्या भी यकायक बढ़ गई है। कुछ समय पहले इतने अधिक नशा मुक्ति केंद्र यहां मौजूद नहीं थे। आज एनडीपीएस एक्ट में अनेक लोग पुलिस द्वारा पकड़े जाते हैं लेकिन राजनीतिक हथकंडे, साम- दाम -दण्ड -भेद अपनाकर तस्कर, माफिया आसानी से छूट भी जाते हैं।पुलिस नशे के सौदागरों के खिलाफ कार्रवाई तो करती है लेकिन वो ज्यादातर मामलों में बड़ी मछलियों (बड़े तस्करों) तक नहीं पहुंच पाती है और ऐसे में नशा तस्करों का यह खेल रूकने के बजाए अनवरत चलता ही रहता है। बहरहाल, यहां यह उल्लेखनीय है कि अधिकांश लोगों का यह मानना हैं कि पंजाब ही इकलौता ऐसा राज्य है जहां हर तरह के नशे ने अपनी गहरी जड़ें जमा ली हैं और वहां की युवा पीढ़ी को नशे ने बर्बाद करके रख दिया है। काफी हद तक ये सही भी है और इसीलिए इस मुद्दे पर काफी समय पहले एक फिल्म भी बनी थी- "उड़ता पंजाब", ताकि लोग जान सकें कि भारत के एक अत्यंत समृद्ध माने जाने वाले सूबे की युवा पीढ़ी को नशा कैसे लगातार बर्बाद कर रहा है। जानकारी देना चाहूंगा कि बहुत बार न केवल हरियाणा और पंजाब में नशे की बड़ी खेप पकड़ी जाती है बल्कि अंतरराष्ट्रीय सीमा से भी बड़े पैमाने पर तस्करी होती है।यहां यह भी उल्लेखनीय है कि पंजाब और राजस्थान के अलावा उत्तर प्रदेश,केरल, बिहार, उत्तराखंड, झारखंड, कर्नाटक, हरियाणा के अंबाला, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा पूर्वोत्तर राज्यों में भी नशे का जाल फैला हुआ है। केरल और तमिलनाडु तो समुद्री इलाके वाले राज्य हैं और यहां नशा तस्कर इसलिए सक्रिय हैं, क्यों कि पाकिस्तान से लाए जाने वाले नशीले पदार्थों के ये सबसे महफूज केंद्र इसलिए हैं, क्यों कि इनकी समुद्री सीमाएं काफी लंबी हैं और पुलिस की पहुंच उन तक नहीं हो पाती है। जानकारी मिलती है कि पाकिस्तान के अलावा श्रीलंका और मालदीव से भी नशा तस्करी की जाती है। आदमी ही नहीं यहां तक कि नशा तस्करी में महिलाएं, लड़कियां तक शामिल हैं। वास्तव में, जल्द अमीर बनने के लालच में महिलाएं तस्करी कर रहीं हैं। यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि तस्करी करने के लिए नशा तस्कर विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। यहां तक कि बहुत बार तो नशा तस्करों की कार्यशैली से पुलिस तक हैरान रह जाती है। आज वेश बदलकर तस्करी की जाती है। यहां तक कि ईंटों में भरकर भी नशा बेचा जाता है। कोल्डड्रिंक की बोतलें भी नशा तस्करी में काम में ली जाती हैं। उल्लेखनीय है कि आजकल नशा तस्कर पैदल ही नशे की तस्करी करने को अधिक तरजीह दे रहे हैं। दरअसल, नशा तस्कर कम मात्रा में विभिन्न नशीले पदार्थ बेच रहे हैं ताकि पकड़े जाने पर भी पुलिस उनके मामले को व्यापारिक नजरिए से न देखें ,समझे। नशा तस्कर छापे के दौरान बरामदगी से बचने के लिए अपने घरों में नशीले पदार्थों की खेप छिपाने के बजाय, इसे छप्परों और खेतों में छिपाने को अधिक प्राथमिकता दे रहे हैं। टिफिन में छुपाकर भी तस्कर नशा तस्करी करते हैं।आजकल नशा तस्करों ने सप्लाई का अपना तरीका बदलते हुए लग्जरी गाड़ियों में नशा सप्लाई करना शुरू कर दिया है। इनमें होंडा सिटी, वर्ना जैसी महंगी व लक्जरी गाड़ियां तक तस्करों से मिली हैं। आज नशे की तस्करी पुलिस की आंखों में धूल झोंककर अफगानिस्तान, म्यांमार, नेपाल और ईरान द्वारा भारत में की जाती है। अखबारों से पता चलता है कि राजस्थान में जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर में भी अच्छी खासी संख्या में नशा तस्कर सक्रिय हैं। बार्डर इलाकों से यहां तस्करी की जाती है। मीडिया रिपोर्टों से पता चलता है कि कश्मीर घाटी में भी पाकिस्तान की तरफ से नशीले पदार्थों की तस्करी की जाती है। मीडिया के हवाले से यह भी जानकारी में आया है कि देशभर में नशे का कारोबार करने वाले माफिया, नशा तस्कर लोगों में नशे की लत को बढ़ाने के लिए खतरनाक प्रयोग तक करने लगे हैं। वे कोकीन, चरस, गांजा, अफीम को और अधिक नशीला बनाने के लिए इसमें विभिन्न केमिकल (जहर) मिलाकर नशेड़ियों की जान से खिलवाड़ कर रहे हैं। यह जहर चरस, अफीम जैसे नशीले पदार्थों में आसानी से मिल जाता है और देखने में पता भी नहीं चलता, जिसका फायदा तस्कर उठा रहे हैं। आज शराब को अधिक नशीली बनाने के लिए शराब में नशीले कैप्सूल तक मिलाए जाते हैं। शराब बनाने वाले लोग इसे और ज्यादा नशीला बनाने के लिए इसमें यूरिया, ऑक्सीटॉसिन और मेथेनॉल की मात्रा तक मिलाते हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि कच्चे आइटम्स को सड़ाने के लिए ऑक्सीटॉक्सिन का इस्तेमाल किया जाता है, जो कि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही खतरनाक साबित होता है। यहां यह भी बताता चलूं कि कच्ची या नकली या जहरीली शराब का कोई मानक तापमान नहीं होता और न ही इसे बनाते वक्त किसी भी नियम या मानकों का पालन किया जाता है।इसी वजह से इसमें नुकसानदायक मिथाइल और प्रोपाइल एल्कोहल जैसी चीजें मिला दी जाती हैं। मिथाइल एल्कोहल सीधे दिमाग और आंखों को नुकसान पहुंचाता है, मात्रा ज्यादा होने पर इंसान की मौत भी हो जाती है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि नशा तस्कर अपने स्वार्थ और फायदे के लिए यूरिया, आयोडेक्स, सांप, छिपकली, डीजल, मोबिल, गुड़ या शीरा और इस तरह की कई और चीजें मिलाकर जहरीली शराब बनाते हैं और उन्हें महंगे दामों पर बेचकर मुनाफा कमाते हैं। आजकल सोशल नेटवर्किंग साइट्स और ड्रोन के जरिए भी तस्करी की जाती है।हमारा पड़ौसी पाकिस्तान अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आ रहा है लगातार भारत में ड्रोन के जरिए नशीलें पदार्थों की खेप भेजी जा रही है। हालांकि बीएसएफ सतर्कता के साथ सभी साजिशों को नाकाम कर रही है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर तस्कर कोड वर्ड का इस्तेमाल कर तस्करी को अंजाम देते हैं। वर्ष 2021 में ऑनलाइन ड्रग तस्करी के 5,000 मामले सामने आए थे। नशीले पदार्थों के लेन-देन के लिए अब मुख्यधारा के चैट सिस्टम से परे खास सोशल टूल्स, सेकेंड-हैंड ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म, गेमिंग वेबसाइट और डार्क नेट का इस्तेमाल किया जा रहा है।

लिव-इन रिलेशनशिप पर फिर सवालिया निशान

अशोक भाटिया

बीते कुछ माह में लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाली प्रेम कहानियों का जैसे दर्दनाक तरीके से अंत और भरोसे की हत्या हुई, उसने लिव-इन रिलेशनशिप पर सवालिया निशान लगा दिए हैं। इन संबंधों में बर्बरता, वहशीपन और इंसानियत को शर्मसार कर देने की सारी मयार्दाएं टूट गई हैं। नृशंस तरह से हत्या के ऐसे मामले यह सोचने को मजबूर कर देते हैं कि कोई इंसान अपनी ही प्रेमिका के साथ ऐसी दरिंदगी कर सकता है। बीते साल दिल्ली के श्रद्धा हत्याकांड ने शुरू हुआ सिलसिला अब भले ही मुंबई की सरस्वती तक पहुंच गया हो, लेकिन बीच में कई ऐसी युवतियां हैं, जो लिव-इन रिलेशन के नाम पर भेंट चढ़ गई। मंगलवार को मुंबई में सामने आए सरस्वती हत्याकांड ने पूरे देश को झकझोर दिया। हाल ही में महाराष्ट्र के मुंबई में एक 56 साल के व्यक्ति मनोज साने ने 32 साल की युवती सरस्वती की हत्या कर दी। शुरूआती जानकारी आई कि बीते कुछ सालों से वे दोनों लिव-इन में रह रहे थे। हालांकि गिरफ्तार होने के बाद मनोज साने दावा कर रहा है कि वह उसकी बेटी जैसी थी। मनोज साने ने पहले सरस्वती की हत्या की और फिर शव को चेनसॉ (पेड़ काटने वाली मशीन) से 100 टुकड़ों में काट दिया। बदबू नहीं आए इसलिए वह शव के टुकड़ों को प्रेशर कुकर में उबालकर मिक्सर में पीस देता था और कुत्तों को खिला देता था। ये घटना 8 जून 2023 को सामने आई है। सरस्वती हत्याकांड ने अतीत के अन्य सभी हत्याकांड की याद ताजा कर दी, जिसमें कई मशहूर चर्चित हत्याकांड ने लोगों में गुस्सा भर दिया था। जिस तरह से इन लोगों ने लड़कियों के साथ बर्बरता की वो एक साधारण इंसान कभी करने की सोच भी नहीं सकता। गौरी श्रीवास्तव हत्याकांड,निक्की यादव हत्याकांड,मेघा

थोरवी हत्याकांड ,श्रद्धा वालकर हत्याकांड,रिबिका पहाड़िया हत्याकांड ऐसे कई उदाहारह है जिसमे दिल भर जाने पर लड़के ने अपने साथ लिव-इन रिलेशनशिप रह रही लड़की की बरबर्ता पुर्ण तरीके से हत्या कर दी । लगातार इस प्रकार के सनसनीखेज मामले सामने आने के बाद एक बार फिर से ये बहस छिड़ गई है कि लिव इन रिलेशनशिप में रहना लड़कियों के लिए कितना सुरक्षित रह गया है सवाल ये भी है कि ऐसे रिश्तों में हत्या की कई वारदातें होने के बाद भी पश्चिमी सभ्यता वाली इस संस्कृति का प्रचलन भारत में इतनी तेजी से आखिर क्यों बढ़ रहा है गौरतलब है कि बीते तीन महीने में दिल्ली में यह दूसरा ऐसा मामला है,जब लिव इन में रह रही अपनी पार्टनर की हत्या करके आरोपी ने उसके शव को फ्रिज में छुपाकर रख दिया। 23 साल की निक्की यादव का शव वेलेंटाइन डे यानी 14 फरवरी को उसके प्रेमी साहिल गहलोत के परिवार के एक रेस्तरां में फ्रिज के अंदर मिला था। निक्की और साहिल पिछले लंबे समय से लिव इन पार्टनर के तौर पर रह रहे थे। हत्या के आरोपी 24 वर्षीय साहिल गहलोत को हालांकि पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। बताते हैं कि साहिल के किसी दूसरी महिला से शादी करने को लेकर दोनों के बीच बीती 9 फरवरी को करीब तीन घंटे तक झगड़ा हुआ था। पुलिस के मुताबिक लड़ाई बढ़ने पर साहिल ने मोबाइल चार्जिंग केबल का इस्तेमाल कर निक्की का गला घोंट दिया। कत्ल करने के बाद वह निक्की के शव को कार में लेकर 10 फरवरी को हरियाणा स्थित अपने गांव मितराऊं पहुंचा। जहां अपने परिवार के एक ढाबे में शव को बड़े फ्रीजर में रखकर ठिकाने लगा दिया।हैरानी की बात ये है कि उसी दिन उसने दूसरी महिला से शादी भी रचा ली, जो रिश्ता उसके घरवालों ने तय किया था।कहते हैं कि कातिल कितना भी चतुर क्यों न हो लेकिन उसका जुर्म बहुत ज्यादा दिनों तक छुपा नहीं रहता और कानून के लंबे हाथ उसे अपने शिकंजे में कस ही लेते हैं। ऐसा ही इस मामले में भी हुआ लेकिन सवाल है कि ऐसी कितनी श्रद्धा। पिछले दो दशक में हमारे यहां जिस तेजी से लिव-इन रिलेशनशिप का कल्चर बढ़ रहा है, वो चौंकाने के साथ ही चिंताजनक भी है।इसलिये कि कुछ महानगरों को छोड़ दें,तो ऐसे रिश्ते को आज भी पूरी तरह से सामाजिक मान्यता नहीं मिली है,फिर भी नौकरी पेशा युवतियों में इस तरह की रिलेशनशिप को अपनाने का क्रेज तेजी से बढ़ा है।शायद इसकी बड़ी वजह ये है कि इसमें शादी के रिश्ते जैसा कोई बंधन नहीं है और दोनों को अपनी मर्जी से जीने की आजादी मिलती है।लेकिन इसी आजादी की शुरूआत झगड़े से होती है,जिसका अंजाम किसी बड़े जुर्म के साथ खत्म होता है लेकिन अक्सर इसका शिकार लड़की ही बनती है।साल 2018 में एक सर्वे हुआ था। इस सर्वे में शामिल 80 फीसदी लोगों ने लिव-इन रिलेशनशिप को किसी भी तरह से गलत न मानते हुए इसका खुलकर सपोर्ट किया था। इनमें से 26 प्रतिशत ने कहा था कि अगर मौका मिला, तो वो भी लिव-इन रिलेशन में रहना ही पसंद करेंगे। हालांकि फिलीपींस, फ्रांस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, स्कॉटलैंड, यूके, अमेरिका समेत दर्जन भर देशों में अलग-अलग कानूनी परिभाषाओं के अंतर्गत लिव इन रिलेशनशिप को मान्यता मिली हुई है।लेकिन हमारे देश में लिव-इन रिलेशनशिप को लेकर कोई कानून नहीं हैं। कानून बेशक नहीं है लेकिन फिर भी लिव-इन में रहना कोई अपराध भी नहीं है। सुप्रीम कोर्ट और अन्य अदालतों के फैसलों ने लिव-इन रिलेशनशिप को एक तरह से कानूनी मान्यता दे रखी है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसलों के जरिए ऐसे रिश्तों के कानूनी दर्जे को साफ किया है। साल 2006 के एक केस में फैसला देते हुए शीर्ष अदालत ने कहा था कि, "वयस्क होने के बाद व्यक्ति किसी के भी साथ रहने या शादी करने के लिए आजाद है।" उस फैसले के साथ ही लिव-इन रिलेशनशिप को कानूनी मान्यता मिल गई।

अदालत ने कहा था कि कुछ लोगों की नजर में अनैतिक माने जाने के बावजूद ऐसे रिश्ते में रहना कोई अपराध नहीं है।सुप्रीम कोर्ट ने अपने इसी फैसले का हवाला साल 2010 में अभिनेत्री खुशबू के प्री-मैरिटल सेक्स और लिव-इन रिलेशनशिप के संदर्भ और समर्थन में दिए गए बयान के मामले में भी दिया था।अगर लिवइन रिलेशन में बच्चा पैदा होता है, तो सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार बच्चे पर अधिकार ठीक उसी आधार पर तय होगा, जैसा कि शादी के कानून के अंतर्गत होता है। हालांकि, अगर कोई शादीशुदा व्यक्ति बिना तलाक लिए किसी के साथ लिव-इन में रहे तो ये गैर-कानूनी माना जाता है। लेकिन दो साल पहले पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने एक मामले में फैसला दिया था कि , शादीशुदा होने के बावजूद लिव-इन में रहना कोई जुर्म नहीं है और इससे भी फर्क नहीं पड़ता कि पुरुष ने तलाक की प्रक्रिया शुरू की है या नहीं। पर, सच तो ये है कि अभी भी समाज में लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले लोगों को अच्छी नजरों से नहीं देखा जाता है। ऐसे रिलेशन में रहने वाली लड़कियों के चरित्र पर अक्सर सवाल उठाए जाते हैं।

राजस्थान हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस शिव कुमार शर्मा कहते हैं कि इस व्यवस्था के लिए भी कानून तो होना ही चाहिए। विवाह की तरह लिव इन का भी रजिस्ट्रेशन होना चाहिए, संबंध तोड़ने में भी कानूनी प्रक्रिया से गुजरना आवश्यक बनाया जाना चाहिए।

एक स्टडी के मुताबिक भारत में लिव इन के सबसे ज्यादा मामले बेंगलुरू में हैं जो आईटी इंडस्ट्री का सबसे बड़ा हब है।देश के तमाम राज्यों के युवा वहां दर्जनों कंपनियों में कार्यरत हैं।दोनों के बीच प्रेम जब परवान चढ़ता है,तो फिर वे साथ में ही रहने लगते हैं।लिव इन रिलेशन की वजह से शादी से पहले सेक्स के मामले भी बढ़ रहे है।नतीजा ये है कि बिना शादी के गर्भवती होने के मामले भी बेहद तेजी से बढ़े हैं। ज्यादातर लिव इन रिलेशन में जब दोनों के बीच नहीं पटती है, तो लड़कियां अपने साथी के खिलाफ रेप केस करने की धमकियां भी देती हैं।

दुर्घटना के बाद शर्मनाक रवैया

2 जून को ओडिशा के बालासोर में हुई रेल दुर्घटना भारतीय रेलवे के इतिहास की भीषणतम दुर्घटनाओं में से एक है। अलग-अलग मार्ग से आ रही तीन ट्रेनों का एक-दूसरे से टकराना, माचिस की डिबियों की तरह रेल के डिब्बों का गिरना, लुढ़कना, पलटना कोई मामूली बात नहीं है। तकनीकी विकास के साथ दुर्घटनाओं की आशंकाएं क्षीण होनी चाहिए। आम जनता के लिए यातायात का यह सर्वसुलभ साधन पूरी तरह सुरक्षित भी होना चाहिए। लेकिन अमृतकाल वाले भारत में ऐसा नहीं है। क्योंकि तकनीकों के होते हुए भी उन पर खर्च करने की जगह सरकारी विज्ञापनों में सरकार के प्रचार में खर्च किया जा रहा है। सरकार यह समझ गई है कि इस देश की जनता इसी बात पर खुश है कि प्रधानमंत्री ट्रेन को हरी झंडी दिखाने की काबिलियत रखते हैं, फिर ट्रेन के सफर को उच्च स्तरीय और सुरक्षित बनाने की क्या जरूरत। कभी कोई बड़ी दुर्घटना हो जाए, तो उसमें भी राष्ट्रवाद के तत्व मिलाकर सरकार के लिए कवच कैसे बनाया जाए, यह भी सरकार का प्रचार तंत्र अच्छे से जानता है। इस वक्त देश में यही हो रहा है। बालासोर की दुर्घटना न भगवान की मर्जी थी, न प्राकृतिक हादसा थी, बल्कि यह विशुद्ध तौर पर मानवीय लापरवाही थी और इसकी सारी जवाबदेही सरकार की ही बनती है। गुजरात में जब मोरबी पुल टूटा, तब भी उसमें मानवीय लापरवाही ही सामने आई, लेकिन उस दुर्घटना पर भी लीपापोती कर दी गई। भाजपा उस दुर्घटना के बाद भी चुनाव जीत गई, तो फिर दोषियों को सजा और पीड़ितों को इंसाफ की उम्मीदें और मद्धम हो गईं। अब ओडिशा मामले में भी यही कहा जा रहा है कि दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। मगर अभी जिस तरह का रवैया सरकार, भाजपा नेताओं, पिठ्ठू मीडिया और भाजपा के प्रचार तंत्र का है, उसे देखकर नाउम्मीदी बढ़ती जा रही है और ऐसा लग नहीं रहा कि दोषियों को दंडित करने का कोई इरादा असल में है। 2 जून की रेल दुर्घटना के फौरन बाद रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से इस्तीफे की मांग विपक्ष की ओर से की जाने लगी। किसी भी हादसे या चूक के बाद ऐसी मांग स्वाभाविक है। हमेशा से भारत में ऐसा ही होता आया है। सरकारें या तो जिम्मेदार मंत्री का विभाग बदल देती हैं या उन्हें पद से हटने का इशारा कर देती हैं और अगर ऐसा नहीं हुआ तो कम से कम चुप्पी साध कर हालात संभालने में लग जाती हैं। लेकिन बालासोर प्रकरण में विपक्ष की इस्तीफे की मांग को अपराध की तरह खबरों में पेश किया जाने लगा। ममता बनर्जी, नीतीश कुमार, लालू प्रसाद आदि के काल में हुई रेल दुर्घटनाओं और हताहतों की गिनती के साथ ये कहा जाने लगा कि इन्होंने इस्तीफे नहीं दिए तो अब ये किस मुंह से इस्तीफे मांग रहे हैं। हालांकि इसमें भी उंगलियां फिर से भाजपा शासन पर ही उठ गईं, क्योंकि ममता बनर्जी और नीतीश कुमार एनडीए शासन में ही रेल मंत्री थे। केवल लालू प्रसाद यूपीए सरकार में रेल मंत्री थे। वैसे भी विपक्ष के जो नेता संसद में चुनकर आए हैं, वे भी जनप्रतिनिधि ही हैं और उन्हें हक है कि वे जनता की ओर से आवाज उठाएं। विपक्ष में होने का ये मतलब कतई नहीं है कि वे सत्तारुढ़ दल के बहुमत के आगे चुप लगाकर बैठ जाएं। बहरहाल, अश्विनी वैष्णव ने इस्तीफा तो नहीं दिया, बल्कि दुर्घटना स्थल पर किस तरह वे डटे रहकर राहत और मरम्मत का काम करवा रहे हैं, दिन-रात कितनी मेहनत कर रहे हैं, इसकी तस्वीरें और खबरें थोक में आने लगीं। खुद को पत्रकार कहने वालों ने यह सवाल करना जरूरी नहीं समझा कि पहले इतनी मेहनत और जिम्मेदारी का व्यवहार क्यों नहीं दिखाया गया। क्यों रेलवे की सुरक्षा मद में कटौती की गई, क्यों उन चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया, जिनमें दुर्घटनाओं की आशंकाएं जतलाई जा रही थीं। अश्विनी वैष्णव भी प्रचार और दृश्य में नाटकीयता का महत्व बखूबी पहचानते हैं। इसलिए हादसे के 51 घंटे बाद जब क्षतिग्रस्त मार्ग को सुधारकर वहां से पहली ट्रेन गुजारी गई, तो रेल मंत्री ने हाथ जोड़े, मीडिया और रेलवे अधिकारियों की मौजूदगी में भारत माता की जय और वंदेमातरम के नारे लगाए।

दो हजार की नोट वापसी : आरबीआई की साख पर सवाल

अरविन्द सरदाना

अर्थशास्त्र हमें समझाता है कि नोट के चलन के लिए कानूनी प्रावधान यानी 'लीगल टेंडर' होना एक आवश्यकता है। सबसे अहम बात है, मुद्रा या नोट पर जनता का विश्वास होना। हम मुद्रा का उपयोग कर पाते हैं, क्योंकि सभी इस बात पर विश्वास करते हैं कि कोई भी इसे अस्वीकार नहीं करेगा। कानून के डर से नहीं पर जनता के विश्वास से इनका चलन संभव होता है। हाल ही में 'रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया' (आरबीआई) ने दो हजार की नोटबंदी करके अपनी साख को कमजोर किया है। भारतीय मुद्रा के इस बड़े नोट को वापस लेने का आदेश तर्कसंगत नहीं होने से लगता है 'आरबीआई' खुद को अपने ही मकड़जाल में फंसा रही है। दो हजार के नोट को वापस लेने के आदेश में बुनियादी तौर पर कई खामियां हैं। यह देखा गया है कि पिछले कुछ वर्षों से 2000 के नोट का चलन कम हो रहा था और उसे धीरे-धीरे चलन से बाहर लाने की कोशिश की जा रही थी। यह 'आरबीआई' की 'क्लीन नोट' नीति के अंतर्गत उठाया गया कदम था। नतीजे में इस नोट की छपाई बंद कर दी गई और बैंकों द्वारा भी इसका उपयोग कम किया जाने लगा, साथ ही 500 के नोट की सप्लाई बढ़ा दी गई। इन कदमों के तहत दो हजार के नोटों की संख्या 6.7 लाख करोड़ से घटकर 3.6 लाख करोड़ यानि कुल मुद्रा की 10 प्रतिशत रह गई है। यदि बैंकों को आदेश देकर इन नोटों को वापस लेते तो वे अपने आप कुछ वर्षों में कम, शायद 2-3 प्रतिशत ही रह जाते। यह इस बात से समझ सकते हैं कि एक नोट चार-पांच वर्ष तक ठीक रहता है। उसके बाद वह खराब होने लगता है। दो हजार के अधिकांश नोट पुराने हैं और इन्हें बाहर किया जा रहा था। जनता में इनका चलन कम करना था तो एक्सचेंज का ऐलान किया जा सकता था, पर यह चार महीने का कोई औचित्य नहीं था। यदि यह समय वर्ष भर का रखा जाता तो इस प्रकार भगदड़ नहीं मचती, न ही भय का माहौल बनता। 'आरबीआई' ने भगदड़ मचाई और अब कह रहे हैं कि भीड़ न लगाएं। अलग-अलग बैंक अपने-अपने नियम का पालन कर रहे हैं और जनता परेशान है। अंदाजा लगाइए कि 2000 के 181 करोड़ नोट अभी चलन में हैं। यदि आम लोगों को इन्हें चार महीनों में वापस करना है, तो यह बैंकों पर और जनता में एक हलचल पैदा करेगा ही। इतना कम समय देने से यह एक नोट बदलने का छोटा कारोबार ही खड़ा कर देगा।

आधात्मिक व सांस्कृतिक केंद्र के अनुरूप होंगी व्यवस्थाएं : गिरीशपति त्रिपाठ

अयोध्या। नगर निगम के अधिकारियों और पार्षदों की मौजूदगी में महापौर गिरीशपति त्रिपाठी ने 100 दिन की महत्वाकांक्षी कार्ययोजना प्रस्तुत की और कहा कि अयोध्या आधात्मिक व सांस्कृतिक केंद्र के रूप में तैयार हो रही है, नगर निगम की कोशिश इसी के अनुरूप सुविधाओं और व्यवस्थाओं के विकास की है। जिसके लिए विभिन्न विभागों से समन्वय बनाकर एकीकृत विकास किया जायेगा। सबसे ज्यादा जोर जन शिकायतों के निस्तारण और निगम की सेवाओं की उपलब्धता में आधुनिक तकनीकि पर रहेगा। इसके लिए टोल फ्री नम्बर 18003131277 एवं 1533 पर प्राप्त शिकायतों का प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित होगा।

महापौर ने कहा कि सभी 60 वार्डो में कराये गए जीआईएस सर्वे के आधार पर कर निर्धारण से उपजी उत्पन्न समस्या एवं विसंगतियों समेत प्रकाश, स्वास्थ्य, जलकल, निर्माण सम्बन्धित समस्याओं शिविर लगवा निराकरण कराया जाएगा। सीएम की घोषणा के मुताबिक कुल 763 मठ-मंदिर कर छूट के लिए चिह्नित हैं, इनसे जुडी आपत्तियों को जल्द निस्तारित करवाया जाएगा। 6 माह से अधिक समय से लम्बित व विवादित नामान्तरण के प्रकरणों को 100 दिन तथा समयावधि पूर्ण कर चुके अविवादित नामान्तरण प्रकरणों को एक माह में निस्तारित करा दिया जाएगा। जलकल विभाग अमानीगंज में स्थापित वाटर टेस्टिंग लैब के माध्यम से पाइपलाइन और टैंकर, हैण्डपम्प, प्याऊ, वाटर कियॉस्क आदि से सभी वार्डो, मेला एवं दीपोत्सव में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करायेंगें। 1150 मीटर पाइप लाइन का विस्तार और इण्डिया मार्क 2 हैण्डपम्प के रिबोर एवं अधिष्ठापन का कार्य होना है। कूड़ा निस्तारण के लिए 02 मैटेरियल रिकवरी फैसिलिटी सेन्टर,भवनों के ध्वस्तीकरण से निकलने वाले मलबा,अपशिष्ट प्रबन्धन एवं निस्तारण के लिए सीएण्डडी वेस्ट की स्थापना तथा पार्षदों के बैठने व बैठक के लिए हॉल के निर्माण की प्रक्रिया शुरू करने का लक्ष्य है। 100 दिन की कार्ययोजना को पूरा करने के लिए नगर निगम ने पांच तिथियां तय की हैं। 30 जून तक प्रत्येक वार्ड में स्वच्छता समितियों का गठन कर डोर-टू-डोर कूड़ा संग्रहण की व्यवस्था, जलभराव से प्रभावित क्षेत्रों का चिन्हीकरण कर जल निकासी के स्त्रोतों को सुचारू करने, 27 पारम्परिक नालों की सफाई एवं पम्प की व्यवस्था, त्वरित आर्थिक विकास योजना के तहत 47 36 करोड़ की लागत से विस्तारित क्षेत्रों में 59 सम्पर्क मार्गों को पूर्ण कर लोकार्पित और पं दीनदयाल उपाध्याय योजना में 9.26 करोड़ से अयोध्या जोन के 23 मार्गों का निर्माण व 6.10 करोड़ से 32 पार्कों का जीर्णोद्धार, 3.20 करोड़ से एनीमल बर्थ कण्ट्रोल भवन पूर्ण कर बंध्याकरण शुरू करने और 50 लाख से कुशमाहा तालाब का सौन्दर्यीकरण पूरा कराने का लक्ष्य है।

15 जुलाई तक .मुख्यमंत्री नगर सृजन योजना में विस्तारित क्षेत्र में 11.39 करोड़ से 24 सड़कों के निर्माण, 20 जून तक वैसिंह गौशाला का विस्तार और गोबर से तैयार दीपक, मूर्ति, गो काष्ठ वर्मी कम्पोस्ट आदि की बिक्री शुरू कराने, 31 जुलाई तक कूड़ा संग्रहण के लिए रूट चार्ट, प्रापर्टी मैपिंग डाक्यूमेंटेशन, 07 वार्डो में अलग-अलग गीला एवं सूखा कूड़ा संग्रहण, 06 वार्डों में कूड़े का पृथक्करण एवं कम्पोस्ट तैयार करने, कूड़ा संग्रहण की ऑनलाइन मॉनीटरिंग, भवनों पर क्यूआर कोड स्थापित करने, ज्यादा कूड़ा निकालने वाले होटल, मैरिज लॉन, रेस्टोरेंट आदि से कूड़ा संग्रहण तथा जुमार्ना वसूली की व्यवस्था होनी है। साथ ही शहर के 15 और अयोध्या के 5 कूड़ा संग्रहण स्थलों को सेल्फी प्वाइंट बनाया जाना, अफीम कोठी एवं एयरपोर्ट के निकट स्थित 30000 मी टन कूड़ा निस्तारित कराने तथा 30 अगस्त तक वैवाहिक समारोह एवं अन्य आयोजनों के लिए रायबरेली रोड पर 4.70 करोड़ की लागत से प्रस्तावित कल्याण मण्डप के प्रथम तल के स्ट्रक्चर कार्य को पूर्ण कराने, 03 योगा पार्क में सूर्य नमस्कार की प्रतिमाएं लगवाने और कचेहरी के पीछे स्थित मल्टी लेवल कार पार्किंग का निर्माण पूर्ण कराने का लक्ष्य है। शहर में रामपथ समेत अन्य को लेकर मीडिया के तीखे सवाल पर नगर आयुक्त विशाल सिंह ने मोर्चा संभाला। कहा कि अयोध्या प्रसवकाल से गुजर रही है, अभी निर्माण का दौर है, कुछ कष्ट होगा ही। सभी को सहयोग कराना होगा।

मुख्य विकास अधिकारी ने क्षेत्र पंचायत कार्यालय का किया औचक निरीक्षण

जालौन। मुख्य विकास अधिकारी ने गुरुवार को अचानक क्षेत्र पंचायत कार्यालय आकर औचक निरीक्षण किया इस दौरान उन्होंने सभी पटलो का निरीक्षण किया। कार्यालय की साफ-सफाई पर संतोष व्यक्त किया तथा लेखाकार द्वारा सम्पूर्ण चार्ज न देने पर नाराजगी व्यक्त कर अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं जबकि जे ई आर ई एस व पी आर डी के अनुपस्थित मिलने पर वेतन काटने के निर्देश दिए।

सी डी ओ अभय कुमार श्रीवास्तव ने गुरुवार को क्षेत्र पंचायत कार्यालय का वार्षिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कार्यालय की साफ-सफाई व रिकार्ड का रखरखाव देखा जिस पर संतुष्ट दिखे। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कर्मचारियों की उपस्थिति देखी तो पी आर डी राघवेंद्र सिंह व जे ई आर ई एस वर्षा सिंह अनुपस्थिति मिली। अनुपस्थिति मिलने पर दोनों कर्मचारियों का वेतन रोकने के निर्देश दिए। स्थानांतरित होने के बाद भी लेखाकार हेमंत मिश्रा द्वारा पूरा चार्ज नहीं दिया गया। चार्ज न देने पर जिला विकास अधिकारी को अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। सी डी ओ ने निरीक्षण के दौरान राज्य वित्त व मनरेगा के पटल को देखा तथा लिपिक राज किशोर गोयल को रजिस्टर दुरूस्त रखने तथा अपडेट करने के निर्देश दिए हैं। आवासों की जानकारी के लिए पटल प्रभारी कुलदीप से पूछताछ की तथा कार्यालय में आने वाली शिकायतों के निस्तारण के लिए लिपिक गंगाचरण से पूछताछ की रजिस्टर देखे। स्थापना पटल पर गौरव श्रीवास्तव से कर्मचारियों की सर्विस बुक व जी पी एफ डायरी देखी तथा उन्हें अपडेट करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ए डी ओ को निर्देश दिए कि वह साप्ताहिक भ्रमण डायरी तैयार करे तथा बी डी ओ को चैक कराये। निरीक्षण के दौरान बी ओ पी आर डी की वापस इंट्री अधूरी मिलने पर नाराजगी जताई। उन्होंने ए डी ओ पंचायत देवेन्द्र कुमार को निर्देश दिए कि गांव में संचालित सामुदायिक शौचालयों का संचालन समूह द्वारा कराने व समूह को समय से मानदेय उपलब्ध कराने के सख्त निर्देश दिए। लम्बित पेंशन के फार्मों का सत्यापन कराकर आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। इस मौके पर बी डी ओ संदीप यादव, ए डी ओ पंचायत देवेन्द्र कुमार समेत कार्यालय के कर्मचारी उपस्थित रहे।

बांदा के ज्वैलर्स से पचास किलो चांदी लूटने में इंस्पेक्टर भोगनीपुर और दरोगा गिरफ्तार

कानपुर। कानपुर देहात में उत्तर प्रदेश पुलिस की छवि धूमिल करने वाली एक और घटना को अंजाम दिया गया। यहां भोगनीपुर के इंस्पेक्टर और दरोगा ने चेकिंग के बहाने बांदा के कारोबारी से लाखों रुपए कीमत की 50 किलो चांदी लूट ली।

कारोबारी द्वारा इस घटना की रिपोर्ट दर्ज कराए जाने के बाद कानपुर देहात के एस पी जीबी कृष्णमूर्ति ने मोटरसाइकिल से इंस्पेक्टर के आवास खुद पहुंचकर न केवल लूटी गई 50 किलो चांदी बरामद की बल्कि लूट के आरोप में बीते गुरुवार की रात भोगनीपुर में तैनात इंस्पेक्टर अजयपाल कठेरिया, दरोगा चिंतन कौशिक को गिरफ्तार भी कर लिया। इस दौरान सिपाही सिपाही रामशंकर यादव मौके का फायदा उठाकर भाग गया। उसकी तलाश में भी छापे मारे जा रहे हैं।

घटना पुलिस महकमे में चर्चा का विषय बनी हुई है। इस बीच इस बीच कानपुर के आईजी ने दरोगा इंस्पेक्टर और सिपाही को सस्पेंड करते हुए उनके खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू करा दी है`

प्राप्त विवरण के अनुसार बांदा के रहने वाले सर्राफ मनीष सोनी उर्फ सागर घटना के समय अपनी क्रेटा कार से बुन्देलखंड एक्सप्रेस-वे से मामा के लड़के रवि सोनी भाभी सोनाली सोनी

उनकी बेटी अशी के साथ बांदा से औरेया जा रहे थे। गाड़ी ड्राइवर जगनन्दन पाल चला रहा था।

बेहतर गुणवत्ता के साथ नेत्र रोगियों के लिए करें सभी काम: डा इलेश जैन

नेत्र सर्जनो की दो दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। चिकित्सा एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय दृष्टि विहीनता एवं दृष्टि दोष नियंत्रण के तहत राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन उप्र ने सरकारी अस्पतालों में नेत्र सर्जरी में गुणवत्ता लाने को संत रणछोड़दास जी महाराज संस्थापित सद्गुरू नेत्र चिकित्सालय जानकीकुंड में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला की।

शनिवार को कार्यशाला में प्रदेश के 18 मंडलों से आये 40 वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक ने हिस्सा लिया। दो दिवसीय कार्यशाला में सद्गुरू नेत्र चिकित्सालय निदेशक डॉ बीके जैन, डा राजेश जोशी, डा आशीष बजाज व अन्य चिकित्सको ने नेत्र सर्जरी में गुणवत्ता, क्षमता और कार्य कुशलता जैसे तमाम विषयों पर जानकारी साझा की। चिकित्सक दल ने अस्पताल परिसर में ओपीडी व आपरेशन थियेटर में तकनीकी बारीकियों को भी देखा। कहा कि भारत में नेत्र से संबंधित सारी व्यवस्थाओं से लैस इतना बड़ा चिकित्सालय नहीं देखा है। दो दिवसीय कार्यशाला के समापन पर

श्री सदगुरू सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं सद्गुरू नेत्र चिकित्सालय के प्रशासक डा ईलेश जैन ने 18 मंडलों से गुणवत्ता प्रशिक्षण लेने आए सभी नेत्र सर्जनों एवं उप्र राज्य मेडिकल परामर्शदाता अभय द्विवेदी, साइड सेवर के यूपी हेड प्रमोद त्रिपाठी से कहा कि ये चिकित्सालय आपका है। देश के सभी नेत्र रोगियों के लिए है। सब नेत्र रोगियों के लिए ही काम कर रहे है। सबका संकल्प और उद्देश्य है कि अंधत्व निवारण पर देश के नेत्र रोगियों के लिए बेहतर काम कर सकते हैं। इसी सोच से सब काम करेंगे तो नेत्र रोगियों के लिए व देश के लिए सच्ची सेवा होगी। उन्होंने कहा कि अंधत्व निवारण पर सदगुरु नेत्र चिकित्सालय से जिसे जैसी भी मदद लेनी हो हर समय मदद को तैयार है। प्रशिक्षण लेने आये रानी लक्ष्मीबाई संयुक्त अस्पताल लखनऊ के डॉ केपी सिंह ने बताया कि छोटी-छोटी चीजे जो ध्यान में नहीं आतीं, उन चीजों को यहां देखा और काफी कुछ सीखने को मिला। इसका उपयोग कर लोगो को बेहतर सुविधाएं दे सकेंगे।

पुलिस ने दो के कब्जे से 34 क्वार्टर देशी शराब बरामद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में पुलिस ने दो लोगों के कब्जे से 34 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है।

शनिवार को प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा की अगुवाई में वरिष्ठ दरोगा रामवीर सिंह की टीम ने वीरेन्द्र सोनकर पुत्र बिन्दा सोनकर निवासी माधवगंज के कब्जे से 20 क्वार्टर देशी शराब

समेत गिरफ्तार किया है। आरोपियों पर आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में वरिष्ठ दरोगा रामवीर सिंह, सिपाही रोहित कुशवाहा शामिल रहे।

इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर वीर प्रताप सिंह की अगुवाई में दरोगा हारुन रशीद खां की टीम ने रामाश्रय पुत्र रामसजीव निवासी बधवा कल्याणपुर के कब्जे से 14 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा हारुन रशीद खां, सिपाही शुभम मिश्रा शामिल रहे।

पुलिस ने दबोचे तीन वारंटी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कर्वी गुलाब त्रिपाठी की अगुवाई में पुलिस ने तीन वारंटी गिरफ्तार किये।

शनिवार को चैकी प्रभारी परिक्रमा मार्ग प्रवीण कुमार सिंह की टीम ने विद्युत अधिनियम के वारंटी श्यामलाल पुत्र छोटा कुशवाहा निवासी तरौंहा को गिरफ्तार किया है। टीम में चैकी प्रभारी परिक्रमा मार्ग प्रवीण कुमार सिंह, सिपाही राजीव सिंह शामिल रहे।

कोतवाली कर्वी के दरोगा सदानन्द सिंह की टीम ने वारंटी हरीकेश पुत्र रामनरेश निवासी इटरौर भीखमपुर को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा सदानन्द सिंह, सिपाही रंजीत यादव शामिल रहे। कोतवाली कर्वी के दरोगा रामाधार सिंह की टीम ने वारंटी रिग्गू पुत्र सौखीलाल निवासी पयासी ताला खरौंद को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा रामाधार सिंह, दीवान शमशाद खां शामिल रहे।

फार्मासिस्ट राधेश्याम को दी लोगों ने भावभीनी विदाई

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन ने सेवानिवृत्त फार्मासिस्ट राधेश्याम सिंह को सांसद आरके सिंह पटेल व सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी की मौजूदगी में विदाई दी। इस मौके पर समाजसेवी रामबाबू गुप्ता आदि मौजूद रहे।

शनिवार को सीतापुर स्थित एक होटल में डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन ने विदाई समारोह आयोजित किया। समारोह में सांसद आरके सिंह पटेल, सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, एसीएमओ डॉ इम्तियाज अहमद ने सरस्वती चित्र पर दीप जलाकर शुभारम्भ किया। सेवानिवृत्त फार्मासिस्ट जेपी सिंह, अवधेश

सिंह, मोहनलाल सिंह, सेवानिवृत्त लेखपाल महेन्द्र सिंह, केशव सिंह यादव, एटीओ अवधेश प्रताप सिंह, अशोक कुमार, दिनेश दुबे, अभय, एलटी संघ के अध्यक्ष अजय सिंह, एक्सरे संघ के अध्यक्ष कमलेश सिंह, समाजसेवी रामबाबू गुप्ता, अवधेश सिंह, राजेश सिंह, अनिल कुमार सिंह, सुरेश सिंह, डॉ उदय प्रताप सिंह, डॉ अरुण पटेल, डॉ शैलेन्द्र गौरव, डॉ मनीष, डॉ अमित सिंह आदि संगठनों ने भावभीनी विदाई दी।

अतिथियों का सम्मान जिले के अध्यक्ष कमल सिंह, मंत्री फूल सिंह, कार्यकारिणी सदस्यों ने माल्यार्पण कर किया। जिले के सभी फार्मासिस्टों की मौजूदगी में सांसद पटेल ने कहा कि व्यक्ति जन्म लेता है, पढाई शुरू करता है। नौकरी में आता है और सेवानिवृत्त होता है, ये सतत प्रक्रिया है। व्यक्ति को कार्य के प्रति सचेत रहना चाहिए। संचालन वीरेन्द्र पाण्डेय व बैजनाथ ने किया। सेवानिवृत्त राधेश्याम सिंह के आगे का जीवन सुखमय रहे, ऐसी सभी लोगों ने कामना की।

समस्या निस्तारण में झोल करने पर नपेंगे अधिकारी: डीएम, थाना मारकुण्डी में सुनी समस्यायें

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने थाना समाधान दिवस में आये फरियादियों की समस्याओं को गम्भीरता से लेने के निर्देश दिये। कहा कि फरियादियों को सुनकर समय सीमा के भीतर निस्तारण करें। फरियादियों को इधर-उधर समस्याओं को लेकर न भटकना पडे।

शनिवार को मारकुण्डी थाने में फरियादियों की समस्यायें सुनते हुए डीएम ने कहा कि शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता की जांच फरियादियों के मोबाइल से बातकर की जायेगी। निस्तारण में फजीर्वाड़ा मिला तो निस्तारण करने वाले अधिकारी/कर्मचारियों के खिलाफ कार्यवाही होगी। उन्होंने कहा कि फरियादियों की समस्याओं को सुनकर निस्तारण करें।

जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने जोर देते हुए कहा कि थाना समाधान दिवस में आये जमीनी विवाद के मामलों को सूचीबद्ध कर राजस्व और पुलिस की गठित टीम मौके पर जाकर बिना किसी पक्षपात के शिकायतों का निस्तारण करें। फरियादियों को बार-बार शिकायतों को लेकर भटकना न पड़े। निर्देश दिये कि महिलाओं सम्बंधित शिकायतों का मौके पर जाकर प्राथमिकता से निस्तारण करायें। जिलाधिकारी ने थाना मारकुंडी के अंदर नवनिर्मित विवेचना कक्ष व बैरक का निरीक्षण किया। कार्यदाई संस्थाओं से कहा कि गुणवत्तापूर्ण समय से कार्य पूरे करायें।

समाधान दिवस में सीओ मऊ/मानिकपुर राजकमल, तहसीलदार मानिकपुर आलोक प्रताप सिंह, थानाध्यक्ष अनिल कुमार, कानूनगो चंद्रभूषण पांडे, लेखपाल जितेंद्र कुमार गुप्ता मौजूद रहे।

सपा जिलाध्यक्ष ने घोषित की जम्बो कमेटी

कमेटी में छह उपाध्यक्ष व 15 सचिव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। समाजवादी पार्टी जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव ने पूर्व सांसद बाल कुमार सिंह पटेल की मौजूदगी में जम्बो जिला कमेटी गठित की है। उन्होंने कमेटी में छह उपाध्यक्ष व 15 सचिव नियुक्त किये हैं। उन्होंने कहा कि नगर पालिका चुनाव में सपा का वोट बढा है, जबकि सपा के सभी प्रत्याशी चुनाव हार गये हैं।

शनिवार को सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव ने जिला कमेटी में उपाध्यक्ष मो गुलाब खा, मदन त्रिपाठी, मेघराज, नरेन्द्र कुमार, सियाराम गुप्ता, सीताराम कश्यप को बनाया है। महासचिव सत्यनारायण पटेल, कोषाध्यक्ष

राजा सिंह यादव व सचिव गोपाल साहू, जयप्रकाश मोदनवाल, मनीष विश्वकर्मा, चन्दन सिंह कोरी, जागेश्वर यादव, संतराम पटेल, राजकिशोर विश्वकर्मा, रमेश यादव, सुरेन्द्र खंगार, राधेश्याम निषाद, कल्लूपाल, सुभाष पटेल, विजय गौतम, कमल यादव, राजबहादुर प्रजापति बनाये गये हैं।

इसके अलावा कमेटी के सदस्य जुनैद अली, सचिन रस्तोगी, रामसुफल यादव, रामसनेही खंगार, संजय कुमार, हरी यादव, संदीप प्रजापति, संतोष कोटार्य, मंगल यादव, शंकरलाल वर्मा, गन्नू गुप्ता, सुभाष तिवारी, सुशील गुप्ता, शारदा पटेल, प्रिंस केशरवानी, रमेशचन्द्र, अवधेश जायसवाल, मुन्नालाल सोनकर, प्रभाष सविता, गौरीशंकर सोनी, अफजल अली, रामनरेश अग्रहरि, रितिक केशरवानी, विनीत कोटार्य, राकेश मिश्रा, हाजी रज्जन अली, सालिकराम कुशवाहा शामिल किये गये हैं। इस मौके पर पूर्व विधायक वीर सिंह, निर्भय सिंह पटेल, नरेन्द्र यादव, अमर पटेल आदि मौजूद रहे।

15 जून तक सिलौटा के गांवों में करें पेयजल आपूर्तिः डीएम

कैम्प कार्यालय में डीएम ने की

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने जल जीवन मिशन के तहत जारी कार्यों की समीक्षा करते हुए सिलौटा मुस्तकिल के सभी गांवों में 15 जून तक वाटर सप्लाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने कार्यदाई संस्था एनएलटी को निर्देश दिए कि चांदी बांगर के 40 गांवों के कार्य पूरे कराएं।

शनिवार को जिलाधिकारी ने कैम्प कार्यालय में बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि 120 गांव में 30 जून तक पानी पहुंच जाना चाहिए। एलएनटी एवं जीपीआर के प्रोजेक्ट मैनेजर को निर्देश दिए कि रेलवे रोड के बचे कार्य को

15 से 20 जून तक पूरा कराएं। जल निगम को निर्देश दिये कि जिन गांव में सप्लाई हो रही है, हर घर जल सत्यापित कराकर कार्य कराएं। टीपीआई जल निगम अधिशासी अभियंता व कार्यदाई संस्था को निर्देश दिये कि दोनों सिफ्टो में कार्य करें।

उन्होंने कहा कि स्कूलों, स्वयं सहायता समूह, आंगनबाड़ी केंद्रों में भी पाइप लाइन का कनेक्शन दें। लगभग 200 स्कूलों में कनेक्शन करा दिये गये हैं। प्रोजेक्ट मैनेजर को निर्देश दिए कि पेयजल आपूर्ति वाले गांवों को रोस्टर बनाकर सुबह-शाम नियमित रूप से जल आपूर्ति की जाये। भारत सरकार व उप्र सरकार की महत्वपूर्ण योजना है, इसे जल्द पूरा कराना सबका दायित्व है। बैठक में एडीएम नमामि गंगे सुनंदू सुधाकरन, जितेंद्र तिवारी, जीवीपीआर प्रोजेक्ट मैनेजर समेत संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

नेपाल में प्रचंड और बाबूराम भट्टराई की पार्टियों में एकता पहल

काठमांडू। नेपाल में पुष्प कमल दाहाल प्रचंड के नेतृत्व वाले सीपीएन माओवादी सेंटर और डॉ. बाबूराम भट्टाराई के नेतृत्व वाली नेपाल समाजवादी पार्टी (एनएसपी) ने एकता की पहल की है। दोनों पार्टियों के नेताओं के बीच अनौपचारिक बातचीत का सिलसिला तेज हो गया है। एनएसपी की केंद्रीय समिति की हुई बैठक में माओवादी सेंटर के साथ एकता प्रक्रिया को बढ़ाने का फैसला किया गया।

एनएसपी नेता विश्वदीप पांडे ने बताया कि माओवादी सेंटर के एकता के प्रस्ताव के बाद प्रक्रिया तेज हो जाएगी। पांडेय के मुताबिक समाजवादी केंद्र के निर्माण में वे सक्रिय रहेंगे। माओवादी अध्यक्ष प्रचंड समाजवादी केंद्र बनाने की बात करते रहे हैं। सनद रहे प्रचंड और डॉ. बाबूराम भट्टराई लंबे समय से माओवादियों के साथ थे । 2015 में नेपाल में संविधान लागू होने के बाद भट्टाराई, प्रचंड के नेतृत्व वाले माओवादियों से अलग हो गए थे। हालांकि, 2022 दिसंबर के चुनाव में माओवादी और एनएसपी के नेताओं ने एक ही मोर्चा बनाकर चुनाव लड़ा था ।

अमेरिकी सहरक्षा सचिव का दावा, मोदी की यात्रा से रक्षा उत्पादन व विकास की नई राह खुलेगी

वाशिंगटन। अमेरिका के सह रक्षा सचिव एली रैटनर का दावा है कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इसी माह होने वाली अमेरिका यात्रा दोनों देशों के बीच मिलकर रक्षा उत्पादन व विकास की नई राह खोलेगी। सेंटर फॉर न्यू अमेरिकन सिक्योरिटी में एक चर्चा के दौरान उन्होंने उम्मीद जताई कि मोदी की यात्रा के दौरान रक्षा औद्योगिक सहयोग और भारत के स्वदेशी सैन्य अड्डे को बढ़ावा देने के लिए बड़ी घोषणाएं हो सकती है।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 21 जून से चार दिन की यात्रा पर अमेरिका पहुंच रहे हैं। इस यात्रा पर चर्चा करते हुए एली रैटनर ने कहा कि जब प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा दोनों देशों के बीच संबंधों के लिए नए मानदंड स्थापित करने वाली एक ऐतिहासिक यात्रा होगी। हाल ही में अमेरिकी रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन ने कई द्विपक्षीय मुद्दों को आगे बढ़ाने और विशेष समझौतों व प्रस्तावों को अंतिम रूप देने के लिए भारत का दौरा किया था। इन समझौतों को लेकर जमीनी स्तर पर काम करने की तैयारी चल रही है। पीएम मोदी जब अमेरिका आएंगे तो इन पर अंतिम मुहर लगेगी। रैटनर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की संयुक्त राज्य अमेरिका की राजकीय यात्रा भारत-अमेरिका रक्षा संबंधों में नए मानदंड स्थापित करेगी और दोनों को सह-उत्पादन और सह-विकास के मुद्दों पर अभूतपूर्व तरीकों से करीब लाएगी। दावा किया कि इस बार प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा से रक्षा के क्षेत्र में मजबूत कदम उठाए जाएंगे। साथ ही कई और घोषणाएं होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दशकों में भारत-अमेरिका संबंध पहले से अच्छे और विश्वसनीय हो गए हैं।

नेपाल के पूर्व स्पीकर सुबास नेमवांग की हत्या के प्रयास का मुद्दा संसद में गूंजा

काठमांडू। नेपाल के पूर्व स्पीकर सुबास नेमवांग की हत्या के प्रयास की गूंज संसद में सुनाई दी। सीपीएन यूएमएल सांसद योगेश भट्टराई ने संसद में बोलते हुए दावा किया कि नेमवांग की घात लगाकर हत्या की कोशिश की गई थी। भट्टराई ने कहा कि नेमवांग पर उस समय घात लगाकर हमला किया गया, जब वह कोशी प्रांत में एक कार्यक्रम में जा रहे थे। हाल ही में कोशी क्षेत्र के नामकरण के बाद विरोध प्रदर्शन हुए हैं।

कोशी में विभिन्न जातीय समूह विरोध कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं, जिन्होंने पार्टी के प्रमुख नेताओं के कार्यक्रमों में भी व्यवधान डाला था। मई में कोशी प्रांत में यूएमएल अध्यक्ष केपी शर्मा ओली के कार्यक्रम का भी विरोध हुआ था। ओली ने पूर्व राजा ज्ञानेंद्र शाह और उनके समर्थकों पर विरोध करने और हमले की कोशिश करने का आरोप लगाया था। यूएमएल अध्यक्ष ओली, उपाध्यक्ष नेमवांग और अन्य शक्तिशाली नेताओं ने नेपाल के कोशी क्षेत्र में चुनाव जीत लिया है। उसके बाद उनके खिलाफ गतिविधियां तेज हुई हैं।

'न्याय मंत्रालय को हथियार बना रहे बाइडन', गुप्त दस्तावेज मामले में ट्रंप के खिलाफ मुकदमे पर भड़का विपक्ष

खेरसॉन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप एक के बाद एक नए आरोपों में घिरते जा रहे हैं। पहले एक स्तंभकार की ओर से दुष्कर्म के मामले में घिरने के बाद ट्रंप पर अब अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा को दांव पर लगाने के आरोप लगे हैं। इनमें एक संगीन आरोप यह भी है कि ट्रंप ने राष्ट्रपति पद से हटने और व्हाइट हाउस छोड़ने के बाद भी परमाणु हथियारों से जुड़े गुप्त दस्तावेज अपने पास ही रखे थे। इसे लेकर ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी ने भी उनका समर्थन किया है और कहा है कि बाइडन न्याय मंत्रालय को अपने प्रमुख प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रहे हैं। गौरतलब है कि 76 वर्षीय डोनाल्ड ट्रंप इस वक्त 2024 के राष्ट्रपति चुनाव के लिए रिपब्लिकन पार्टी की ओर से सबसे दमदार उम्मीदवार माने जा रहे हैं। उन्हें डेमोक्रेट पार्टी की ओर से राष्ट्रपति जो बाइडन के लिए कड़ी चुनौती भी करार दिया जा रहा है। हालांकि, एक के बाद एक आरोपों में फंसना उनकी उम्मीदवारी के लिए बड़ा झटका है। अमेरिका के न्याय मंत्रालय ने गोपनीय सूचनाओं को अपने पास रखने के मामले में ट्रंप के खिलाफ लगे संघीय आरोपों को सार्वजनिक कर दिया है। साथ ही उन पर मुकदमा चलाने की मंजूरी भी दी है। ट्रंप के करीबी नेता और रिपब्लिकन पार्टी में जबरदस्त प्रभाव रखने वाले नेता और संसद के निचले सदन- हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स के स्पीकर केविन

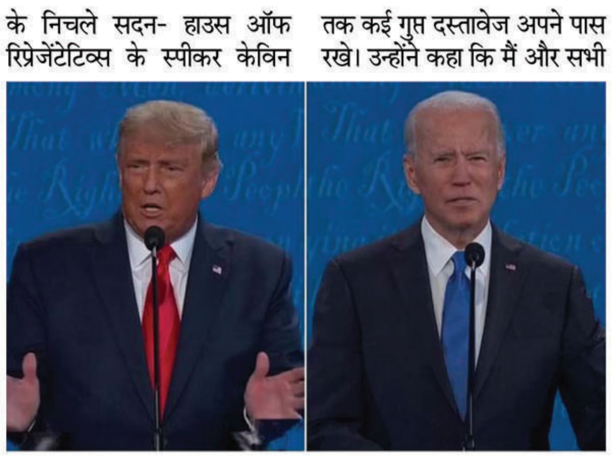

मैक्कार्थी ने ट्वीट कर कहा कि यह बेहद बेशर्मी भरी बात है कि राष्ट्रपति अपने खिलाफ खड़े एक उम्मीदवार को फंसाने की कोशिश कर रहे हैं। बाइडन ने खुद दशकों तक कई गुप्त दस्तावेज अपने पास रखे। उन्होंने कहा कि मैं और सभी अमेरिकी कानून के राज पर भरोसा करते हैं और इस अन्याय के खिलाफ ट्रंप के साथ खड़े हैं। रिपब्लिकन सांसद इस ताकत को हथियार बनाए जाने की जिम्मेदारी तय करेंगे। दूसरी तरफ संसद के निचले सदन में ही रिपब्लिन पार्टी के व्हिप स्टीव स्कैलाइज ने कहा कि यह एक दिखावे वाला अभियोग है। जो हो रहा है, उस पर स्पष्ट कहा जाए तो बाइडन अपने न्याय मंत्रालय को अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ इस्तेमाल कर रहे हैं। ट्रंप के समर्थन में कुछ ऐसी ही आवाजें सांसद जेडी वांस, एलिसे स्टेफानिक की ओर से भी उठाई गईं। इन दोनों ने कहा कि बाइडन 2024 में अपने सबसे कड़े प्रतिद्वंद्वी पर हमले कर रहे हैं। वह 2024 के चुनाव चोरी के जरिए जीतना चाहते हैं। हालांकि, रिपब्लिकन पार्टी के कुछ और बड़े नेता जैसे सीनेट में मिच मैक्कॉनेल, सीनेट व्हिप जॉन थ्यून और कई और सांसदों ने ट्रंप को लेकर चुप्पी साध रखी है।

विदेशी मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, डोनाल्ड ट्रंप पर गोपनीय जानकारी अपने पास रखने और न्याय में बाधा डालने से संबंधित 37 घोर अपराध के मामलों में आरोप लगाया गया है। आरोपों में से एक यह भी है कि उन्होंने पेंटागन पर 'हमले की योजना' के बारे में बताया और एक सैन्य अभियान से संबंधित एक गोपनीय नक्शे को साझा किया। संघीय अभियोजकों ने उन पर अमेरिकी परमाणु और रक्षा कार्यक्रमों से जुड़े टॉप सीक्रेट फाइलें अवैध रूप से रखने का आरोप लगाया।

कंगाली के कगार पर खड़े पाकिस्तान ने बढ़ाया रक्षा बजट, सबसे ज्यादा खर्च ब्याज के भुगतान पर

इस्लामाबाद। कंगाली के कगार पर खड़े पाकिस्तान ने अपने रक्षा खर्च में पिछले साल के मुकाबले 15.4 प्रतिशत की वृद्धि की है। आर्थिक संकट से जूझ रही पाक सरकार ने तीन साल में पहली बार रक्षा बजट बढ़ाया है। पाकिस्तान के वित्त मंत्री इशाक डार ने नेशनल असेंबली के पटल पर वित्त वर्ष 2023-24 के लिए बजट पेश किया। डार ने बजट भाषण में कहा कि आगामी वर्ष के लिए सरकार कोई नया कर नहीं लगा रही है। डार ने कहा कि अगले साल के लिए सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 3.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है।?यह भारत के अनुमान 6.5त्न से करीब आधा है। डार ने कहा, यह चुनावी बजट नहीं है और

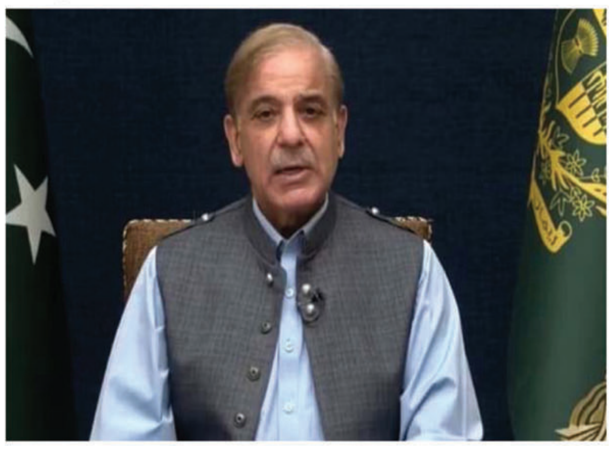

वास्तविक अर्थव्यवस्था के तत्वों पर केंद्रित है। वित्त वर्ष 2023-24 के बजट का कुल खर्च 14.46 लाख करोड़ रुपये है। सरकार ने कुल मौजूदा खर्च 13,320 अरब रुपये रखा है, जो पिछले साल के बजट आंकड़े से 53 फीसदी अधिक है।

बजट में सबसे ज्यादा 7,303 अरब रुपये का प्रावधान कर्ज भुगतान के लिए

डार ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए रक्षा व्यय का बजट 1,804 अरब रुपये रखा है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 15.4 प्रतिशत अधिक है। पाकिस्तान सबसे ज्यादा खर्च ब्याज के भुगतान में कर रहा है। वित्त वर्ष के लिए बजट में ब्याज भुगतान पिछले वर्ष से 85 फीसदी बढ़कर 7,303 अरब रुपये हो गया है, जो कुल वर्तमान व्यय का यह 55त्न है। मुद्रा स्फीति का लक्ष्य 21त्न रखा गया है।

एवरेस्ट के प्रवेश द्वार नाम्चे बाजार में 12 डिग्री तापमान, यह पिछले 12 वर्ष में सर्वाधिक

काठमान्डू। दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट का प्रवेश द्वार कहे जानेवाले नाम्चे बाजार में पिछले कुछ वर्षों की तुलना में इस साल सबसे गर्म मौसम है। नाम्चे बाजार समुद्र तल से 3400 मीटर की ऊंचाई पर है। यहां पिछले एक सप्ताह से लगातार कड़ी धूप निकल रही है और दैनिक तापमान 12 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। यह पिछले 12 वर्ष में सर्वाधिक है। स्थानीय लोगों के अनुसार 12 साल पहले भी यहां ऐसे ही तापमान चढ़ा था। नाम्चे बाजार में इन दिनों सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक सूरज निकल रहा है, जिससे तापमान दहाई की संख्या को पार कर जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में इस मौसम में नाम्चे बाजार का औसत तापमान 4-5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। नेपाल के जल तथा मौसम पूर्वानुमान विभाग के अनुसार, इस इलाके में अधिक बारिश की तत्काल कोई संभावना नहीं है। छिटपुट बारिश हो सकती है, लेकिन इससे तापमान में गिरावट के आसार नहीं हैं।दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट का प्रवेश द्वार कहे जानेवाले नाम्चे बाजार में पिछले कुछ वर्षों की तुलना में इस साल सबसे गर्म मौसम है। नाम्चे बाजार समुद्र तल से 3400 मीटर की ऊंचाई पर है। यहां पिछले एक सप्ताह से लगातार कड़ी धूप निकल रही है और दैनिक तापमान 12 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। यह पिछले 12 वर्ष में सर्वाधिक है। स्थानीय लोगों के अनुसार 12 साल पहले भी यहां ऐसे ही तापमान चढ़ा था।

बोरिस जॉनसन ने संसद की सदस्यता से दिया इस्तीफा, पार्टीगेट कांड पर जांच रिपोर्ट आने के बाद फैसला

लंदन। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने पार्टीगेट कांड पर संसदीय समिति की जांच रिपोर्ट आने के बाद संसद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। उनके इस फैसले ने सभी को चौंका दिया है। संसदीय समिति ने अपनी जांच में प्रधानमंत्री पद रहने के दौरान लॉकडाउन नियमों का उल्लंघन कर पार्टी करने पर संसद को गुमराह करने के लिए उन पर प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की है।

संसदीय समिति 58 वर्षीय जॉनसन पर लगे आरोपों की जांच कर रही थी कि क्या उन्होंने कोविड महामारी के दौरान डाउनिंग स्ट्रीट में लॉकडाउन नियमों का उल्लंघन कर पार्टी करने के बारे में हाउस ऑफ कॉमन्स (ब्रिटिश संसद) को गुमराह किया था। विशेषाधिकार समिति से मामले पर गोपनीय पत्र मिलने के बाद जॉनसन ने शुक्रवार को अपने इस्तीफे की घोषणा की।

जॉनसन ने संसदीय समिति पर उन्हें संसद से बेदखल करने का प्रयास करने का आरोप लगाया है। एक बयान में उन्होंने कहा कि समिति ने अभी तक एक भी सबूत पेश नहीं किया है कि मैंने जानबूझकर या लापरवाही से संसद को गुमराह किया। इससे पहले पूर्व पीएम जॉनसन ने जांच रिपोर्ट मिलने की जानकारी दी थी और दावा किया था कि यह त्रुटियों और पूर्वाग्रह से प्रेरित है। आपको बता दें कि इसी साल मार्च में विशेषाधिकार समिति को दिए गए बयान में जॉनसन ने संसद को गुमराह करने की बात स्वीकार की। हालांकि उन्होंने जानबूझकर ऐसा करने से इनकार किया था। उन्होंने कहा कि कोविड लॉकडाउन के दौरान डाउनिंग स्ट्रीट में हुई पार्टियों में लॉकडाउन नियमों के उल्लंघन की बात सही नहीं है। उन्होंने कहा कि वे जरूरी कार्यक्रम थे, इसलिए इसकी अनुमति दी गई थी। उन्होंने कहा कि पार्टी के दौरान सभी दिशानिर्देशों का पालन किया गया था। सांसद पद छोड़ने की घोषणा करते हुए जॉनसन ने एक लंबा बयान जारी किया, जिसमें उन्होंने कहा है कि मैंने झूठ नहीं बोला, और मुझे विश्वास है कि समिति इसे जानती है। उन्होंने कहा कि वे अच्छी तरह से जानते हैं कि जब मैंने कॉमन्स में बात की थी तो मैं वही कह रहा था, जो मैं ईमानदारी से सच मानता था। उन्होंने कहा कि वर्तमान प्रधानमंत्री और डाउनिंग स्ट्रीट में रहने वाले ऋषि सनक का भी मानना था कि वे कानूनी रूप से एक साथ काम कर रहे थे। जॉनसन ने 'कंगारू कोर्ट' की तर्ज पर काम करने के लिए समिति की निंदा की और दावा किया कि समिता का शुरू ही से उद्देश्य तथ्यों की परवाह किए बिना उन्हें दोषी ठहराना है।

पुतिन ने कर दिया ऐलान, रूस जुलाई में बेलारूस में तैनात करेगा सामरिक परमाणु हथियार

मास्को।रूस 7-8 जुलाई को विशेष भंडारण सुविधाओं के तैयार होने के बाद बेलारूस में सामरिक परमाणु हथियारों की तैनाती शुरू कर देगा। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि सोवियत संघ के पतन के बाद से रूस के बाहर मॉस्को का पहला कदम है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से यूरोप में सबसे बड़े भूमि युद्ध में 15 महीने से अधिक, पुतिन का कहना है कि रूस को अपने घुटनों पर लाने के उद्देश्य से एक विस्तारित छद्म युद्ध के हिस्से के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके पश्चिमी सहयोगी यूक्रेन को हथियार मुहैया करा रहे हैं। यूक्रेन के समर्थन पर अमेरिका के नेतृत्व वाले नाटो सैन्य गठबंधन के लिए एक स्पष्ट चेतावनी के रूप में मार्च में पुतिन ने घोषणा की कि वह बेलारूस में सामरिक परमाणु हथियारों को तैनात करने वाले हैं। प्रमुख नाटो देशों का कहना है कि वे यूक्रेन का समर्थन करेंगे और इसे तब तक अपना बचाव करने में मदद करेंगे जब तक कि कीव रूस द्वारा एक साम्राज्यवादी शैली की भूमि हड़पने के रूप में लेता है जो यूक्रेनी राज्य के अस्तित्व को खतरे में डालता है।

शी ने किया आंतरिक मंगोलिया सैन्य कमान का दौरा, सेना को 'द ग्रेट वॉल ऑफ स्टील' बनाने का किया आह्वान

वाशिंगटन। राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने एक बार फिर चीन की सेना को 'ग्रेट वॉल ऑफ स्टील' में तब्दील करने का आह्वान किया है। राज्य नियंत्रित मीडिया ने

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

में आए शी ने अपने पूर्ववर्तियों के विपरीत तिब्बत सहित विभिन्न सीमावर्ती क्षेत्रों में नियमित रूप से

सैन्य ठिकानों का दौरा किया है। 2021 में उन्होंने तिब्बत की अपनी पहली यात्रा की। वह अरुणाचल प्रदेश के करीब रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण सीमावर्ती शहर न्यिंगची पहुंचे थे।

शी ने पीएलए की आंतरिक मंगोलिया सैन्य कमान का दौरा किया और सीमा सैनिकों के बीच अखंडता और उच्च स्तर की एकता सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) और सरकारी विभागों, सेना, कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ-साथ सीमा रक्षा में आम लोगों के बीच सहयोग को चीन की अनूठी ताकत बताया। शी ने देश की सीमाओं की रक्षा के लिए नई जमीन बनाने के लिए सभी पक्षों से संयुक्त प्रयासों का आह्वान किया। उन्होंने सैनिकों के प्रशिक्षण को तेज करने और युद्ध की तैयारियों को बढ़ाने और सूचना प्रौद्योगिकी-सक्षम सीमा रक्षा और नियंत्रण से संबंधित क्षमता निर्माण में तेजी लाने के लिए अतिरिक्त प्रयासों का आह्वान किया। उन्होंने सीमा रक्षा कर्तव्यों और सैन्य अनुशासन को मजबूत करने, सैनिकों की अच्छी व्यवस्था बनाए रखने और अधिक सीमा रक्षा पेशेवरों को बढ़ावा देने के प्रयासों का भी आह्वान किया।

शी ने देश की उत्तरी सीमा पर सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने में क्षेत्र के सीमा सैनिकों की भूमिका की सराहना की। सीमा रक्षा कार्य में चीन की प्रगति की प्रशंसा करते हुए शी ने कहा कि सैनिकों के सैन्य प्रशिक्षण और युद्ध तैयारियों को बढ़ाया गया है और सेना ने सीमा सुरक्षा व सीमा से लगे क्षेत्रों में स्थिरता की मजबूती से रक्षा की है। उन्होंने कहा कि सैनिकों ने प्रभावी तरीके से चीन की संप्रभुता, सुरक्षा और विकास हितों की रक्षा की है।

बांध टूटने के बाद 'बेहद गंभीर' मानवीय स्थिति का सामना कर रहा यूक्रेन : संरा अधिकारी

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र के एक शीर्ष अधिकारी ने आगाह किया कि कखोवका बांध के टूटने के बाद यूक्रेन में मानवीय स्थिति पहले की तुलना में ''बेहद गंभीर'' हो गई है। अवर महासचिव मार्टिन ग्रिफिथ्स ने कहा कि करीब 7,00,000 लोगों को पीने के पानी की जरूरत है। उन्होंने चेतावनी दी कि विश्व के बेहद महत्वपूर्ण अनाज उत्पादक देश यूक्रेन में बाढ़ से अनाज निर्यात में कमी आएगी, दुनियाभर में खाद्यान्न की कीमतें बढ़ेंगी और लाखों जरूरतमंदों को भोजन नहीं मिलेगा। ग्रिफिथ्स ने 'एसोसिएटेड प्रेस' (एपी) के साथ साक्षात्कार में कहा, ''यह एक गंभीर समस्या है। लेकिन सच्चाई यह भी है कि यह इस घटनाक्रम के दुष्परिणामों की शुरुआत भर है।'' पिछले साल फरवरी में यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद से इस क्षेत्र में बुनियादी ढांचे को काफी नुकसान पहुंचा है। मंगलवार को कखोवका पनबिजली बांध के टूटने और उसका पानी नीपर नदी में बहने के कारण पिछले एक साल से लगातार मिसाइल और ड्रोन हमलों का सामना कर रहे इस देश की मुसीबतें और बढ़ गईं। रूस ने दक्षिणी यूक्रेन में ताजा पानी की आपूर्ति और सिंचाई के लिए बेहद अहम माने जाने वाले इस बांध पर पिछले साल सितंबर में कब्जा कर लिया था। अधिकारियों का कहना है कि कखोवका बांध टूटने और उसका पानी नीपर नदी में बहने से तट पर स्थित दर्जनों शहर,

कस्बे और गांव जलमग्न हो गए हैं तथा वहां से 6,000 से अधिक लोगों को निकालकर सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया गया है। यूक्रेन और मॉस्को के अधिकारियों के मुताबिक, बाढ़ में करीब 20 लोगों की मौत हुई है। हालांकि, स्वतंत्र रूप से इसकी पुष्टि नहीं हो पाई है। ग्रिफिथ्स ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र ने यूक्रेन के नियंत्रण वाले बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में 30,000 से अधिक लोगों को मानवीय सहायता पहुंचाई है। उन्होंने हालांकि कहा कि रूस ने संयुक्त राष्ट्र को अपने नियंत्रण वाले क्षेत्रों में बाढ़ पीड़ितों की मदद की अनुमति नहीं दी है।